भारत में पोर्च्यूगीज़

(इतिहास)

लेखक

पं० रामनाथ पाँडे

ज़िला मानभूम,

पो० मुरादी

गांव रामचन्द्रपुर ।

प्रकाशक

हरिदास एण्ड कम्पनी

२०१, हरिसन रोड,

कलकत्ता ।

कलकत्ता २०१ हरिसन रोड के

"नरसिंह प्रेस में"

बाबू रामप्रताप भार्गव द्वारा

मुद्रित ।

प्रथम बार १००० मूल्य ॥)

हमारा वक्तव्य ।

कालके भीषण भैरवी चक्र और परिवर्तन शील संसारके विचित्र हेरफेरोंपर जब ध्यान जाता है तो सहजहीमें मालूम हो जाता है कि अध्यवसाय और बुद्धिके बलसे वेही बातें जो कि बहुत दिन पहिले अनहोनी समझी जाती थीं, बिना किसी रुकावटके, बातकी बातमें, ऐसी सुन्दरतासे पूरी हो जाती हैं कि फिर उनपर लोगोंको आश्चर्य्यकी दृष्टिसे देखना पड़ता है। इसी प्रकार से राज्यका उलट फेर, व्यापारका घटना बढ़ना, किसी नवीन देशका आविष्कार करना, तथा व्यापार में एक अपरिचित और बिल्कुल नवीन जातिका अथाह रत्न-भाण्डार लेजाना आदि भी ऐसी ही अनहोनी बातें हैं जिन पर सर्व साधारणको सहज ही विश्वास नहीं होता और वे पुरुष तो, कभी भी, इनपर विश्वास करते ही नहीं जिन पर आलस्य, निरुद्यम और बुद्धिहीनता की भयानक छाया पड़ी हुई है। परन्तु अब वह समय नहीं है। जब तक देश में भरपूर धन धान्य रहता है, तब तक तो कभी किसी को किसी बातकी पर्वाह नहीं रहती, परन्तु जब उदर-ज्वाला चारों ओर से सताने लगती है तब सभी बातों की

पर्वाह करनी पड़ती है और सभी विषय जानने और सीखने पड़ते हैं।

इतिहास पर दृष्टि डालना, अपने देशकी प्राचीन अवस्था पर विचार करना और साथही अपने हीनतर होनेके कारणों की खोज निकालनेका उद्योग भी भविष्य-उन्नतिकी सूचना देता है। जो जाति अपने देशके इतिहाससे परिचित नहीं है, जिस जातिने अपने देशके उलटफेरों पर ध्यान नहीं दिया है, जिसने अपने पूर्व पुरुषोंके कार्मोंको आलोचना की दृष्टिसे नहीं देखा है, उस जातिका गौरव शीघ्र नष्ट हो जाता है। इसलिये प्रत्येक मनुष्यका काम है कि वह अपने देशके इतिहासको भली भाँति ध्यान से पढ़े और यही एक प्रधान कारण है कि अँगरेज़ भारत-सरकार ने शिक्षा सम्बन्धी पुस्तकोंमें इतिहास को भी एक ऊँचा स्थान दिया है। परन्तु वे इतिहास राजत्व से सम्बन्ध रखनेवाले हैं, उन इतिहासोंसे राज्यके उलट फेरोंका पता लगता है और शिक्षा मिलती है, परन्तु जिन प्रधान कारणोंसे देशकी उन्नति और अवनति होती है उनका पता नहीं लगता।

देशका जीवन धन है, धन-प्राप्तिका सबसे उत्तम उपाय वाणिज्य है। वाणिज्यसे जितना धन मिलता है, उतना धन और किसी तरह नहीं मिलता। इसीलिये वाणिज्यसे सम्बन्ध रखनेवाले इतिहासको जानना भी मनुष्यके लिये उतना ही आवश्यक है जितना कि देशवासी राजाओंके

जीवन-सम्बन्धी इतिहासको, अतः यही एक प्रधान कारण है कि भारतवासियोंको व्यापार में सबसे पहिले सम्बन्ध करनेवाले, एक दूर देशके राज्यका हाल सुनानेके लिये "भारतमें पोर्चुगीज़" नामक ग्रँथ लेकर, आज हम उपस्थित हुए हैं। आशा है साहित्य-प्रेमी पाठकगण इससे कुछ शिक्षा लाभ करेंगे।

वाणिज्य-नीतिपर ध्यान देते हुए इस समय ज़रा जर्मनी की ओर दृष्टि डालिये—लोहे, चीन, टीन आदिकी चीज़ों से उसने किस तरह भूमण्डलको छा दिया है। मैंचेस्टर और बरमिङ्हमके कारख़ानोंकी ओर एक नज़र फेरिये; देखिये तो किस तरह सब देशोंमें उनका सूती माल पहुँचकर उन देशोंको समृद्धिशाली कर रहा है। क्यों सब देशोंमें उनका माल पहुँचता है? क्योंकि सब देशोंके वाणिज्य-इतिहास और वाणिज्य-नीतिसे वे सुपरिचित हैं; भारतवर्ष कृषि-प्रधान देश है, यहाँ का भी बहुत सा माल उन देशोंमें जाता है; परन्तु भारतको, भारतवासियोंके वाणिज्य-इतिहासके ज्ञान में कमी रहनेके कारण, भरपूर लाभ नहीं होता।

इस "भारतमें पोर्चुगीज़" नामक ग्रन्थ में, यहाँ से सात समुद्र पार यूरोपके पुर्त्तगाल नामक राज्यसे भारतका वाणिज्य सम्बन्ध दिखाया गया है। मामूली वाणिज्य के सहारे, पुर्त्तगालवासियों ने किस तरह भारत से अथाह धन रत्न ले जाकर अपने देशको भरा है, किस तरह भारतवासियों

के धन से अपने देशकी सेवा की है और कैसे कैसे भयानक अत्याचारों से अपना राज-कोष भरा है इत्यादि बातें वर्णन करनेका यथा साध्य उद्योग किया है।

दूसरी ध्यान देने योग्य बात उनका वाणिज्य प्रसार है, किस तरह और कितना शीघ्र उन लोगोंने भारत में अपना वाणिज्य अधिकार फैला लिया। किस तरह तलवार और अत्याचार के बलसे उन लोगोंने भारतका रत्न अपने देशमें भरा। वे अत्याचार अवर्णनीय हैं, इस छोटेसे ग्रन्थमें उनका क्या वर्णन हो सकता है? उनकी तलवारों, तोपों और बन्दूकोंने समुद्र-तटके भारतवासियोंको खाकमें मिला दिया, उनका धन गया, प्राण गया और धर्म भी गया। उस समय उन भारतवासियोंको किसीका भरोसा नहीं था। वे केवल ईश्वर के भरोसे उन कठोरतम अत्याचारोंको सहकर अपना सर्वनाश करते जाते थे; क्योंकि पुर्त्तगालवासियोंके अत्याचारके भय से भारतवासियों को उस समय कोई सहायता नहीं दिया चाहता था। बिचारे भारतवासी भयानक अत्याचारोंमें पड़कर अपना जीवन खो रहे थे। विचारनेसे मालूम होता है, कि पुर्त्तगालकी ओरके आये हुए गवर्नर आलबूकर्क केवल वाणिज्य-विस्तारसे ही प्रसन्न न हुए थे बल्कि उन्होंने चाहा था कि तलवारके ज़ोरसे भारतमें वे अपना राजत्व स्थापित कर दें और उन्होंने ऐसा उद्योग भी किया था। परन्तु उसी अत्याचारके सहारे भारतवर्षका सर्वनाश हुआ जाता

था। हम नहीं समझते, कि वे पुर्त्तगाल राज्यको भारतमें प्रतिष्ठा करनेवाले कहला कर कैसे चिरस्मरणीय हुए।

दुःखियोंका आर्त्तनाद ईश्वरके कानोंतक पहुंचा और दुःखित भारतवासियोंकी रक्षाके लिये ईश्वरने एक बड़ी ही सहृदय और शान्ति-प्रिय अँगरेज़ जातिको भारतवर्षमें भेज दिया। यदि उस समय अँगरेज़ भारतमें न आते, यदि अँगरेज़ोंका व्यापार-बल धीरे धीरे बढ़ता न जाता तो इसमें कोई सन्देह नहीं, कि फिरङ्गियोंके अत्याचारके कारण भारत-वासियोंका कहीं ठिकाना न रहता। उस समय अँगरेज़ोंका आना, मानों भारतवासियोंके लिये सूखे खेतमें पानीका बर-सना हो गया। अँगरेज़ोंके कारण से ही भारतवासियोंके प्राण बचे। फिरङ्गियोंके लूटे हुए धनसे जो कुछ बचा था, वह उनको भोजन भरको रह गया और उनको शान्ति मिलने लगी। अभागे भारतवासियोंको ठोकरें खानी ही नसीब थीं। मुसल्मानोंकी ठोकरें लगीं, पुर्त्तगालवासियोंने उनका स-र्वनाश किया और उन्हें बात बातमें अपमानित और लाञ्छित होना पड़ा। यदि उस समय भी अँगरेज़ोंके आनेमें कुछ और विलम्ब होता, तो न जाने भारतवासियोंकी क्या दशा होती। सच तो यह है, कि अँगरेज़ोंकी उस समय भारत पर सुदृष्टि भारतवासियों के लिये ही हुई और ये अपने दलबल समेत यहाँ ऐसे आये कि ईश्वर की कृपासे इनको समस्त भारतका शासन-भार ही मिल गया

और भारतवासी सब तरहसे सुखी हुए, नहीं तो फिरङ्गियों और मुसल्मानोंके ज़ोर-शोरमें भारतको सुखकी नींद सोना कहां बदा था। इसमें कोई सन्देह नहीं, कि अँगरेज़ोंने भारतवासियोंके साथ बहुतसे उपकार किये। भारतवासियोंका धन बचा, प्राण बचे और उनको शान्ति मिली। उनके लिये शिक्षाका प्रबन्ध हुआ। अबाध वाणिज्य करनेकी आज्ञा मिली और भारतका माल मूल्य देकर बाहर भेजा जाने लगा। न्यायसे वाणिज्य चला। लूटपाट बन्द हुई और भारतमें भी शान्ति स्थापित हुई। ये ही सब ऐसे कारण थे, कि इन सुखोंको देखकर भारतवासियोंने प्रसन्नतासे राज-दण्ड अँगरेज़ोंके हाथोंमें अर्पण कर दिया। यदि अँगरेज़ भी कहीं वही पद अनुसरण करते तो सम्भव था कि ऐसा अटल राज्य न जमने पाता। उस समयसे ही मानों भारत पर ईश्वरकी सुदृष्टि हुई और भारतवासियोंको आराम लेनेका अवसर मिलने लगा; क्योंकि पहिले की लूटपाट और हलचल में भारतवासी सब तरह से हीन हुए जाते थे। अब चारों ओर अमन चैन है। पहिले जितना ही अत्याचार था अब उतनी ही शान्ति है, पहिले जिस प्रकारसे लोगोंको सुखकी नींद नहीं मिलती थी, अब ब्रटिश-शासन में उतना ही आराम और सुख है। भारतमें ब्रटिश-शासन भारतवासियोंको सुखी कर रहा है और भारतवासी विद्या, बुद्धि, कला, कौशल आदि में धीरे धीरे उन्नति कर रहे हैं तथा हमारी ब्रटिश

सरकार उन्हें समय समय पर सहायता भी पहुँचाया करती है।

पोर्च्यूगीज़ोंके आनेके पहले अन्य कोई भी युरोपवासी व्यापारी भारत में न आया था। पुर्त्तगाल ने ही सबसे पहिले भारत से व्यापार सम्बन्ध किया था और इसी कारणसे जब अरबोंने देखा कि कालीकट बन्दरमें नये व्यापारियों का एक दल आया है, उसका पहिनाव उढ़ाव, खाना पीना, चाल व्यवहार भाषा आदि सभी नये हैं···तो उन लोगोंने इन आगन्तुकोंका नाम "फिरङ्गी" रक्खा। पाठकों को खूब अच्छी तरह यह बात समझ लेनी चाहिये कि इस ग्रन्थ में "फिरङ्गी" शब्द खास उन लोगोंके लिये बरता गया है जो पुर्त्तगाल राज्यकी प्रजा थे और पुर्त्तगाल राज्यसे भारतमें आये थे। युरोपके किसी अन्य देशसे आनेवालेका नाम 'फिरङ्गी' नहीं, बल्कि जिस देशके वे थे उस देशके अनुसार उनका नाम रखा गया है।

इस ग्रन्थमें पुर्त्तगालसे वाणिज्य सम्बन्ध रखनेवाले उन बन्दरोंका नाम तथा उनका इतिहास भी संक्षेप रूपसे अन्तमें इस लिये दे दिया गया है कि पाठकोंको उनका भली-भाँति ज्ञान हो जाय और पाठकगण समझ सकें कि जिन बन्दरोंके राजाओंका आश्रय पाकर पुर्त्तगालवासी इतने बढ़े थे उनको पुर्त्तगालवासियोंने ही अन्तमें क्या दशा कर डाली।

इसके अतिरिक्त किन किन बन्दरोंमें क्या क्या पदार्थ पैदा

होते हैं, उनका व्यापार वहाँ किस तरह होता है, पहिले किसके हाथमें उनका व्यापार था, उन बन्दरोंके शासनकर्त्ताओंको उन पदार्थोंके व्यापारसे क्या लाभ होता था और किस तरह अन्तमें फिरङ्गियोंने उनसे वह व्यापार ले लिया आदि सभी बातें दिखा दी गई हैं। सन् सम्वत आदि पर भी पूरा पूरा ध्यान रखा गया है। आशा है पाठक इस ग्रन्थको अपनाकर हमारा उद्देश्य पूरा करेंगे।

यह ग्रन्थ बहुत ही जल्दीमें छपा है अतएव सम्भव है कि प्रूफ शोधनेपर विशेष ध्यान न रहनेके कारण इसमें भूलें रह गई हों। आशा है, सहृदय पाठकगण सुधारकर समय समय पर हमें सूचित कर दिया करेंगे।

अन्तमें ईश्वर को धन्यवाद देकर, हम अपना वक्तव्य यहीं समाप्त कर देते हैं।

भारत में पोर्च्यूगीज़।

वास्कोडीगामा।

प्रथम अध्याय।

नमस्यामो देवान्ननु हतविधेस्तेऽपि वशगा।
विधिर्वन्द्यः सोऽपि प्रतिनियतकर्मैक फलदः॥
फलं कर्मायत्तं किममरगणैः किंच विधिना।
नमस्तत्कर्मभ्यो विधिरपि न येभ्यः प्रभवति॥*

भर्तृहरि।

अमेरिका के आविष्कार के पहिले यूरोपवाले दुनिया के पूर्व्वी अर्द्ध मण्डल के केवल उत्तर के आधे हिस्सों में बसे हुए स्थानोंको ही जानते थे। यहाँ तक कि

* देवताओं को हम नमस्कार करते हैं, किन्तु उनको विधाताके वशमें देखते हैं; इसलिये हम विधाताको नमस्कार करते हैं। पर विधाता भी हमारे पूर्व निश्चित कर्मके अनुसार फल देता है; तो फिर जब फल और विधाता दोनों कर्मके आधीन हैं तो देवताओं और विधातासे क्या काम है? इस कारण कर्म ही को नमस्कार है; क्योंकि विधाताकी भी सामर्थ्य उस पर नहीं चलती।

रुशिया वा मसकोवी (Muscovy—जैसा कि यह तब कहा जाता था) का भी एक बड़ा हिस्सा यूरोपवालों को बिल्कुल मालूम नहीं था। एशिया के भी केवल उतने ही स्थानों को वे लोग जानते थे, जिनके नाम उनकी बाईबिल वा धर्म्म-पुस्तक में लिखे हैं। तरतरी वा तातार* (Tartary), मङ्गोलिया (Mongolia), हिन्दुस्तान, कैथे (Cathey) या चीन (China) आदि का वे लोग केवल भ्रमात्मक नाम सुना करते थे ; जैसे हम लोग मर्य्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र के समय की अयोध्या और राजाधिराज महाराज रावण की लङ्का आदि का हाल सुनते हैं। वे लोग अफ्रिका के ईजिप्ट (Egypt) और कुछ उत्तरीय किनारेके प्रदेशोंको जानते थे। उसमें भी एथिओपिया या एबासीनिया (Ethiopia or Abyssinia) और पूर्वी किनारे पर गिनी की खाड़ी (Gulf of Guinea) के आस पासके सब स्थान अन्धकार में पड़े थे।

यूरोप में सब से पहले फिरङ्गियों ने ही अनजाने स्थानों को खोज कर बाहर करने का काम आरम्भ किया था। विक्रम की सोलहवीं शताब्दी के आदि में वे लोग वरद अन्तरीप तक पहुंचे थे और वहाँ उन्होंने आबनूस की तरह काले चमड़े के आदमियों को देखा था। कुछ दिन बाद पुर्त्तगाल के राजकुमार हेनरी ने विचार किया कि

* तातार, मङ्गोलिया और कैथे आदिका वृत्तान्त संयुक्तांशमें देखिये।

अफ्रिका के किनारे किनारे बराबर चले जाने से कभी न कभी हिन्दुस्तान ज़रूर मिलेगा और इसी ख़याल पर उसने विक्रम सम्बत् १५४३ (ई० सन् १४८६) में बारथोलोमियो-डियाज़ (Bartholomia diaz) नामक एक होशियार आदमी को प्रथम आविष्कार का काम सौंपा। डियाज़ आरेञ्ज नदी (Orange river) के पास पहुँच कर जहाज़ से उतर गये। किन्तु जब फिर वे वहाँ से आगे बढ़ने को तैयार हुए, तब बड़े ज़ोर से तूफ़ान उठा और उसने उन्हें वहाँ से धकेल कर उत्तमाशा अन्तरीप के पार कर दिया और उन्होंने एङ्गलोआ उपसागर (Angloa Bay) में दूसरी बार जहाज़ बाँधा। यद्यपि डियाज़ का इरादा और भी आगे जाने का था; किन्तु उसके साथी लोग आगे बढ़ना नहीं चाहते थे; इससे उन्हें वहीं से लौट जाना पड़ा। उसके बाद, उस आविष्कार का भार वास्कोडीगामा नामक एक बड़े विचक्षण और वीर पुरुष को दिया गया।

एक सौ साठ * घुड़सवारों सहित वास्कोडीगामाके सेण्ट ग्याबरियेल, सेण्ट मिगेल और बेरियो नामक जहाज़ जिस समय समुद्रकी छाती पर खड़े हुए, उस समय

* डोरसे (Dorsay) कहते हैं, कि १६० नहीं किन्तु २०८ घुड़सवार थे; लेकिन अलवरेज़ बेलपोकी डायरीमे १६० घुड़सवारों का ही जिक्र है। डबल्यू० डबल्यू० हण्टर और एम० टेलर आदि भी इसी मतका पोषण करते हैं।

सवार लोग काँपते हुए हृदय से ईश्वर का नाम लेकर जयध्वनि करने लगे और तीर पर खड़े हुए पुर्तगाल वासियों ने यह समझा कि ये लोग देश का अर्थ नष्ट करके समुद्र के शीतल हृदय में आश्रय लेने जा रहे हैं। सम्भवतः, इनमें से एक भी मनुष्य लौट कर न आवेगा।

उस समय यूरोप में आविष्कार का युग चल रहा था। वास्कोडीगामा ने जब लिस्बन नगर छोड़ा, उसके ठीक पन्द्रह दिन पहिले. जान केबट (John Cabot) ने उत्तर अमेरिकाका आविष्कार किया था। ठीक एकवर्ष पहिले, वे केवल अठारह आदमियोंको साथ लेकर, आटलाण्टिक महासागर होकर, भारतकी चेष्टामें निकले थे। राजा इमैन्युएल और वास्कोडीगामाने इस यात्राको धर्म्म-युद्धकी यात्राकी तरह समझा था। देश देशान्तरमें खीष्ट धर्म्म फैलानेकी जिस प्रबल इच्छाने एक दिन राजा हेनरीको मियान बिना नङ्गी तलवार हाथमें उठाये और क्रूशके चिन्हवाला पताका कन्धे पर लिये, राज्यमें नये जीवनका सञ्चार करनेके लिये, उत्साहित किया था और जो भयङ्कर आकांक्षा विक्रम सम्वत् १४७५ से १५५५ तक, ८० वर्ष, उसके पूर्व पुरुषोंके खूनकी धारोंके साथ प्रबल वेगसे नस नसमें प्रवाहित होती थी, इमैन्युएलने उसे सफल करनेका निश्चय किया था।

"राज्य फैलाना, व्यौपार और धर्म्मका प्रचार करना" यही

तीन उद्देश्य हृदयमें लेकर वास्कोडीगामा प्रायः एक वर्ष समुद्र की छाती पर खेलते कूदते अन्तमें कालीकट * के निकट आ-पहुँचे। जेठ † के जलते हुए आकाशके नीचे, समुद्रकी छाती पर खड़े होकर, अस्ताचलको जाते हुए सूर्यकी मन्द मन्द किरणोंके उजेलेमें, भारतवर्षकी अस्पष्ट छायामय समुद्र-तीर की भूमि चित्रकी तरह देख कर, वास्कोडीगामा मारे खुशीके ईश्वरका गुणानुवाद करने लगे।

स्थान और काल दोनों वास्कोके अनुकूल थे। उन्होंने जब भारतवर्षमें पदार्पण किया, तब समग्र भारतमें "दिल्लीश्वरोवा जगदीश्वरोवा" ‡ प्रचारित नहीं हुआ था। उस समय

---

* कालीकटका हाल पुस्तकके शेष भागमें दिये हुए संयुक्तांश वा Appendix में देखिये। प्र. ले.

† Sunday, May 20, 1498 (मई तारीख २० रविवार सन् १४९८ ई० सम्वत् १५५४

‡ उस समय, समग्र भारतवर्षमें मुगलोंका राज्य स्थापित नहीं हुआ था। उत्तरमें मुसलमानोंका राज था और दक्षिणमें विजय नगरके राजा नरसिंहराज राज्य करते थे। जिन राजाओं और सामन्तोंसे पुर्तगीजोंसे प्रथम मिलाप हुआ वे सब हिन्दू थे। हाँ, वाणिज्यके अधिपति अवश्य मुसलमान थे; किन्तु उनका शासनमें बिलकुल अधिकार नहीं था। Southern India or India South of Krishna river, remained independent under its Hindu chiefs or Nayaks in consequence of its remoteness from Delhi and even from the Deccan Mahomedan states :—R. C. Dutt's Civilization of India.

मुगलोंके राज-दण्डके भयसे हिमाचलसे कुमारिका पर्य्यन्त कम्पित नहीं होता था। जिस प्रदेशमें वास्कोडीगामा उतरे थे, वह उस समय पर्वतोंसे घिरा हुआ था, उसमें छोटे छोटे राजा लोग राज्य करते थे और वह छोटे छोटे राज्योंमें विभक्त था; विशाल भारतवर्षके साथ उस प्रदेशका सम्बन्ध उस समय बहुत थोड़ा था।

हिन्दू साम्राज्य चेराके राजा "चेरामन पेरूमल" (Chera-man Perumal) उस समय हिन्दू-धर्म्म छोड़ कर मुसलमान हो गये थे और सिंहासन छोड़ कर वाणप्रस्थका अवलम्बन करके मदीना चले गये थे। उसी चेरा राज्यका अंश, हिन्दू विजय नगर साम्राज्यकी तरह इतिहासमें परिचित हुआ था। चेरा राज्यके समुद्र किनारेके भागके लिये, जो मालाबारके नामसे इतिहासमें प्रसिद्ध है, छोटे छोटे राजाओंमें उस समय खूब झगड़ा चल रहा था। कालीकटके राजा ज़मोरिन उन लोगोंमें प्रधान गिने जाते थे। ज़मोरिनने यद्यपि आस पासके पहाड़ी राजाओंसे मेल कर लिया था; तोभी वे, साधारणतः, "समुद्रराज" के नामसे ही मशहूर थे। उनका राज्य बहुत दूर तक फैला हुआ था*। समुद्रतीर

---

* It was then the most flourishing place on the Malabar Coast, the Zamorin or Emperor making in the capital of a very extensive state; —Memoirs of Hindustan—J Rennel p. 27

के अन्यान्य राजा लोग शक्तिहीन थे। हिन्दू भूगोलमें, भारतवर्ष जिन ५६ भिन्न भिन्न देशोंमें बँटा हुआ था उन्हींमेंसे एक का नाम केरल वा चेरा था। मालाबार लम्बाई चौड़ाईमें केरल देशके केवल आठवें हिस्से के बराबर था। उस समय कालीकट और कोचीन मालाबारकी दो शक्तियाँ गिनी जाती थीं। किन्तु विस्तारमें ये दोनों स्थान मालाबारके केवल आठवें अँशके बराबर थे। केरल साम्राज्यकी चिता-भस्मके ऊपर, जब हिन्दू राज्य विजय नगर प्रतिष्ठित हुआ था:तब सुना जाता है कि विजय नगरके आधीन तीन सौ बन्दर थे और उनमें कोई भी कालीकटसे छोटा नहीं था।

ईश्वरकी कृपासे पुर्तगीज पहिले मालाबारके ही किनारे पर आकर पहुँचे थे। मालाबार ही उस समय व्यौपार फैलाने, स्वदेशकी सेवा करने, धर्मका प्रचार करने और नया राज्य स्थापन करने आदिके उद्देश्यों की सिद्धि का उपयुक्त स्थान था। सम्भवत:, भारतवर्षके किसी दूसरे स्थानमें पहुँचनेसे, हिन्दुस्थानमें वास्कोडीगामा और उसीके साथ पुर्तगालको प्रतिष्ठा लाभ न होती। माला-बारके सामन्त—ज़मींदार—लोग संख्यामें बहुत थोड़े थे और शक्तिमें भी क्षुद्र थे; वे लोग एक छोटीसी यूरोपकी शक्तिके साथ भी युद्धमें सामना करनेके योग्य न थे। विदेशी बनिये सर्वदा मालाबारके तीर पर आश्रय लेते थे। सामुद्रिक वाणिज्य व्यौपार से ही मालाबारके सामन्तोंके खज़ाने भरे

जाते थे। इसीसे वे लोग विदेशी व्यौपारियोंको आश्रय देनेमें कुण्ठित नहीं होते थे वरन् आग्रह ही प्रकाश करते थे।*

क्रिश्चियन और यहूदी लोग बहुत दिनों से उन लोगों के राज्य में वास करते थे। सामन्त राजा लोग अपने देश में विदेशी धर्म्म के प्रचार होने में विघ्न नहीं करते थे। मालाबार में, उस समय, धर्म्म का बन्धन अनेक अंशों में शिथिल था। उस समय नाना धर्म्म, नाना रूप धारण करके, आत्म प्रकाश में व्यस्त थे। ईसाई, मुसलमान और यहूदी आदि वणिक उस समय बिना रोक टोक वाणिज्य करने की स्वाधीनता पाते थे। उत्तर भारत की तरह मालाबार में उस समय सनातन धर्म्म की दृढ़ प्रतिष्ठा नहीं हुई थी। उस समय नायर जाति आधी हिन्दू थी और निकटवर्ती पहाड़ी जाति कोई धर्म्म ही नहीं मानती थी। सामन्त लोग भी उस समय आधे हिन्दू समझे जाते थे। थोड़े से ब्राह्मणों ने मिल कर उस समय मालाबार के तीर पर एक "सनातन-हिन्दू-धर्म्म-सम्प्रदाय" बनाया था। वह सम्प्रदाय

स्टीफेन्स साहब कुछ और ही लिखते है :—

* The concentration of all commerce in the hands of the believers in the prophet was not favourably regarded by the wisest of the Hindu rulers, who were therefore inclined to heartily welcome any competitors for their trade--H. M. Stephens.

छोटा और शक्तिहीन था। लेकिन ब्राह्मण लोग अन्यान्य भारतीय ईसाइयों * की तरह राजाओं का मन्त्रित्व करते थे, ऐसा सुना जाता है।

इसीसे जब पोर्तगीज़ व्योपारियों ने मालाबार किनारे वाणिज्य करना चाहा, तब-समुद्र-तीर के राजाओं ने बड़ी खुशीसे उन लोगों को उसकी स्वाधीनता दे दी। मालाबार के तीर पर के बन्दर, उस समय, पूर्वी और पश्चिमी वाणिज्य के केन्द्रस्थल कहे जाते थे। यही नहीं, मिश्र के जितने व्योपारी सिंहल में या मलक्का द्वीप में व्योपार करने आते थे, वे लोग भारत उपसागर पार करके, पारस्य उपसागर की राह से, मालाबार में बिना जहाज़ बाँधे नहीं जाते थे।

जिस समय बहुत दूर पुर्तगाल से, पोर्तगीज़ बनियों ने आकर हिन्दुस्थानके तीर पर बड़ी खुशी के साथ पुर्तगाल की विजय पताका फहरायी, उस समय भारत के भीतर का हिन्दू राज्य विजय नगर † यद्यपि धन, जन, सौभाग्य, सम्पद, गौरव

---

* In 1442, an Indian Christian acted as prime minister to the king of Vijaynagar, the Suzerain Hindu State of Southern Indian-Sir W. W. Hunter-cf. Voyage of Abder-Rezak.

† विजय नगर, मदरास अहातेके होसपेट ताल्लुके में करीब ७०० मनुष्योंकी एक बस्ती है। इसके आस पास अनेक प्राचीन तीर्थ-स्थान हैं। उनमें विरूपाक्ष शिव का मन्दिर, चक्रतीर्थ, स्फटिकशिला, आनागन्दी [इसको लोग सुग्रीव की राजधानी किष्किन्धा कहते हैं] पम्पासर आदि मुख्य हैं। सम्वत् १३९२, ई० सन् १३३५ में बूका और हरिहर ने इसे बसाया। वे लोग सम्वत् १३२० की तलीकोटा की लड़ाई तक वहां रहे, उसके बाद गोलकुन्डाके मुसलमान बादशाहोंने उसे ले लिया।

और सम्भ्रममें सब से श्रेष्ट था; तथापि नये उठे हुये मुसलमान राजाओं के द्वारा सर्वदा ही विध्वस्त और विपर्य्यस्त होता था। मालाबार और समुद्र तीरके विदेशी वणिक और विदेशी धर्म्म प्रचार इत्यादि की ओर ध्यान देनेका अवसर उस समय विजय-नगर को बिल्कुल नहीं था। विजयनगर उस समय भीतर भीतर तल्लीकोटा * के भयङ्कर श्मशान के लिये तैयार हो रहा था। उस समय उसका अतुल एश्वर्य्य और अमित विक्रम कदाचित तल्लीकोटा के तीव्र चितानल में चिर दग्ध होने के लिये ही धीरे २ मंत्र मुग्ध अजगर की तरह अग्रसर हो रहे थे।

उस समय, दक्षिण का मुसलमानी राज्य कभी कभी टूट कर चूर चूर हो जाता था और उसी भग्नावशेष पर नये नये मुसलमानी साम्राज्य नये सिरसे बनतेजाते थे। इतिहास प्रसिद्ध भामिनी वंश उस समय क्रमशः लुप्त होता जाता था और उसकी जगह पर आदिलशाही और बारिदशाही आदि पाँच मुसलमानी साम्राज्य सिर उठा कर प्रतिष्ठा लाभके लिये डरते डरते चोरोंकी तरह चारों ओर झाँक रहे थे।

उत्तर भारतमें, उस समय दुर्द्धर्ष † अफ़गान शक्ति धीरे धीरे कमज़ोर होती जाती थी। दिल्ली, उस समय पर्य्यन्त भी चौदहवीं शताब्दी के भीषण घूर्णावर्त को विभीषिका से भीत

---

* तल्लीकोटाका वृत्तान्त संयुक्तांश Appendix में है।

† दुर्द्धर्ष — ऐसी तेज वा विक्रम वाली जिसके सामने जाने में भय हो

थी। उस समय पर्य्यन्त भी तैमूरलंग * की स्मृति विलुप्त नहीं हुई थी। चौदहवीं शताब्दी में तैमूरलंग घूर्णावर्त ने दिल्ली का जो ध्वंश किया था, पन्द्रहवीं शताब्दी में भी, उस ध्वंश राशिको हटा कर मुग़लराज पूर्व प्रतिष्ठा प्राप्त करने में समर्थ नहीं हुए थे।

दिल्ली के सुलतान लोग उस समय शक्तिहीन हाथों से शासन-दण्ड चला रहे थे। अपने राज्य की सीमा को पार करके बाहर निकलने का साहस उस समय उन लोगों में नहीं था। इसीसे पन्द्रहवीं शताब्दी के शेष भाग में, जब वास्कोडीगामा मालाबार में आये तब उन्होंने बड़ा सम्मान पाया था। ज़मोरिन ने अधिक शुल्क—चुङ्गी—पाने की आशा से उन्हें मन ही मन में वरन कर लिया। उनके महल में वास्कोडीगामा की अभ्यर्थना का आदेश होगया।

आजकल के ईसाइयों की तरह उस समय अरब लोग भारतवर्ष में प्रतिष्ठित थे। उन दिनोंमें 'मोफलम्' वा 'मैपिलस्' नाम सम्मान का चिन्ह समझा जाता था। मालाबार में अरबों के लिये स्वाधीन वाणिज्य की व्यवस्था थी। मालाबार के तीर पर रहने वाले अरब लोग उस समय दो सम्प्र-

* सम्वत् १४५४ [ई० सन् १३९८] में जब दिल्ली का राज्य महमूद के हाथ में था, उस समय तैमूर ने भारतवर्ष पर आक्रमण किया, दिल्ली को लूटा और वहाँ के समस्त अधिवासियों की हत्या करते हुए, लूटके धन माल को लेकर, वह मेरठ और हरिद्वार होकर वजाजुत की ओर चला गया था।

दायों में विभक्त थे। एक दलवाले भारत की शान्ति के सुख में लिप्त होकर, कुरान के साथ जो तलवार का एक दिन गाढ़ा सम्बन्ध था, उसे भूल गये थे। दूसरा दल तलवार और कुरान से महम्मद की शागिर्दी का परिचय देने में व्यस्त था। इस दूसरी सम्प्रदाय के लोग वाणिज्य की अपेक्षा धर्म्म के नाम से अधिक प्रसन्न होते थे। धर्म्म फैलाने का सुयोग पाने से पागल हो जाते थे और क़ाफिर * लोगों को देख नहीं सकते थे। अरबों ने देखा कि मालाबार के कालीकट बन्दर में नये व्योपारियों का एक दल आया है। उनका पहिनाव उढ़ाव, खाना पीना, चाल व्यवहार और भाषा आदि सभी नये हैं। पूछने ताँछने से मालूम हुआ, कि कहीं किसी समुद्र के पार पोर्तगाल है। ये लोग उसी स्थान से आये हैं। उन लोगों ने इन आगन्तुकों का नाम "फिरङ्गी" रक्खा।

इन फिरङ्गी बनियों का आना इस्लाम के सेवकों को अच्छा न लगा। उन लोगोंने खूब समझ लिया, कि कल ही लोहित सागर के रास्ते से, अरब के साथ भारत का वाणिज्य, फिरङ्गियों के द्वारा, विलुप्त हो जायगा। अब किस तरह फिरङ्गी लोग विध्वस्त होंगे, निकाल दिये जाँयगे और ज़मोरिन की विष-दृष्टि में पतित होंगे; वे लोग नित्य इसी की चिन्ता और चेष्टा करने लगे। अन्त में, अपनी मनोकामना

---

* क़ाफिर = नास्तिक अर्थात् जो लोग ईश्वर को नहीं मानते।

सिद्ध करने के लिये, किस प्रकार उन लोगों ने ज़मोरिन की मन्त्रणा-सभा का आश्रय लिया था, वह कहानी पीछे कही जायगी।

दूसरा अध्याय ।

तालो पैगोडा।

नयनस्थे मानं दधुरति भय भ्रान्त नयना ।
गलद्दानोद्रेक भ्रमदलि कदंबाः करटिनः ॥
लुठन्मुक्ताभारे भवति परलोकं गतवतो ।
हरेरद्यद्वारे शिव शिव शिवानां कल कलः ॥

भामिनी विलास ।

इस तरफ़ सेण्ट गैवरियल जहाज़ के तख्ते पर बैठे वास्कोडीगामा कितने ही आकाश-कुसुम देख रहे थे। वे अरबों के विरोध की बात कुछ भी नहीं समझे थे। समझते कैसे ? कोई एक वर्ष तक, समुद्र में मारे मारे फिरनेके बाद, एक दिन, थके हुए, तरङ्गोंके झोकोंसे विध्वस्त और समुद्रीय तूफान के ढकेले हुए पुर्तगीजों को आँखों के सामने एक नये

बड़े बड़े मदोन्मत्त हाथी जिनके गण्डस्थलों से बराबर मद स्राव होता था, जिन पर भ्रमर गुंजार करते थे, उन हाथियों के मारे जाने पर उनके गण्डस्थलों से निकले हुए मोती जिस गुफा के प्रवेशद्वार पर अस्तव्यस्त पड़े हुए देख पड़ते थे, उस गुफा में वास करने वाले सिंह को बाहर निकल गया देख कर, हर ! हर !! अब उस गुफा में क्षुद्र सियारों ने दंद मचा रक्खा है।

राज्य का माया-द्वार सहसा मानो मन्त्र-बल से खुल गया। इस देश में शीत नहीं, कुहासा नहीं, दरिद्रता नहीं, यहाँ पर सभी नया और सभी आश्चर्यमय है। वे विस्मय भरे नेत्रों से देखने लगे, कि मालाबार * के निवासियों का वर्ण काला है, उन लोगों की डाढ़ी मूँछ लम्बी हैं, कोई सिर मुँड़ाये हुए और कोई जटाधारी हैं, केवल खृष्टत्व † के चिन्ह की तरह किसी किसी के सिर पर काले बालों का एक गुच्छा हवासे हिल रहा है। उस लम्बे बालोंके गुच्छे का अगला भाग ऐंठा हुआ जूड़ेकी शकलमें ऊपरको ओर उठा हुआ है। नेटिवों —देशियों—के कानोंमें अनेक छेद हैं। उन सब छेदों में सोने के गहने लटक रहे हैं। उन लोगों का शरीर कमर से ऊपर एक दम खुला हुआ है; किन्तु जिस वस्त्र से कमर के नीचे का भाग ढका है वह बड़ा ही सुन्दर और मुलायम है। धनवान लोगों का यही पहिनावा है। साधारण लोग तो जैसी जिसकी इच्छा होती है वैसीही पोशाक पहिनते हैं। स्त्रियाँ प्राय: बदसूरत, छोटे क़दकी और दुर्बल अंग वाली हैं।

---

*मदरास अहातेमें, समुद्र के किनारे १४५ मील फैला हुआ मालाबार एक जिला है, जिसका सदर स्थान कालीकट है। इसकी चौड़ाई २५ मील से ७० मील तक है यह जिला उत्तरी मालाबार और दक्षिणी मालाबार के नाम से दो भाग होकर दो जजों के अधिकार में है।

† अलवरेज वेल्पो Alvareze Velpo ने अपने दिन-लिपि में हिन्दुओं को ख्स्तान कह कर वर्णन किया है।

उन के गले में भारी भारी सोने के गहने, अंग हिलने डोलने से, क्रीड़ा करते हैं। हाथों में बहुँटी शोभा दे रही है। पैरों की अँगुलियों में भारी दामों के पत्थरों से जड़ी हुई अँगूठियाँ सूर्य्य की किरणोंसे जगमग २ कर रही हैं। देखनेमें कुरूपा हैं, किन्तु स्त्रियाँ बड़े कोमल स्वभाव की, भोली भाली और बड़ी लोभी हैं।

वास्कोडीगामा ने मालाबार के तीर पर पहुँच कर अनुसन्धान किया तो मालूम हुआ, कि ज़मोरिन कहीं दूसरे स्थान में रहते हैं। दो फिरङ्गी दूतों ने सम्वाद लेकर, ज़मोरिनके पास आकर, वास्कोके आनेका समाचार देकर, कहा—"पुर्तगाल के राजा ने पत्र सहित अपने एक जहाज़ी सेनापति को भारतवर्ष में भेजा है। महाराजकी आज्ञा होने से, वे पत्र लेकर राज दरबार में हाज़िर होंगे।" ज़मोरिन उस समय अधिक शुल्क—चुङ्गी—पाने की आशा में फूले हुये थे। उन्होंने तुरन्त बहुमूल्य वस्त्र उपहार देकर दोनों दूतोंको विदा करने का आदेश किया और पुर्तगाल के जहाज़ी सेनापति के साथ मिलने के इरादे से खुद कालीकट गये।

दूसरे दिन सवेरे, वास्कोडीगामा तेरह मनुष्यों को साथ लेकर ज़मोरिन की राज-सभा में जाने को तैयार हुए। पुर्तगीज़ सहनाई बजाने वाले सहनाई बजानेलगे। मन्द मन्द हवा में पुर्त्तगाल की विजय-पताका भारतकी छाती पर उड़ने लगी।

ज़मोरिन ने वास्को की अगवानी के लिये एक भालो—राज्यका प्रधान मन्त्री—भेजा था। पोर्तगीज़ लोग अपनी अच्छी अच्छी पोशाकों से सज कर, जहाज़ परसे, झण्डियों से सजी हुई छोटी सी नाव के द्वारा, समुद्र के किनारे उतरे। घाट पर ही, दो सौ योद्धाओंको लेकर भालो महाशय अपेक्षा—इन्तज़ार—कर रहे थे। योद्धा लोग सब हथियारबन्द थे। किसी के हाथ में खुला बर्छा और किसी के हाथ में तेज़ फ़रसा था। सबोंने डीगामाका बड़े सम्मानके साथ अभिवादन किया। राजाकी आज्ञा से एक पालकी तैयार थी *। वे उसी पालकी पर सवार हुए और उनके साथी लोग साथ साथ पैदल चले।

कप्याकत्ता † (Capua) के भीतर होकर कालीकट का रास्ता था। कप्याकत्ता के एक धनाढ्य के घर में सबके विश्रामका स्थान निर्दिष्ट हुआ था। भोजन के लिये वहाँ अन्न, घी और पकी पकाई मछलियाँ तैयार थीं। कप्याकत्ता से कालीकट जानेमें कुछ दूर नाव पर जाना पड़ता है। नाव तैयार थी। फिरङ्गी लोग खा पी कर, फिर नाव पर चढ़े। उस समय मालाबार के एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त तक एक भया-

* उन दिनों अपने घर में पालकी रखने के लिये राज-कर देना पड़ता था। शायद इसी कारण से पालकी सन्मानका चिन्ह समझी जाती थी।

† कप्याकत्ता का वृत्तान्त संयुक्तांश में देखिये। प्र० ले०

नक चञ्चलता प्रस्तुत होगयी थी। सबोंने सुना कि, मालाबार मे कुछ अद्भुत जीव आये हैं। वे उन्हीं लोगों की तरह हँसते, उन्हीं की तरह बोलते और उन्हीं की तरह चलते फिरते हैं; किन्तु उन लोगोंका पहिनाव उढ़ाव नया, भाषा नयी एवं बिलकुल अबोध्य है और वे लोग फिरङ्गी हैं। स्वयँ भालो आकर फिरङ्गियों को बड़े आदर से राज-सभा में लिये जा रहे हैं। हथियारबन्द सिपाही पहरा दे रहे हैं। यह सब सुन कर, उन लोगों का कौतूहल इतना बढ़ गया था कि, वे झुण्डके झुण्ड कोई पनसुइया—छोटी नाव—पर चढ़ कर जल की राह से, कोई पैदल और कोई बिना ज़ीन चारजामे के घोड़े की पीठ पर चढ़कर देखने को चल दिये। इतना ही नहीं, स्त्रियाँ भी छोटे २ बालकोंको काँखमें दबाये और छाती पर चढ़ाये, फिरङ्गियों के दर्शन के लिये दौड़ रहीं थीं। उस समय सबों के मुँह से एक ही बात निकलती थी—"फिरङ्गी फिरङ्गी"।

नाव पर से उतर कर, फिरङ्गी लोग सब से पहिले एक देव-मन्दिरमें गये। वहाँ जाकर देखा, कि मन्दिर बड़ा भारी और खुदे हुए पत्थरों से बना है। मन्दिर की छत ईंटोंकी बनी है। सिंहद्वार की बग़ल में, जहाज़ के प्रधान मस्तूल की तरह, एक पीतल का ऊँचा स्तम्भ—खम्भ—है। उस स्तम्भ के ऊपर एक पक्षी की मूर्ति स्थापित है। उस पक्षी की शकलकी मूर्त्तिको देखनेसे जान पड़ता है कि मानों एक मुर्ग़ा बैठा रक्खा

है *। प्रवेश-द्वारके दूसरी ओर एक और स्तम्भ है औ
ठीक मध्य भागमें पतला गुम्बज़दार एक मन्दिर है। यह भ
खुदे हुए पत्थरोंका बना है। इस मन्दिरका दरवाज़ा इतन
तङ्ग है, कि बड़ी कठिनतासे केवल एक मनुष्य उसमें प्रवे
कर सकता है। सामने पत्थरोंकी बनी हुई सीढ़ियाँ पीतल
दरवाज़े की ओर फैली हुई हैं। मन्दिरके भीतर एक छोटीसे
मूर्त्ति शोभा दे रही है।

सिंहद्वारकी भीतिमें सात छोटे छोटे घण्टे लटक र
हैं। इसी स्थान पर बैठ कर, वास्कोडीगामा और उन
साथियोंने पहिले उपासनाकी। फिरङ्गी बनिये, उस समय
यह नहीं जानते थे और जान भी नहीं सके, कि जिस देव
मूर्त्तिके सामने घुटना टेक कर उन लोगोंने उपासनाकी, व
मूर्त्ति मेरीकी नहीं, बल्कि गौरी की थी।

किसी फिरङ्गीको मन्दिरके भीतर जानेका अधिकार नह
मिला, कारण पूजक "कोआफी"—ब्राह्मण— के सिवा किसीक
वह अधिकार नहीं था। इन कोआफियोंको देख कर उ
लोगोंने समझा, कि यही लोग इस चर्च—गिर्जे—के विशप †
'डिकन' वा 'प्रीस्ट' ‡ होंगे। उन लोगोंके ऐसा समझनेक
कारण भी विद्यमान था। पोर्तगीज़ 'डिकन' लोगों

* अनेक हिन्दू-मन्दिरोंमें खम्भेके ऊपर गरुडकी मूर्त्ति स्थापित रहती है जि
गरुड़ स्तम्भ कहते हैं। रा० ना० † विशप = धर्माध्यक्ष, पादरियोंका पेशवा।

‡ डिकन वा प्रीष्ट = पुजारी वा पुरोहित।

स्टोल § की तरह कोश्राफियोंके बायें कन्धोंके ऊपर और दाहिनी भुजाओंके नीचे होकर एक डोरा—यज्ञोपवीत—लटक रहा था।

कोश्राफियोंने, अपने नियमके अनुसार, फिरङ्गियोंके शरीर पर गङ्गाजल छिड़ककर उन्हें चन्दन उपहार दिया। उन लोगोंने देखा, कि इस नये ख्रीष्टान सम्प्रदायके राज्यमें प्रत्येक ख्रीष्टान, कपालमें, छातीमें, गलेके इधर उधर और बाँहके नीचे चन्दन लेपे हुए है।

चर्च—मन्दिर—के बाहर होनेके समय उन लोगोंने देखा, कि मन्दिरकी दीवारमें अनेक साधुओंके चित्र खिंचे हैं। किन्तु यह सब मूर्त्तियाँ 'वेनिस' नामक गिर्जेके एपसलोंकी मूर्त्तियोंकी तरह नहीं हैं। इनके सिर पर मुकुट हैं, हाथ चार हैं और किसी किसीके दाँत इतने बड़े हैं, कि मुँहसे प्रायः एक इञ्चके अन्दाज़न बाहर निकल आये हैं। मन्दिरकी भीत पर, ये सब और अन्यान्य भद्दी मूर्त्तियाँ अङ्कित देख कर, उन लोगोंमेंसे कोई कोई बहुत ही विरक्त हुए। सेण्ट राफेल नामक जहाज़के कप्तान 'डायामाडिसा' ने, मन्दिरके भीतर उपासना करनेके समय, वास्कोडागामासे कहा—"If these are devils, I adore the living God"‡ जो हो फिरङ्गी बनियोंने अपने अपने मनमें यह समझा, कि इस नये देशका

§ स्टोल—एक प्रकारका डोरा जो पादड़ी लोगोंका चिन्ह समझा जाता है।

‡ यदि ये मूर्त्तियाँ प्रेतोंकी हैं तो मैं जीवित देवताकी उपासना करता हूँ।

धर्म्म-मन्दिर भी नया है। इसलिये उस विषयमें अधिक चिन्ता न करके, वे लोग हिन्दुओंके "तालो पैगोडा" में, निश्चिन्त मनसे, मेरीकी आराधना करके, शान्त और सन्तुष्ट चित्तसे बाहर निकले।

तीसरा अध्याय।

—☉✳☉—

राज-दर्शन।

सारम्या नगरी महान्स नृपतिः सामन्त चक्रंचत
त्पार्श्वेतस्यचसापिराज परिषत्ताश्चन्द्र बिम्बाननः
उद्रिक्तः स च राजपुत्र निबहस्ते बन्दिनस्ताःकथाः
सर्वं यस्य वशाद्गगात्स्मृति पथं कालाय तस्मैनमः॥*

भर्तृहर

"मानी पैगोडा"—देव-मन्दिर—से बाहर निकल कर फिरङ्गी लोग आगे बढ़े। उस समय रास्तेके अगल बग़ल इतनी भीड़ थी, कि रस्ता चलना कठिन था। राजाकी आज्ञासे, प्रधान मन्त्री के छोटे भाई, बड़े समारोह के साथ, उन लोगोंकी अभ्यर्थना के लिये आये थे। उनके साथ विजय-नगाड़ा, तुरही, बाँसुरी और सहनाई वगैरः लेकर और बहुत से लोग आये थे। बन्दूक लिये सिपाही लोग आगे आगे

---

* वह रमणीक नगर, वह प्रतापी राजा और उसके अधीनस्थ ज़मींदार लोग तथा उसकी सभाके पण्डितोंका समाज, वह राज-भवनकी चन्द्रमुखी स्त्रियाँ, वह गौरवान्वित राजपुत्रोंका दल, वह भाट लोग और वह कहानियाँ अब कहाँ हैं? जिस कालने उन सबका विनाश किया है उसको नमस्कार है।

बन्दूकोंकी आवाज़ करते करते चलने लगी। बड़ी गम्भीरतासे जय-ढोल बजने लगा। मालाबारके तीर और कालीकटको कम्पित करती हुई भेरी बजने लगी। बन्शी और सहनाई आदिने एक स्वरसे बज कर, फिरङ्गी बनियोंका आगमन जनाया। उन लोगोंने विस्मयके साथ देखा, कि स्पेनमें रह कर, स्पेनके नवपति—जहाज़ के सर्दार—के भाग्यमें इतना सम्मान लाभ नहीं घटता।

धीरे धीरे आदमियोंकी भीड़ बढ़ने लगी। रास्तेमें बिलकुल जगह न रह गई। अन्तमें, लोगोंने घरकी खिड़कियों पर, छतों पर, यहाँ तक कि किसी किसीने पेड़की डाल पर आश्रय लिया। प्रायः दो हज़ार सिपाही भी अस्त्र शस्त्रसे सज कर, उसी कलकोलाहलपूर्ण जनस्रोत में मिल गये।

फिरङ्गी बनियोंने, सन्ध्याकालके कुछ पहिले, ज़मोरिनके राज महलमें प्रवेश किया। फाटक पर से ही राज्यके प्रधान प्रधान लोग उन्हें अभिनन्दन करके ले चले। महलके सबसे आखिरी दरवाज़े पर, एक वृद्ध छोटे क़दके ब्राह्मण पुरोहित खड़े थे। उन्होंने वास्कोडिगामाको गलेसे लगाया। फिरङ्गियोंने समझा कि यही इस ख्रीष्टान राज्यके विशप हैं— यही इस देशके राज-पुरोहित हैं। इस तरहसे, फिरङ्गियोंने ज़मोरिनके राज-महलमें प्रवेश करके, राजाके सभागृह में जो कुछ देखा उससे चकित हो गये! वे लोग मनमें कहने लगे, कि इस देशमें इतनी सम्पद इतना धन और इतनी समृद्धि है!!

विस्मयभरी आँखोंसे, साथियों सहित, वास्कोडीगामा देखने लगे, कि कमरेमें एक सब्ज़ रङ्गकी मख़मल बिछी है। उस मख़मलके ऊपर एक मूल्यवान ग़ालीचा शोभित है। उसके ऊपर ख़ूब सुन्दर मुलायम और बर्फ़की तरह सफ़ेद जाजिम बिछी है, जिसके चारों ओर बहुत से तकिये रक्खे हैं। उस सुन्दर शय्याके ऊपर, एक ज़री बादलेके कामसे बनी हुई मसनद पर, समग्र मालाबारके राजा, कालीकटके ज़मोरिन, अपने बन्धु बान्धवों सहित बैठे हैं। उनके हाथोंमें एक बड़ा सा सोनेका बरतन है, पान खाकर वे उसी स्वर्ण-पात्र—पीकदान—में पीक थूक देते हैं। ज़मोरिनकी दाहिनी ओर, एक गोलाकार सोनेके बरतनमें, बहुत सा पान और मूर देशकी चाँदीकी छुरियाँ सजी हैं। उस सोनेके बरतनका व्यास इतना बड़ा है, कि दोनों हाथ फैलाने पर भी कठिनतासे वह पकड़ा जा सकता है। पानदानके पास खड़े होकर, एक मन्त्री थोड़ी थोड़ी देरमें ज़मोरिनके हाथमें पान उठा कर देते हैं। मसनदके ऊपर सोनेका चन्दोवा, उनकी अतुल सम्पद का अन्यतम परिचय स्वरूप, सभा-भवनकी सुन्दरता बढ़ा रहा है।

जब वास्कोडीगामाने उस कमरेमें प्रवेश किया ; तब ज़मोरिनने, देशकी रिवाज़ के अनुसार, दोनों हाथोंको ऊपर उठा कर उनको अभिवादन किया* और दाहिना हाथ बढ़ा

---

* By clasping his hands and raising them up towards

कर इशारे से उन्हें उसी चन्दोवेके तले बुलाया। पानदान उठानेवाले ख़वास तथा सगे सम्बन्धियोंके सिवा और कोई राजाके बहुत पास नहीं जा सकता था ; इसीसे वास्कोडीगामा भी अधिक आगे नहीं बढ़े। फिर ज़मोरिनने सबको बैठ जानेका इशारा किया ; तब वे लोग पासके एक पत्थरके आसन पर बैठ गये। जो लोग अपार समुद्रके रास्तेसे, एक अनजाने और अनाविष्कृत देशसे, निडर होकर, हज़ारों योजनका रास्ता पार करके, उनके सिंहासनके तले आकर पहुँच गये, उन लोगोंकी असीम वीरता और साहसको देख कर ज़मोरिन मोहित और प्रसन्न हो गये। उन्होंने राज-महलमें ही फिरङ्गी व्योपारियोंको यथोचित अभ्यर्थनाका आदेश दे दिया। तुरन्त हाथ मुँह धोनेके लिये मीठा ठण्ढा जल और जलपान करनेके लिये फल मूल आ पहुँचे। सभा-भवन में बैठ कर वास्कोडीगामा और उनके साथी लोग जब तक आरामसे खाने पीनेमें लगे रहे तबतक ज़मोरिन आनन्दसे उन्हें देखते रहे और बग़ल में बैठे हुए कर्मचारियों से बात-चीत करते रहे। खाना पीना ख़तम होने पर, उन्होंने वास्कोडीगामाकी ओर देख कर कहा :—

"यहाँ पर जो लोग हाज़िर हैं, वे सब ऊँचे दर्जेके आदमी हैं, आपको जिस चीज़ की ज़रूरत हो इन लोगों से कहिये।

Heaven as the Christians do to God and whilst raising them opening and clenching his fists repeatedly.:—The Journal.

ये लोग वह सब लादेंगे।" * ज़मोरिन की बात सुन कर, वास्को बोले, "मैं पुर्तगाल के राजा का दूत हूँ। महाराज के लिये दो पत्र लेकर आया हूँ, उन्हें दूसरे के सामने देने की आज्ञा नहीं है।"

ज़मोरिन—"अच्छा, चलिये हम लोग दूसरे कमरे में चलें।" इसके बाद ज़मोरिन और डिगामा दूसरे कमरे में गये। वहाँ एक रङ्गबिरङ्गी मसनद पर बैठ कर ज़मोरिन ने फिर वास्कोडीगामा से पूछा—

"हमारे राज्य में आपका किस मतलब से आना हुआ है?"

वास्को—"हम पुर्तगाल-राज के दूत हैं। पुर्तगाल के राजा, उस प्रदेश के अनेक राजाओं से, बहुत बलवान और समृद्धिशाली राजा हैं। वे जानते हैं कि भारतवर्ष में उन्हीं की तरह ईसाई धर्म्म के माननेवाले राजाही राज्य करते हैं। इसी से वे प्रतिवर्ष भारतवर्ष का आविष्कार करने के लिये पुर्तगाल से जहाज़ भेजते थे। हम लोग भी उसी उद्देश्य से यहाँ आये हैं। हमारे देश में बहुत सोना चाँदी पाया जाता है, उसे प्राप्त करने की प्रत्याशा से हम लोग भारतवर्ष में नहीं आये हैं और आने का कोई ख़ास प्रयोजन भी नहीं है। इतने दिनों तक और दूसरे जहाज़ोंके कप्तान लोग, दो एक

* ज़मोरिन और वास्को की बातचीत एक द्विभाषी (interpreter) द्वारा होती थी।

वर्ष, भारतवर्ष की खोज में, समुद्र में फिरते फिरते, खाने का सामान चुक जाने से निराश होकर, पुर्तगालको लौट जाते थे। पुर्तगाल के वर्तमान राजा इमैन्युएल ने अबकी बार तीन नये जहाज़ बना कर हमको भारतवर्ष के अनुसन्धान के लिए भेजा है। भारतवर्षमें न आकर, यदि हम आधे रास्ते से ही लौट जाते तो वे हमको मार डालते, उनकी ऐसी ही आज्ञा थी। पुर्तगाल-राजने आप के हाथ में देने के लिये दो पत्र दिये हैं और मुँह से भी कह दिया है कि वे भारत के ईसाई राजा के भाई बन्धु हैं। दोनो पत्रों को हम कल साथ ले आवेंगे।"

ज़मोरिन—"स्वागत! अपने राज्यमें, हम आप लोगोंकी सादर अभ्यर्थना करते हैं। पुर्तगाल-राजको अपने भाई और बन्धु की तरह पाकर हम भी बहुत प्रसन्न होंगे। आप जब अपने देश को लौटेंगे, तब हम भी आपके साथ अपना एक दूत भेजेंगे।"

इसी तरह और भी बहुत सी बात-चीतों में क्रमशः रात अधिक बीत गई। वास्कोडीगामा ज़मोरिन से विदा लेकर अपने साथियों के पास आये। राज-महलके बरण्डे में, पीतल के एक बड़े भारी झाड़ में, कई एक दीपक जल रहे थे। उन्हीं दीपों के उजेले से जगमगाते हुए विस्तृत बरण्डे में डीगामा के सहचर लोग अधीर की तरह बैठे हुए थे।

रात को लगभग ग्यारह बजेके समय, फिरङ्गी लोग, राजा

ने जहाँ उन लोगों के रहने का स्थान ठीक किया था, जाने को तैयार हुए। उस समय मूषलधार वृष्टि हो रही थी, लेकिन वे लोग ठहरे नहीं। उसी पानी में सैकड़ों शौक़ीन तमाशबीनों के झुण्ड से घिर कर चलने लगे। ज़मोरिन के भेजे हुए एक प्रतिष्ठित मूर रास्ता दिखाने के लिये साथ साथ जा रहे थे। बहुत दूर पैदल चल कर, उन लोगों ने उसी धनवान मूर के घर में पहुँच कर देखा कि, घर के भीतर खुले स्थान में एक मचान है। उस मचान के ऊपर ईंटों की बनी हुई छत है। कई एक तोशक मचान पर रक्खी हैं। दो बड़े बड़े झाड़ों में तेल के दीये जल रहे हैं। दीये लोहे के बने हैं, प्रत्येक में चार चार बत्तियाँ हैं और चारों मशाल की तरह जल रही हैं। उन प्रदीपों में से इतनी तेज़ रोशनी निकलती है, कि चारों ओर उजेला ही उजेला फैला हुआ है।

वहाँ वे लोग थोड़ी देर ठहरे थे कि इतने में वास्कोडी-गामा के लिये एक घोड़ा आया; किन्तु उस पर कुछ साज सामान न देख कर, डीगामा पैदल ही अपने स्थान को चले। उन लोगों के डेरे में पहुँचने के पहिले ही, जहाज़ में से उनके कई एक साथी वास्कोडीगामा का बिछौना ओढ़ना तथा थोड़ी सी बहुत ज़रूरी२ चीजें ले आकर इन्तज़ारी कर रहे थे।

फिरङ्गियों ने बड़े आनन्द से अपनी मालाबार की पहिली रात बिताई। उस समय कौन जानता था, कि यही बहुरूपिये

बनिये एक दिन मालाबार के एक छत्र व्यौपारी के नाम से सँसार में प्रसिद्ध होंगे और पुर्तगाल के काव्य और इतिहास में स्थान पाकर समग्र यूनानी मण्डली के प्रशँसाभाजन होंगे ? उस समय किसने समझा था, कि एक दिन फिरङ्गियों के क़िलों और शहरपनाहों से मालाबार का तीर कण्टकित हो जायगा और इन लोगों के वाणिज्य और वाणिज्य-नौकाओं की भरमार से भारतवर्ष के साथ अन्य जातियों का वाणिज्य सम्बन्ध शिथिल हो जायगा ? उस समय कौन जानता था, कि जिन मालाबार-अधिवासियों ने आज फिरङ्गी बनियों को आश्रय दिया और राजा का अधिक सन्मान दिखाया और जिस ज़मोरिन ने नये मिहमान समझ कर मुग्धचित्त से अपने महल के भीतर, राज-सभा-भवन में उन लोगों की खातिरदारी और मिहमानी की, कुछ दिन में वे ही लोग मालाबार सिंहासन के परम शत्रु की तरह वज्रनिनादी कमानों—तोपों—से अनल वर्षन करके मालाबार ध्वंश करने का प्रयास करेंगे और अन्तमें मालाबार में अपनी जाति की विजय-पताका उड़ा कर, आगे के आतिथ्य का स्मरण करते हुए अधिवासियों के नाक कान छेद कर गर्व्व सहित धन रत्न लूटेंगे और माल मसालों से भरे सैकड़ों व्यौपारी जहाज़ पुर्तगाल भेज कर अपने देश की श्री वृद्धि करेंगे ? किन्तु परम पिता परमेश्वर की इच्छा ऐसी ही थी और कुछ काल बाद हुआ भी ऐसाही !

चौथा अध्याय ।

नज़राना ।

—:o:—

आशा, इच्छा और उद्वेग से चञ्चल हृदय वास्कोडीगामा अब भारत-आविष्कार के गौरव का सुख स्वप्न देखते देखते अज्ञात समुद्रके जलमें अन्धकार अदृष्ट—भाग्य—के ऊपर निर्भर करके राजा इमैन्युएलके उत्साह-वाक्यों से, हृदयमें बल सञ्चय करके, समुद्र-यात्राको तैयार हुए थे; तब उन्होंने नाना देशों के राजाओं को नज़र देने के लिये बहुत सी सभिग्री भी साथ ले ली थी।

कोरिया (Corria) का कथन है, कि उस समय वास्कोडीगामा के साथ अनेक बहुमूल्य चीज़ें थीं। क़ीमती मालों से खूब सज कर वास्को का जहाज़ समुद्र में उतराया था। कोरिया के वर्णन के साथ अलवरेज़ (Alveraze Velpo) की डायरी का मेल नहीं पाया जाता। पुर्तगाल परित्याग करने के बाद से ही, अलवरेज़ ने दिनलिपि लिखना आरम्भ किया था। वह दिनलिपि रोटेइरो (Ratairo)के नाम से जगत् में परिचित है। दिनलिपि पढ़ने से जाना जाता है, कि वास्कोडीगामा के जहाज़ में बहुत सी खाने की सामग्री थी

और डोरी रस्सी, जञ्जीर, लंगर और मस्तूल आदि भी आवश्यकता से अधिक थे ; किन्तु जहाज़ सजाने में इमैन्युएलने अधिक धन नहीं लगाया था। उन दिनों, पुर्तगाल में एक साधारण जहाज़ बना कर भारतवर्ष को भेजने में सब खर्च लगा कर ६१११४० रुपया लगता था * ।

पुर्तगाल से एक बार भारतवर्ष में आने और जाने के उपयोगी जहाज़ का खर्च ही जब इतना लगता था, तब जिस जहाज़ ने सबके पहिले भारतवर्ष आविष्कार करने की यात्रा की थी उसकी तय्यारी में कितना खर्च हुआ होगा वह सहज ही अनुमान किया जा सकता है। इसीसे बहुमूल्य सामग्रियों से जहाज़ सजाने के लिये इमैन्युएल ने उस समय अधिक धन खर्च किया था, यह बात सम्भव नहीं मालूम पड़ती, और किसके लिये उस समय भेंटही भेजी होगी ? जब वास्कोडीगामा पुर्तगालसे चले थे तब क्या किसीने सोचा था कि किसी दिन उनका सेण्ट राफेल या सेण्ट गैवरियल भारतवर्ष के किनारे खड़ा होगा ? जिनके न होनेसे काम चलता ही नहीं, वास्को के साथ उस समय वही चीज़ें थीं। कई एक आग वर्षानेवाली तोपें, उपयुक्त परिमाण गोले, बारूद, और अरबी भाषा जाननेवाले मल्लाह,यही डीगामाने साथमें लिये थे।

* The ordinary cost of construction and equipment of a single vessel intended for India, with the pay of the captain and crew for one voyage, was calculated at £ 4076 :—Sir W. W. Hunter's History of British India Vol. I

इसके सिवा अठारह हतभाग्य राज-कैदी थे जो डिग्रेडाडोर (Degradadors) के नामसे परिचित थे। पहिले किये हुए किसी गुरुतर अपराधके लिये इन सबोंको फाँसी पर लटकाने की आज्ञा थी। किसी नये स्थान पर जहाज़ लगनेसे पहिले यही लोग उतारे जाते थे। स्थानकी अवस्था, देशकी अवस्था और अधिवासियोंका व्यवहार और चरित्र आदि बहुत सी बातोंकी खबर लानेके लिये यह लोग जहाज़ छोड़ कर छोटी सी नाव पर चढ़कर तीर पर आते थे। अनेक समय नये स्थानके नये अधिकारियोंके हाथसे मारपीट खाकर कितनोंको प्राण छोड़ना पड़ता था। जिसका भाग्य खूब अच्छा होता, परित्यक्त अवस्थामें, विदेशमें और विपदके बीचमें रह कर, वही हतभाग्य जब नये देशकी भाषा और रीति नीतिको सीखकर आगे होनेवाले आविष्कारका रास्ता सुगम कर देता, तब राजा के अनुग्रहसे वह प्राण-दण्डसे मुक्त होता था। वास्कोडीगामाके साथ भी इसीसे डिग्रेडाडोर थे। वे अफ्रिकाके किनारे पर बहु-तेरोंको छोड़ भी आये थे। जो हो इसी तरहसे सजकर डीगामा भारतकी खोजमें निकले थे। कोरियाकी वर्णन की हुई उपहार आदिकी बात अलवरेज़की दिनलिपिमें नहीं देख पड़ती।

भारतवर्षके रास्ते में अफ्रिकाके जितने स्थानोंमें डीगामाने जहाज़ बाँधा था उन सब स्थानोंके अधिवासी लोग झुण्डके झुण्ड नये दृश्यको देखनेके लिये बड़े शौकसे समुद्रके किनारे

आकर खड़े होते थे। उन लोगोंको लाल रंगकी टोपियाँ और छोटी छोटी घण्टियाँ आदि देकर विदा करते थे। वे लोग उन सब चीज़ों को बहुत क़ीमती समझकर लेते और उनके बदले में हाथीदाँत के गहने आदि देकर प्रसन्न-मन से ताली बजाते बजाते अपने अपने घर लौट जाते और सबको बुला बुला कर दिखाते और कहते थे 'देखो हम क्या लाये हैं'। किसी किसी स्थान में पीले रंग के काँचके टुकड़ों के बदलेमें वास्को-डीगामा बहुत से मुर्ग़, बकरे और कबूतर आदि पाते थे। इसी तरह से जब वे मोम्बासा में पहुँचे; तब उन्होंने वहाँ के राजा के पास एक मूँगे की चूड़ी भेजी थी। यही उनका बहुमूल्य नज़राना था।

कालीकट पहुँचने के कुछ पहिले मेलिण्डी * में आकर वास्कोडीगामा के साथ तीन हिन्दुस्थानी व्यौपारी जहाज़ों की मुलाक़ात हुई। इसी स्थान से एक पथ-प्रदर्शक लेने की इच्छासे, वे मेलिण्डी के मुसल्मान अधिपति के साथ मित्रता करने की चेष्टा करने लगे। उस समय मेलिण्डी एक समृद्धि-शाली नगर समझा जाता था। मेलिण्डी के मुसल्मान राजा नीले रंग के साटिनकी पोशाक पहिनकर और बहुमूल्य मुकट से सुशोभित होकर डीगामा से मिलने आये थे। उनके शरीर की रखवाली करनेवाले सिपाहियों की कमर में चाँदी के म्यानमें तेज़ धारवाली तलवार लटका रही

* इसका वृत्तान्त संयुक्तांश में देखो।

थी। धनवान बन्धु के सम्मान के लिए वास्कोडीगामाने भी अपनी ओरसे मूल्यवान ही उपहार दिया था। अलवरेज़ने लिखा है, कि मेलिण्डो के अधिपति के लिये निम्न लिखित वस्तुएँ भेजी गई थीं—'एक अङ्गत्राण (बख़्तर), दो मूँगे की चूड़ियाँ, एक विलायती टोपी, दो टुकड़े चारख़ाने के कपड़े (Lambis), कई एक छोटे छोटे घण्टे और तीन जलपात्र'।

ज़मोरिन के साथ मुलाक़ात करने के दूसरे दिन प्रातः-काल वास्कोडीगामा ने चुन चुन कर सब से उत्कृष्ट साम-ग्रियाँ भेंट देने के लिये निकाली थीं। यदि उनके साथ, जैसा कोरिया ने लिखा है, मूल्यवान द्रव्य आदि ही होते तो वे ज़मोरिन के लिए बारह टुकड़े चारख़ाने के कपड़े, लाल रंग के चार हुड (Hoods), छः विलायती टोपियाँ, चार मूँगे की चूड़ियाँ, छः बर्तन और दो मधु से भरे और दो तेल से भरे, सब लेकर चार, धातु के बने हुए डब्बे,* नज़र देने के लिये न निकालते। वास्कोडीगामा ने कदाचित् यह विचारा था, कि इतनी चीज़ एक साथ

---

* M. Taylor ने जो तालिका दी है वह कुछ स्वतन्त्र है। नीचे फ़ेहरिस्त दी जाती है :—Four pieces of scarlet cloth, six hats, four branches of coral, six almasars, a parcel of brass, a box of sugar, two barrels of oil and one of honey were selected from the stock, and, as may be supposed, these homely articles were laughed at:—History of British India P. 217

देखने से ज़मोरिन अवश्य तृप्त होंगे। राज्य के नियमानुसार दो प्रधान अमात्यों के पास समाचार भेजा गया। कारण पहिले उन लोगों को बिना दिखाये कोई चीज़ ज़मोरिन के पास नहीं भेजी जाती थी। थोड़ी देर बाद, अमात्य लोग आये और वे वास्कोडीगामा का राज्य-उपहार देखते ही बड़े ज़ोर से हँसने लगे। हँसते हँसते बोले 'इन सब चीज़ों का यहाँ कुछ काम नहीं है। ये सब राजा के पास नहीं भेजी जा सकतीं। मक्का के दीन दरिद्र लोग भी आकर इससे बहुत अधिक उपहार दे जाते हैं। यदि सचमुच ज़मोरिन के पास नज़राना भेजने की ही आप की इच्छा हो तो सोना भेजिये। यह तुच्छ उपहार ज़मोरिन न ग्रहण कर सकेंगे। ये सब द्रव्य हम लोग राज-दरबार में भेज भी नहीं सकते।" राज-कर्मचारियों की बात सुनकर वास्को बड़े उदास हुए और गम्भीरता से बोले "हम सोने का ढेर साथ में लेकर इस देश में नहीं आये हैं और भारत में व्यौपार करने का भी हमारा उद्देश्य नहीं है। हम केवल पुर्तगाल नरेश के दूत की तरह आये हैं। हमारे पास जो कुछ है उसी में से सब से उत्कृष्ट सामिग्री हमने ज़मोरिन के लिये निकाली है। पुर्तगाल के राजा इमैन्युएल ने ये सब चीज़ें नहीं भेजीं; ये सब हमारी निज की हैं। अब की बार जब पुर्तगाल के दूत इस देश में आवेंगे तब राजा इमैन्युएल उनके साथ अनेक बहुमूल्य भेंट भेजेंगे। यदि राजा-

धिराज ज़मोरिन एक दम यह सब सामग्री ग्रहण न करेंगे; तो हम और क्या कर सकते हैं बाध्य होकर अपने जहाज़ पर लौट जायेंगे।" राज-अमात्यों ने यह बात कुछ न सुनी। वह सामान्य * उपहार वे लोग किसी तरह ज़मोरिन के पास भेजने को राज़ी न हुए। कई एक मूर बनिये उसी समय वहां आपहुंचे; उन लोगों ने भी कहा "यह सब सामान्य द्रव्य ज़मोरिन के उपयुक्त नहीं है।" वास्को इन लोगों की पेंचीली बातें सुनकर बड़े विचार में पड़ गये।

निरुपाय फिरङ्गी बनियों ने शेष में कहा "यदि तुम लोगों ने एक दम हमारा नज़राना राजा के सामने न भेजने का ही निश्चय किया है तो हमको उनके पास ले चलो। उनसे जो कुछ कहना है सो कहकर, हम अपने जहाज़ पर लौट जायेंगे।" वह भी न हुआ। "इसके विषय में ज़मोरिन के साथ सलाह करके उत्तर देंगे"—यह कहकर वे लोग चले गये। डागामा निराश होकर उसी जगह बैठे रहे। राह देखते देखते दिन भर बीत गया, कोई भी लौटकर न आया। उनके साथियों ने 'नेटिवों' की बंशी सुनकर, नाच गायन में वह रात बिताई। डीगामा का हृदय नाना प्रकार के सन्देहों से आन्दोलित होने लगा; वे विचार करने लगे कि इस देश के लोग कैसे शठ और कैसे दग़ाबाज़ हैं!

दूसरे दिन सवेरे, वही मूर लोग, जो पहिले आये थे, आकर वास्कोडीगामा और उनके साथियों को राज-महल में ले चले। उस समय महल के चारों ओर शस्त्रधारी सिपाही लोग सावधानीसे पहरे पर नियुक्त थे। महलकी बग़लमें, प्राय: चार घण्टे तक बाट जोहने के बाद सम्बाद आया कि वास्कोडीगामा दो साथियों से अधिक लेकर राजा से मिलने न जाने पावेंगे। उन दोनों मनुष्यों का भी पहिले परिचय देना आवश्यक है। इसी आज्ञा के अनुसार वास्कोडीगामा एक दुभाषी—दो प्रकार की बोलियाँ बोलनेवाला—और एक सहयात्री—साथी—को साथ लेकर ज़मोरिन के दरबार में जाने को तैयार हुए। महल के भीतर ज़मोरिन के निकट पहुंचने पर ज़मोरिन ने कहा "हमने समझा था कि आप कल हमारे साथ मिलने आवेंगे, किन्तु आप नहीं आये।"

वास्को—"मैं रास्ता चलने से बहुत थक गया था; इसी से कल हाज़िर न हो सका। वह दोष क्षमा कीजिये।"

ज़मो०—"उस दिन आपने कहा था कि हम बड़े समृद्धिशाली देश से आये हैं; किन्तु हमारे लिये तो आप कुछ भी नहीं लाये। जिस पत्र की आपने चर्चा की थी वह पत्र भी नहीं दिया।"

वास्को०—"राजाधिराज! मैं आप के उपयुक्त कोई भी वस्तु साथ में नहीं लासका; मैं केवल भारतवर्ष की खोज

में निकला था। यह केवल आविष्कार की यात्रा है। जब पुर्तगाल का जहाज़ फिर इस देश में आवेगा तब आपके उपयुक्त उपहार भी अवश्य आवेगा। पत्र तो मेरे पास ही हैं, आज्ञा हो तो दूँ।"

ज़मो०—"क्या कहा? आप आविष्कार करने आये हैं? क्या आविष्कार? पत्थर या मनुष्य? यदि मनुष्य की खोज में आये हैं तो साथ में कुछ नहीं लाये यह क्या?"

इसी तरह की बहुत सी बात-चीत के बाद वास्कोडीगामा ने राजा इमैन्युएल के पत्र निकाले। दो पत्रोंमेंसे एक अरबी भाषा में लिखा था। * उसे पढ़कर ज़मोरिन ने खूब खुश होकर, डीगामा को भारतवर्ष में बिना रोकटोक व्योपार करने का अधिकार दिया और कहा "आपके देश से क्या क्या चीज़ें व्योपारके लिए बाहर भेजी जाती हैं?

वास्को०—बहुत प्रकार के कपड़े, गेहूँ, लोहा और पीतल वगैर: अनेक चीज़ों की रफ्तनी (Export) होती है।"

ज़मो०—"क्या आपके साथ किसी तरह की बिक्री की चीज़ है?"

वास्को०—"जी हाँ ! सब तरह के माल के नमूने मेरे साथ हैं ; आज्ञा हो तो जहाज़ पर से उतार लाऊँ ।"

ज़मो०—"अच्छा, अब आप साथियोंके साथ तुरन्त जहाज़ पर जाइये। किसी निरापद स्थान में जहाज़ रखकर सुविधामत अपनी चीज़ें बेचिये।"

ज़मोरिन को भरोसा था कि फिरङ्गियों के धन से तुरन्त ख़ज़ाना भर जायगा *। इसीसे उन्होंने मालाबार तीर के सब बन्दरों में वास्कोडीगामा को वाणिज्य करने का अधिकार दे दिया; वास्कोने आशातीत अधिकार पाकर अपने को भाग्यवान तो समझा, किन्तु यह सौभाग्य कितने दिन स्थिर रहा ? कुछ काल बादही उसने समझलिया कि भारतमें व्योपार करनेके लिये पहिले बल सञ्चय करना चाहिये। फिरङ्गियोंकी यह कहानी इतिहासमें खूब प्रसिद्ध है।

---

* The Zamorin of Calicut received them graciously and looked forward to an increased customs-revenue from their trade :—Sir, W. W. Hunter's British India.

पांचवां अध्याय ।

—*—

सहसा विदधीत न क्रियाम विवेकः परमापदांपदम् ।
वृणुतेहिविमृश्यकारिणं गुणलुब्धाः स्वमेवसम्पदः ॥

भारवी । १

उस समय अरेबिया * से ताँबा, पत्थर, छुरी, गुलाब-जल, तूतिया, पशमी कपड़े, लाल वस्त्र और पारा आदि अनेक पदार्थों की कालीकटमें आमदनी होती थी। वाणिज्यके सम्बन्धमें मालावारके तीर पर मुसल्मानोंका एकाधिपत्य था। वे लोग सर्वदा फिरङ्गी बनियोंकी गतिविधि और कार्य्यकलाप पर लक्ष्य रखते थे। राजाके साथ वास्कोडीगामाकी जो वाणिज्य सम्बन्धी बात-चीत हुई थी, उसे उन लोगोंके कान तक पहुँचनेमें कुछ विलम्ब न हुआ।

राज-दरबारमें पुर्तगालके नाविकोंका इतना सम्मान और उन लोगों पर राजाका इतना अनुग्रह देखकर वे लोग बहुत जलने लगे। जब उन लोगोंने सुना कि फिरंगी बनियोंको केवल कालीकटमेंही नहीं बरन मालावार तीर पर जितने

१ (भावार्थ) आदमीको कोई काम बिना विचार किये सहसा न करना चाहिये। अविवेक बहुत बड़ी बड़ी आपदाओंका घर है। जो लोग सोच समझ कर काम करते हैं उनके गुणों पर लुब्ध सम्पदाएं कभी उनका साथ नहीं छोड़तीं।

* अरेबियाका संक्षिप्त वृत्तान्त संयुक्तांशमें देखिये।

न्दर हैं उन सभी बन्दरोंमें उन्हीं लोगोंकी तरह व्यौपार कर-
का समान अधिकार मिला है, तब मुसल्मान व्यौपारी बड़ी
चन्तामें पड़े और भारतवर्षकी सीमासे फिरङ्गियोंको किसी
कार निकाल बाहर करनेकी चेष्टा करने लगे।

उस समय समुद्र-तीर पर समुद्री डाकुओंका भय अत्यन्त
बल था। दलके दल जलदस्यु छोटी छोटी नावों पर बैठ-
र समुद्रमें और तीर पर फिरा करते थे; सुविधा पातेही
अश्विन्त बनियोंको घेरकर उनकी मालटालसे भरी नावोंको
ट लेते, किसीको मार डालते और किसीको घायल करते
। अन्तमें आग लगाकर, उन लूटी हुई नावोंको भस्म करके,
न्धकारमें समुद्रके भीतर इस तरह लुक जाते थे कि उनको
ोज कर बाहर करना कठिन हो जाता था। इस लूट मारसे
वल व्यौपारियोंको ही चतिग्रस्त होना पड़ता था सो नहीं,
ज-कोष भी चतिग्रस्त होता था।

उन समुद्री डाकुओंके साथ अनेक समय व्यौपारियोंके
पाहियोंका युद्ध भी होता था। किन्तु जलयुद्धमें प्रायः समुद्री
कूही विजय लाभ करके बनियोंको दबा देते थे।
ाय समझकर मुसल्मान बनियोंने राजाके अमात्योंके मनमें
 डाकुओंका भय बढ़ा दिया। धनसे क्या नहीं होता? †
ाके बलसे मुसल्मान बनियोंने राज्यके प्रधान प्रधान अम-

---

† They therefore bribed the ministers of the King to
nounce the Portuguese Admiral as a practical adventurer.
'say.

न्दारोंको समझा दिया कि फिरङ्गी लोग इस देशमें व्योपार करने नहीं आये, इस देशको लूटने आये हैं। वे लोग व्योपारी नहीं हैं, किन्तु समुद्री डाकू हैं। साधारण डाकुओंकी अपेक्षा अधिक सुसज्जित और भयङ्कर हैं।

दुर्भाग्यवश वास्कोडीगामाका जहाज़ साधारण तरहका नहीं था। जहाज़में तोपें थीं, गोला बारूद था और अन्यान्य युद्धका उपकरण प्रचुर परिमाणसे भरा था। मुसल्मान लोग इन जहाज़ोंको फिरङ्गियोंके लुण्ठनव्यवसायके उपयोगी बताकर राज-अमात्योंका मतिभ्रम घटाने लगे। उन लोगोंने भी सन्दिग्ध चित्तसे देखा, कि बनियोंके साथ इतने अस्त्र शस्त्र क्यों, इतनी तोप बारूद क्यों और इतना युद्धका सामानही क्यों है? उस समय फिरङ्गियोंका आचार व्यवहार कुछ सन्देह-जनक जान पड़ता था। ऐसा मालूम होता था कि वे लोग मानो मालाबार तीरको लूटनेही आये हैं। अमात्योंने स्थिर सिद्धान्त कर लिया, कि वास्कोडीगामा और उनके साथी लोग सब जलदस्यु हैं। इन लोगोंके अत्याचारसे सम्भवतः शीघ्रही मालाबारका वाणिज्य विलुप्त हो जायगा और कोई विदेशी व्योपारी मालाबारके तीर पर पैर न रक्खेगा। यह बात तो ठीक नहीं है। राजाका खज़ाना कैसे भरेगा? नाना प्रकारकी युक्ति और तर्कके बाद, शेषमें सिद्धान्त हुआ कि फिरंगी लोग व्योपारी नहीं, निश्चय ही जलदस्यु हैं। उन लोगोंके जहाज़ वाणिज्यके लिये नहीं वरन युद्धके लिये हैं। इसलिये अब उन

लोगोंको निकाल बाहर करना होगा। किन्तु उस समय ज़मोरिनके आदेशसे फिरंगी लोग अबाध वाणिज्य करनेके अधिकारी थे। राजाके अमात्य लोग मुसल्मानोंके साथ मिलकर कुछ उपाय निर्द्धारन करने लगे। अर्थकी जय हुई।

इधर वास्कोडीगामाको इन बातोंको कुछ भी ख़बर नहीं लगी थी। ज़मोरिनकी आज्ञासे उन्होंने प्रातःकाल पालकी पर चढ़कर पैनडरम्की ओर यात्रा की। पैनडरम्के पास ही उनके जहाज़ बँधे थे। डीगामा पालकी पर चढ़े और उनके साथी लोग पैदल जा रहे थे। पैनडरम्में पहुँचतेही सूर्य्यास्त हो गया। वास्कोने उसी समय जहाज़ पर जानेकी इच्छासे 'भालो' से डोंगी माँगी, किन्तु उन्होंने गामाका अनुरोध न माना। लाचार होकर वास्कोडीगामा डाँटकर बोले "यदि आप अभी नाव न देंगे तो हम राजाके पास जाकर सब हाल कहेंगे। उन्हींके आदेशसे हम अपने जहाज़ पर जा रहे हैं।" नाराज़ीका भाव देखकर राजाके अमात्य लोग उन्हें समुद्रकी ओर ले चले।

राजाके कर्मचारियोंका व्यवहार देखकर वास्कोडीगामाको पहिलेहीसे सन्देह हो गया था। उन्होंने अपने भाईको ख़बर देनेके लिये चुपचाप अपने दलके तीन मनुष्योंको भेज दिया। क्रमशः रात अधिक होने लगी। नाव मिलीही नहीं। लाचार होकर, फिरंगियोंने एक सूर नागरिकके घरमें आश्रय लिया। राजाके कर्मचारी चले गये।

दूसरे दिन सवेरे कई एक मूर उसी स्थान पर आये; डीगामाने उनसे नाव माँगी तब उन लोगोंने आपसमें कुछ सलाह करके कहा "जो आप अपने जहाज़ोंको किनारेकी ओर निकट मँगावें तो हम आपको नाव दें।"

वास्को०—"यदि हम इस समय जहाज़ोंको निकट लानेका आदेश भेजेंगे; तो हमारे भाई कदाचित यह समझेंगे कि आप लोगोंने हमें कैद करके बलपूर्व्वक यह आदेश निकलवा लिया है और इससे वे शायद तुरन्त जहाज़ खोल कर पुर्तगालकी ओर यात्रा करेंगे।"

मूर०—"हम लोग यह सब कुछ नहीं मानते; आप यदि जहाज़ों को और निकट नहीं मँगा सकते; तो उस पार जाने की आशा परित्याग कीजिये।"

वास्को०—"क्या आप लोग नहीं जानते, कि हम महाराजकी खास आज्ञासे जहाज़ पर जा रहे हैं? हमें रोककर यदि आप लोग राजाका अपमान करेंगे; तो हम शीघ्रही राजाके निकट सब बात प्रगट करदेंगे।

मूर लोग हँस कर बोले "राजाके पास जानेकी इच्छा हो तो आप चेष्टा कर सकते हैं, किन्तु यह रास्ता हम लोगोंने बन्द कर दिया है। यह देखिये चारों ओरके अर्गल (हुड़के) दृढ़तासे बन्द हैं और बाहर सिपाही लोग सशस्त्र पहरा दे रहे हैं।"

अब वास्कोडीगामाने समझा कि वे साथियों सहित

मूरोंके हाथोंमें बन्दी हो गये। जहाज़ोंको तीरके निकट न लानेसे और उस समय मुक्त होनेका दूसरा कोई उपाय न था; डोगामाने मूरोंकी बात-चीतसे अनुमान किया कि जहाज़ोंके निकट आनेसे वेलोग सब मिलकर कदाचित आक्रमण करके द्रव्यादि लूट लेंगे और अन्तमें सबका प्राण-बध करके भाग जायँगे। अतः उन्होंने स्थिर किया कि हम लोगोंके भाग्यमें चाहे जो कुछ हो, हम किसी प्रकार जहाज़ोंको तीर पर लानेका आदेश न देंगे।

धीरे धीरे भूख प्याससे बहुतही व्याकुल होने लगे। क्षुधाकी यन्त्रणा असह्य होने लगी; किन्तु किसी प्रकारके भोजन मिलनेका उपाय नहीं। मूर लोग हँस कर बोले "मरो चाहे बचो, हमें उससे कुछ हानि लाभ नहीं है; हम लोग तुम्हें किसी तरह न छोड़ेंगे।" सभी चेष्टाएँ विफल हुईं। फिरङ्गी लोग हताशकी तरह अपने अपने अदृष्ट—भाग्य—की चिन्ता करने लगे। इतनेमें उन लोगोंके भेजे हुए एक नौकरने जहाज़से लौटकर ख़बर दी, कि कल सन्ध्यासेही 'निकोलस कोयेलो' नाव लेकर तीर पर इन्तज़ार कर रहे हैं। यह बात सुनतेही डोगामाने खूब चुपचाप एक नौकरको भेजकर जहाज़ों को दूर रखनेका आदेश किया। मालिकका आदेश पातेही निकोलस् जहाज़ोंको दूर लिये जा रहे थे, किन्तु यह बात छिपी न रही। धूर्त मूरोंने शीघ्रही नावलेकर जहाज़ोंका पीछा किया, किन्तु जब पकड़ न सके तब हार कर लौट आये।

दूसरे दिन भी छुटकारा पानेका कोई उपाय न देख पड़ा। फिरङ्गियोंने कैदियोंकी तरह मूर नागरिकके घरमें दिन बिताया। उद्देश्य, सन्देह और शङ्का उन्हें व्याकुल करने लगीं। क्रमश: रात अधिक होने लगी और शस्त्रधारी सिपाहियोंकी संख्या भी बढ़ने लगी। नङ्गी तलवार, तीक्ष्ण बाण, भारी भारी धनुष और चमचमाते हुए कुठार वगैर: लेकर सिपाहियोंने कैदियोंको घेर लिया। उन लोगोंके व्यवहार और बात-चीतसे अत्यन्त क्रोध प्रकाशित होता था। कैदियोंने समझा, कि या तो ये लोग इस गम्भीर रातमें सबको मारही डालेंगे अथवा कैदियोंकी तरह प्रत्येकको प्रथक प्रथक स्थानमें भेज देंगे, किन्तु ऐसा होनेसे छूटनेका कोई उपाय न रहेगा। फिरंगी लोग उस समय एकाग्र मनसे विचारने लगे, ईश्वरने यह क्या किया!

इसी तरह शत्रुओंसे घिरे सङ्कट-संकुल स्थानमें भय और उत्कण्ठासे रात भर जागते जागते प्रभात हो गया। कई एक राज-कर्मचारियोंने आकर कहा "अगर कोई व्यौपारी-नाव मालाबार तीर पर आवेगी तो राज-विधि—क़ानून—के अनुसार उस परकी सब चीज़ें किनारे पर उतार ली जायँगी और उसके मल्लाहोंको भी तीर पर आकर बैठना होगा। जब तक सब माल किनारे पर न उतर आवेगा; तबतककिसीको नावके भीतर जानेका आदेश नहीं है।"

राज-कर्मचारियोंकी बात सुनकर डीगामाने तुरन्त अपनी

कई एक ज़रूरी चीज़ोंके लिये अपने भाईको पत्र लिखा और अन्यान्य द्रव्य आदि भी तीर पर उतारनेका आदेश दिया। उन्होंने अपने मनमें कहा कि अबकी बार धूर्त मूरोंको धूर्ततासे पराजित करेंगे।

वास्कोकी विडम्बनाके समयका शेष हो आया था। वे साथियोंके साथ छुटकारा पाकर अपने जहाज़को लौटे और पहुँचतेही बची हुई चीज़ोंका उतारा जाना बन्दकर दिया। जितनी चीज़ें तीर पर उतारी गई थीं उनकी रक्षा करनेके लिये दो हथियारबन्द सिपाही पैनडरम्के तीर पर पहरा देने लगे।

जहाज़ पर पहुँचनेके कोई चार पाँच दिन बाद वास्कोडी-गामाने ज़मोरिनके निकट पत्र भेजकर सब समाचार जनाया और उसीके साथ यह भी लिखा, कि आपकी आज्ञासे जो सब चीजें जहाज़से उतारकर तीर पर रक्खी गई थीं, वह सब मूरोंने लूट ली हैं। पत्रके उत्तरमें ज़मोरिनने कई एक बनियों और एक प्रसिद्ध नागरिकको भेजा। बनियोंको दर भाव करके मसाला ख़रीद लेनेकी आज्ञा दी गई थी। ज़मो-रिनने यह भी आदेश दिया था, कि बदमाश मूर लोग जो फिरंगी बनियोंकी चीज़ोंके पास जायँगे तो कोई उनका सिर काट लेगा तौभी कुछ सुनाई न होगी। उस समय तक भी वास्कोको ज़मोरिनका कोई बुरा इरादा नहीं जान पड़ा;

ज़मोरिनने जिन बनियोंको भेजा था वे प्राय: एक सप्ताह

तक वहाँ ठहरे सही किन्तु कुछ भी ख़रीदा नहीं, केवल लूटा। मूर लोग और उस तरफ़ नहीं बढ़ते थे ; जब कभी कोई फिरंगी किसी कामके लिये जहाज़से तीर पर उतरता ; तो झुण्डके झुण्ड दुष्ट मूर लोग दूर खड़े होकर उसके ऊपर थूक फेंकते और पुर्तगल ! पुर्तगल !! कह कर चिल्लाते थे।

छठा अध्याय।

तू जान के भी अनल प्रदीप,
पतङ्ग जाता उसके समीप।
अहो ! नहीं है इसमें अशुद्धि,
विनाशकाले विपरीत बुद्धि।

मैथिली शरण गुप्त।

पैन्डरम घाट पर फिरङ्गी बनियों की जो कुछ चीज़ें उतारी गई थीं, वह सब ज़मोरिन के भेजे हुए बनियों ने लूट लीं। यह देखकर वास्कोडीगामा बड़ी चिन्ता में पड़े। उन्होंने समझा, कि इस देश में इन सब चीज़ों की बिक्री होने की सम्भावना नहीं है और इसीलिये शीघ्रही वह सन्देशा ज़मोरिन के निकट भेजा।

सम्वाद पाते ही ज़मोरिन ने एक 'भाली' को भेजा और उससे कह दिया, कि राज सरकार के ख़र्च से कुली मज़दूरों की पीठ पर लदवाकर वास्कोडीगामा का सब माल असबाब कालीकट में भेज दो। भाली ने वही किया; किन्तु केवल ज़मोरिन के ऊपर भरोसा रखकर ही वास्को चुप नहीं रहे; उन्होंने आज्ञा दी,—'दल के सभी लोग एक एक बार

कालीकट जायं और वहाँ रहकर असबाब की रखवारी करें।

उस समय, राज्य में बड़ी गड़बड़ फैली हुई थी। मुसल्मान बनिये ही उसके कारण थे। वे लोग जब कोई उपाय से डोगामा को निकाल बाहर न कर सके; तब एक दम अस्थिर हो गये। अन्तमें, क्रमश: ज़मोरिनके दरबार तक फिरङ्गी बनियों के सम्बन्ध में आलोचना उपस्थित हुई। मक्का में उस समय पुर्तगाली व्योपारियों का नाम प्रसिद्ध था। सब मूर बनियों ने, जो मक्का और अफ्रिका आदि स्थानों से व्योपार के लिये इस देश में आते थे, किसी तरह ज़मोरिन को समझा दिया, कि ये फिरङ्गी जलदस्यु यदि कालीकट में रहेंगे तो मक्का, खम्बात और अफ्रिका आदि किसी भी स्थान से अब व्योपारी लोग वाणिज्य करने के लिये मालाबार तीर पर न आवेंगे। राजा के अमलदारों ने भी मूरों की रिशवत खाकर राजासे यही बात कही। ज़मोरिनने भी देखा, कि सचमुच फिरङ्गियों को आश्रय देकर वाणिज्य करने का अधिकार देना अच्छा नहीं हुआ। ये लोग यदि एक बार किसी तरह से मालाबार के साथ वाणिज्य सम्बन्ध संस्थापन कर लेंगे तो सर्वनाश होगा। वाणिज्य-शुल्क ही ज़मोरिन का प्रधान भरोसा था। ज़मोरिन डर गये। मुसल्मानों के साथ साथ वे भी उस समय विपद निवारण करने का उपाय ढूँढने लगे*।

---

*But in short time, as if he (The Zamorine) had been

इधर फिरङ्गी बनियों में से एक एक दो दो आदमी बराबर कालीकट जाने आने लगे। इसी तरह वहाँ के रहने वालों के साथ उनका मेल धीरे धीरे बढ़ने लगा। अलवरेज़ ने अपनी दिन-लिपि में लिखा है :—

"कालीकट जाने आने के समय क्रस्तान (हिन्दू) अधिवासी लोग हमलोगों के साथ खूब अच्छा बर्ताव करते थे। यदि हम लोग किसी दिन सोने वा खाने के लिये उनमें से किसी के द्वार पर अतिथि होते; तो वे लोग बड़े प्रसन्न होते थे। बहुत से लोग रोटी और मछली बेचने के लिये जहाज़ पर आया करते थे। हम लोग सर्वदा उनका आदर सम्मान करते थे। जब कभी कोई नागरिक अपने छोटे छोटे बच्चे वा क्रीतदास अथवा गुलामों * को साथ लेकर जहाज़ पर आता तो हम लोग उन्हें खाने को देते थे। हमलोग यह सब ख़ासकर इसलिये करते थे, कि जिसमें हमारा नागरिकों के साथ मेल बढ़े और देश में हमलोगों की प्रशंसा फैले।

भिखारियों का दल हम लोगों को बहुत ही तंग करता

---

inspired with foresight of all the calamities now approaching India by this fatal communication opened with the inhabitants of Europe, he formed various schemes to cut off Gama and his followers:—W. Robertson's Work Vol. XII.

* आगे भारतवर्षमें भी गुलामी की प्रथा प्रचलित थी। लोग दो चार रुपयोंमें ही एक नौकर ख़रीद लेते थे और वह जन्म भर ख़रीदार का गुलाम बना रहता था।

था। यहाँ तक कि कभी कभी वे लोग रात में भी आकर नाव पर उपस्थित होते थे। हम लोगों का कोई उपाय न चलता; किसी तरह उन लोगों को विदा न कर सकते। सत्य हो, इस देश को लोक-संख्या जितनी अधिक है उसके परिमाण में भोजन-सामिग्री यहाँ नहीं है। जहाज़ का पाल बाँधनेके लिये अनेक समय हमलोग तीर पर जाते थे। दोपहर को खानेके लिये उस समय पॉकिट में बिस्कुट रहता था। खाने के समय बालक, युवक और वृद्ध स्त्री पुरुष इतने भिक्षुक आकर जमा होजाते, कि वे हम लोगों के हाथों में से बिस्कुट छीन कर खा जाते थे। हम लोग देखते ही रह जाते और प्राय: समस्त दिन बिना खाये ही व्यतीत करते। जब जब हम लोग कालीकट जाते; तब तब छिपाकर वा दिखाकर बहुत सी चीज़ें बेचने को ले जाते। वह सब चीज़ें हमलोगों के घर की रहती थीं; सरकारी नहीं। टीन, कमीज़, चूड़ी और छोटे छोटे घण्टे आदि अनेक चीज़ें हम लोगों के पास थीं; किन्तु उनका दाम पूरा नहीं मिलता था। हम लोग एक दम कम दाम में उन्हें बेच देते थे। कोई भी ज़रूरी समझकर इन चीज़ों को नहीं ख़रीदता था। बहुत दूर पुर्तगाल की चीज़ों के नाम से ही जो कुछ बिकता सोई बिकता था। ख़रीद बिक्री ख़तम होने पर, जब हम लोग जहाज़ पर लौटते तब हम से कोई भी कुछ न बोलता। हम लोग निर्विघ्न चले आते थे"।

जो हो, फिरङ्गियों के साथ स्थानीय अधिवासियों का सद्भाव क्रमशः बढ़ता देखकर वास्कोडीगामा ने स्थिर किया, कि अब और आशङ्का का कारण नहीं है। अब किसी एक आदमी के ज़िम्मे थोड़ी बहुत चीज़ें रखकर सब लोग स्वदेश को लौट सकते हैं। इसी मर्म्म का एक पत्र डीगामा ने ज़मोरिन के निकट लिखा भेजा और उसीके साथ उनके लिये थोड़ी सी सामग्री उपहार की तरह पर भेजी।

डिउगोडियाज़ (Deogodiaz) वास्कोडीगामा का पत्र लेकर ज़मोरिन के दरबार में गये। चार दिनतक अपेक्षा करने के बाद, ज़मोरिन ने क्रोध करके पूछा "तुम क्या चाहते हो" ? प्रत्युत्तर में, डिउगोडियाज़ ने वास्को का पत्र निकाल कर ज़मोरिन के सामने रख दिया और कहा "हम आपके लिये कुछ भेंट भी साथ लाये हैं"।

ज़मोरिन यह सुनकर बड़ी डाँट से बोले "हम वह सब कुछ नहीं देखना चाहते, पहरेदार के पास रक्खा जाय। यदि तुम्हारे ऐडमिरेल कालीकट छोड़ना चाहते हैं; तो उनसे कहना कि हम उनसे छः सात 'ज़िराफ़िन' (४० पाउण्ड १० शिलिङ्ग) चाहते हैं। कालीकट का ऐसा नियम है, कि जो कोई विदेशी यहाँ आकर वास करता है तो उसको वह देना पड़ता है"।

ज़मोरिन की बात सुनकर डिउगोने सविनय सलाम करके बिदाई ली। वे जब राज-महल के बाहर निकल रहे

थे, उसी समय कई एक राज-कर्मचारी महल से निकल कर फिरङ्गियों के गोदाम में जाकर उपस्थित हुए। वहाँ पर, उस समय, माल असबाब की रखवारी के लिये केवल दो चार फिरङ्गी पहरा दे रहे थे। राज्य-कर्मचारियों ने वहाँ राज के सिपाहियों का पहरा बैठाकर आदेश किया "देखो, होशियार रहना, जिसमें इन कैद किये हुए फिरङ्गियों में से कोई बाहर न जाने पावे"। नगर में डुग्गी पिट गई कि कोई मनुष्य नाव लेकर फिरङ्गियों के जहाज़ के निकट न जाय। नियम भङ्ग के लिए कुछ खास दण्ड की भी व्यवस्था ज़रूर हुई होगी; किन्तु उसका कोई उल्लेख नहीं पाया जाता।

अभागे कैदी लोग वास्को के पास खबर भेजने को व्याकुल हो गए। किन्तु सन्देशा लेजाता कौन? और जाने के लिये नाव ही कौन देता? अन्त में एक बालक राज़ी हुआ। उस समय सन्ध्यादेवी का आगमन हो रहा था और सूर्य्य देवता दिन भर के कठिन परिश्रम की थकावट मिटाने के लिये अस्ताचल की ओर जा रहे थे। जब सन्ध्या देवी की सवारी निकल गई और सूर्य्य देवता भी अस्ताचल को पहुँच गए; तब वह विश्वासी बालक मल्लाहों की एक डोंगी लेकर रात के अँधेरे में, छिपकर फिरङ्गियों के जहाज़ में जा पहुँचा। दम भर में, फिरङ्गियों को समाचार मिल गया कि फिर कई मनुष्य कैद कर लिये गये हैं।

वास्कोडीगामा को गुप्त भाव से इधर उधर की खबर लेने से मालूम हुआ, कि मूर लोग फिरङ्गियों को क़ैद करके हत्या करने का ज़मोरिन से अनुरोध कर रहे हैं और ज़मोरिन भी मूर व्योपारियों की बात में सम्मत देख पड़ते हैं। वास्को का हृदय काँपने लगा। धीरे धीरे दो दिन बीत गये। डीगामा कोई उपाय न कर सके। तीर पर से एक भी नाव जहाज़ के निकट न आई। डीगामा अपने भाग्य पर निर्भर करके, साथियों की विपद का हाल सुनकर, दुःखित हृदय से सुयोग की अपेक्षा करने लगे। तीसरे दिन, चार लड़के कुछ क़ीमती पत्थर बेचने के लिये जहाज़ पर आये। डीगामा ने उन लोगों का इतना आदर किया, कि चारों बालक मोहित हो गये और लौटने के समय गामा के क़ैद किये हुए साथियों के लिये पत्र ले गये।

जब नगर-वासियों ने देखा, कि फिरङ्गियों ने ज़मोरिन के अत्याचार से पीड़ित होकर भी उन बालकों के साथ कुछ बुरा बर्ताव नहीं किया ; बल्कि उनका आदरही किया है तब फिर धीरे २ दो चार मनुष्य बेचने की चीज़ें लेकर फिरङ्गियों के जहाज़ पर आने लगे। जो कोई आता वास्कोडीगामा और उन के साथी लोग उसका हदसे ज़ियादा आदर और यत्न करते। इसी तरह कई दिन बीत गये। जब सब के मनमें विश्वास हो गया, कि फिरङ्गी लोग किसीके साथ किसी प्रकार का अन्याय व्यवहार नहीं करेंगे अथवा किसी का किसी प्रकार से

अनिष्ट नहीं करेंगे; तब एक दिन प्रायः पचीस मनुष्य आकर जहाज़ में उपस्थित हुए।

डीगामा ने अनुसन्धान करके जाना, कि उपस्थित दर्शकों में छः मनुष्य सम्भ्रान्त नागरिक हैं। उन्होंने यह सुयोग हाथ से न जाने दिया। शीघ्रही उन लोगोंको और उन्हींके साथ दस बारह दूसरे आदमियों को क़ैद कर लिया। बचे हुए भीत दर्शकों ने डीगामा की आज्ञा से पत्र लेकर तीर का रास्ता पकड़ा।

मूरोंने जब सुना, कि कालीकट के कई एक नामी भले आदमी क़ैदियोंकी तरह फिरङ्गियोंके जहाज़ में बन्द किये गये हैं तब वे लोग बहुत ही घबराये। तीर पर क़ैद किये हुए फिरङ्गी व्यौपारियों के अनिष्ट की आशङ्का कुछ कुछ दूर हुई। दो एक दिनके बाद, डीगामा ने फिर ज़मोरिन को लिखा. "हम लोग पुर्त्तगाल जाते हैं, किन्तु शीघ्र ही कालीकट फिर आवेंगे. तब तुम लोग देखना कि हम जलदस्यु —समुद्रीय डाकू—हैं या और कुछ।"

पत्र भेजने के बाद, डीगामा का जहाज़ लङ्गर उठाकर कुछ दूर आगे बढ़ा। तीर पर खड़े होकर कालीकट के दुःखित आदमी और भी घबराये। मूर बनिये देखने लगे, कि फिरङ्गी लोग अपने साथियोंको शत्रुके राज्यमें छोड़ कर चले जा रहे हैं और कुछ देर बाद ही शायद बहुत दूर समुद्र में नज़र से बाहर हो जायँगे।

वास्कोड़ीगामा का भाग्य! वह भारतवर्षकी छाया न छोड़ सके। हवा उठी थी, लेकिन थम गयी। थोड़ी दूर बढ़कर, वह जहाज़ ठहरानेको बाध्य हुए। मूरोंने देखा कि अभी भी समय है।

सातवां अध्याय।

It was the fierce enmity of the Mohommedan merchants which caused the early European traders to take the attitude of invaders:—H. M. Stephens.*

ज़मोरिन, राज महलमें धूर्त्त मूरों और अमात्यों से घिरे हुए, शायद फिरङ्गियोंके विनाश का उपाय ढूँढ़ने में लगे हुए थे। ऐसे समय में उनके पास खबर पहुँची, कि फिरङ्गियोंने हिकमत से कई एक नामी मनुष्योंको क़ैद करके पुर्त्तगाल को ओर यात्रा की है। यह सुनकर वे बहुत ही घबराये। दल बल सहित फिरङ्गियोंका नाश वा वास्को को पैरोंके तले कुचल डालनेकी जो कल्पना उन्होंने मनमें की थी, वह पल भरमें अथाह चिन्ता-सागरमें डूब गई। ज़मोरिन किं कर्तव्य विमूढ़ हो गये।

थोड़ी देरके बाद उन्होंने डिउगोडियाज़ को बुलाकर बड़े आदर से उनकी ख़ातिरदारी की और खूब मीठी बोली में कहा, "डिउगो! ऐडमिरल ने हमारे आदमियों को क़ैद क्यों किया है?"

डिउगो०—"महाराज! आपकी आज्ञा से हमलोग क़ैद में रक्खे गये हैं उसी से शायद ऐसा हुआ है।"

---

* भावार्थ—मुसल्मान व्यापारियों के ही भयङ्कर द्वेष (दुश्मनी) के कारण यूरोपियन सौदागरों को युद्ध का उपक्रम करना पड़ा था।

ज़मोरिन ने, अन्त में, सब दोष अपने नौकरों के सिर पर डाल देने की चेष्टा करके कहा :—

"डिउगो ! अपने बन्धु बान्धवों को लेकर तुम जहाज़ पर लौट जाओ। ऐडमिरल से कहना, कि वे हमारे आदमियों को छोड़ दें और हमारे राज्यमें उन्होंने जो पत्थर का स्तम्भ स्थापन करने को कहा था उसे भी उन्हीं लोगोंके साथ भेज दें। तुम तो अभी लौटकर अपने देश को नहीं जाते ? अपने माल असबाब की देखा भाली करनेके लिये नियुक्त होकर इसी देश में कुछ दिन रहोगे न ? जो हो, यह पत्र लेते जाओ ; ऐडमिरल से कहना कि वे इसे अपने राजा के हाथमें दें।"

डिउगोडियाज़ ज़मोरिनके कहने के अनुसार लोहेकी क़लमसे ताड़के पत्ते पर यह लिखने लगे:—

"वास्कोड़ीगामा नामक एक सम्भ्रान्त व्यक्ति आपके राज्य से हमारी राजधानी में आये हैं। उनके व्यवहार से हम ख़ूब सन्तुष्ट हुए हैं। हमारे राज्यमें दारु, चीनी और अभ्रक आदि सब प्रकार के मसाले और नाना प्रकारके बहुमूल्य पत्थर पाये जाते हैं। आप सोना, चाँदी, मूँगा और लाल रंग भेजिये।"

उपरोक्त पत्र लेकर डिउगोडियाज़ और उनके साथी लोग वास्कोड़ीगामाके पास पहुँचे। उस समय तक डीगामा अनुकूल हवा की अपेक्षा में जहाज़ बाँधकर बैठे हुए थे।

उन्होंने साथियोंको पाकर फिर उन्हें लौटने न दिया। कालीकट के गोदाम में जितनी चीज़ें थीं वह सब वहीं पड़ी रह गईं। कैदियोंके बदले में कालीकट के रईस नागरिक छोड़ दिये गये। किन्तु तीर पर जितनी चीज़ें अरक्षित अवस्था में थीं, उनके ज़ामिन की तरह बचे हुए बारह आदमी छुटकारा न पा सके।

मन्द मन्द पवन बहने लगी। डीगामा का जहाज़ अधिक दूर न बढ़ सका। क्रोधसे मत्त मूरोंने ७० (सत्तर) सुसज्जित नावोंको लेकर जहाज़ का पीछा किया। उन नावों में भी तोपें थीं। मूर लोग, नावों में जो गोली मारने के छेद थे, उनमें पशम देकर लाल कपड़े से उनका मुँह बन्द करके धीरे धीरे आगे बढ़ने लगे। वास्कोड़ीगामा तुरन्त ही धूर्त्तता समझ गये। उनके जहाज़ में से बारम्बार गोलियाँ बरसने लगीं। शत्रु और अधिक देरतक न टिक सके। उसी समय बड़े ज़ोर से आँधी उठी और वास्कोका जहाज़ बहुत दूर बढ़ गया। धावा करनेवाले हताश होकर फिर आये।

अनुकूल हवा में वास्कोडीगामा अपने देशको लौट रहे थे। कर्तव्य-पालन से आत्मा को जो सुख होता है, डीगामा को वह पूरी तरह से हुआ। वे और उनके साथी लोग, आनन्द में मस्त होकर, भारत महासागर की हरहराती हुई तरङ्गों को तुच्छ समझकर, बहुत दूर अपने देशको ओर

दौड़े जा रहे थे ; किन्तु राह में उनके दो जहाज़ टूट गये। उनके छोटे भाई मृत्युके मुँह में चले गये और आधे से अधिक मल्लाह समुद्र के शीतल गर्भ में सर्वदा के लिये बैठ गये।

वास्कोडीगामा, कालीकट छोड़नेके एक वर्ष बाद, लिस्बन नगर में पहुँचे। यात्रा में जितना खर्च हुआ था, उसका साठ गुना लाभ हुआ देखकर पश्चिमी व्यौपारियोंमें हलचल मच गयी। पुर्त्तगाल भर आनन्द में मत्त हो गया। घर घर जय जयकार होने लगी और राजा इमैन्युएल ने वास्कोडीगामा को ऊँची पदवीकी मर्य्यादा से विभूषित किया*। उनके शुभागमन का सम्बाद पाकर जिस समय समस्त देश आनन्द से सजीव होकर उनकी खातिरदारी का बन्दोबस्त कर रहा था ; उस समय वे दुःखी हृदय से समुद्रके किनारे बालूपर बैठकर अपने छोटे भाई और वीर साथियों की मृत्यु का स्मरण करके आँसू बहा रहे थे। उन आँसुओंको

* On Vasco De Gama the King conferred well deserved honours. He was granted the use of the prefix of Dom or Lord, then but rarely conferred ; he was permitted to quarter the Royal Arms with his own ; he was given the office of Admiral of the Indian Seas ; and in the following reign, when the importance of his voyage became more manifest, he was created Count of Vidigueira: H. M. Stephens.

और किसी ने न देखा और देखने का समय भी न मिला; कारण एक दिन जिस भारत में वाणिज्यके लिये पुर्त्तगाल के हज़ारों † जहाज़ आने जाने वाले थे, वास्कोड़ीगामा उसीका प्रथम बीज बोकर आये थे। उस समय पुर्त्तगाल के प्रत्येक अधिवासी के हृदय में मानों एक नई शक्ति सञ्जीवित होकर उन लोगोंको कर्म-पथमें उत्साहित कर रही थी; राजा इमैन्युएल तो उस समय आत्म-विस्मृत हो गये थे।

केवल पुर्त्तगाल वासी ही इस आविष्कार को एक टक लगा कर देखते थे ऐसा नहीं; यूरोप की सभी जातियों की आग्रह-दृष्टि-वास्कोडीगामा के ऊपर पड़ी थी। भारतवर्ष के धन सम्पद की ओर सभी की नज़र थी; सभी उस समय उस सोने के स्वप्नमें मग्न थे। उसीसे भारतवर्ष में जानेका यह नया पथ आविष्कृत हुआ देखकर, यूरोप के व्यौपारियोंमें एक बड़ी भारी हलचल उपस्थित हुई। भारत महासागर के स्वर्ण तीर पर जो अमूल्य निधि पड़ी थी उसको कौन अपनावेगा, उस समय पाश्चात्य जातियों के मन में यही चिन्ता प्रबल हो उठी थी। तब के युगमें जो जाति सबके पहिले जिस देशका आविष्कार करती थी उस देश के वाणिज्यमें उसी जाति का पूरा अधिकार होता था। पुर्त्तगालवाले उसीसे भारतवर्ष की ओर बड़ी लालच की नज़र से देख रहे थे। एक सौ रुपये में छः सौ रुपये लाभ! इससे किसको

† See W. Rebertson's Work Vol. XII.

लोभ न होगा* ? जिस कोहनूर को इतने दिनों से इमैन्युएल स्वप्नमें देख रहे थे, अब उन्होंने उसे मानों बाँह पर बाँध लिया। उसकी विमल आभा से पुर्त्तगाल भर जगमग २ करने लगा। उसने यूरोप को चकित कर दिया।

लिस्बन और वीनिस दोनों भिन्न भिन्न दृष्टि से भारतवर्ष की ओर देखते थे। डीगामा के लौटने के साथ ही साथ विनीस-वासियों ने समझ लिया कि हम लोगोंका भाग्य फूटा; जिस अर्थ से और जिस धन सम्पदा से हमारा देश समृद्धिशाली हुआ था वह धन रत्न अब हम लोगोंका नहीं है; अब वह सब पुर्त्तगाल का है। पुर्त्तगाल ने देखा कि अनन्त, अपार रत्नाकर के एक कोने में हम लोगोंके लिये इतना अज्ञात धन रत्न मानों इतने दिनों से लुका हुआ था। हम लोगोंने माया मन्त्रके बल से उसे प्राप्त किया है। इतने दिन ये लोग निद्रित थे, कमला के कोमल-कमल कर के स्पर्शसे निद्रा भङ्ग होनेपर, आँखें खोलकर देखा तो अमूल्य रत्नका ढेर इन लोगों के द्वारको जगमगाता हुआ देख पड़ा; अब उठा उठाकर लेने ही की देर रह गई।

---

* Correia estimates the king of Portugal's profit on Vasco-de-Gama's expedition of six thousand per cent; although the species brought back were not of the first quality. वास्कोडीगामा दो अच्छी अच्छी चीजें ले गये होते तो शायद और भी अधिक लाभ होता। ग्रन्थकार।

कविलहम ने एक दिन जिसका सूत्रपात किया था, वास्को ने अब उसी को कार्य्य में परिणत कर दिया। अब पुर्त्तगाल के सामने एक बड़ा भारी कर्म-क्षेत्र अकस्मात् उद्भासित हो गया। वह कर्म-क्षेत्र बहुत दिनोंसे पुर्त्तगालियों की तोपों की गर्जनासे काँप रहा था। उसने बहुत दिन तक उसके वाणिज्य-नौकाओंमें रत्न भर भरके उठा दिये थे और बहुत दिनोंसे उसके चरणों की सेवामें नियुक्त था। पुर्त्तगालका अभाग्य, कि वह इतनी समृद्धि का रक्षा न कर सका। एक दिन जिसके व्योपारी जहाज़ उत्तमाशा अन्तरीप से लेकर केनटून नदीके तीर तक सब स्थानों के सभी बन्दरोंमें आते जाते थे; एक दिन जिस वाणिज्य की रक्षा करनेके लिये फिरङ्गी लोग अगणित दुर्ग, खाइयाँ और गोदाम वगैरः तय्यार कर रहे थे; आज भारतवर्ष में उन लोगोंका अत्यन्त दरिद्रता सूचक चिन्ह मात्र बाकी रह गया है। गौरव श्री का भस्मावशेष मात्र अब पुर्त्तगाल की विजय-कहानीको सञ्जीवित किये हुए है।

एक दिन इस भारतवर्ष में पुर्त्तगाल का वाणिज्य, अबाध और असीम था। पुर्त्तगाल का प्रतिद्वन्द्वी कहने को भी कोई न था। फिरङ्गी बनिये भारतवर्ष में आकर जितनी चीज़ें खरीदते और बेचते उसका दाम ठहराना बेचनेवाले की इच्छा के आधीन नहीं था, किन्तु खरीदार के अनुग्रह पर निर्भर था। एक दिन वे लोग इस भारतवर्षसे जो कुछ अमूल्य, जो कुछ दुष्प्राप्य

और जो कुछ आवश्यक होता वही ले जाते। उसमें कोई चूँ भी न कर सकता था। आज उन लोगों की बात याद करने से दुःख होता है। किन्तु पुर्त्तगाल के अधःपतन के लिये सहानुभूति नहीं होती, कारण उसने अपने पैरों में आपही कुठार मारा था। गोआ में राज्य संस्थापन करके, अपने विनाश का रास्ता उसने आपही साफ़ कर दिया था। संसार के इतिहास में ऐसी ध्वंश-कहानी विरल नहीं है।

आठवां अध्याय

फिरङ्गियोंका अत्याचार।

It is to be deplored that these (Portuguese) soldiers were possessed by a spirit of fanaticism against the religion of Islam which stained their victories with cruel deeds.

H. M. Stephens.

हिन्दुस्तानी व्यौपारी चीजों से भरा हुआ जहाज़ लेकर, फिरङ्गी व्यौपारी वास्कोडीगामा जिस साल लिस्बन लौट गये थे, उसके दूसरे ही वर्ष पुर्त्तगाल के राजा इमैन्युएल ने घोषणा की—"ईश्वर के अनुग्रह से भारतवर्ष के वाणिज्य का आविष्कार करनेवाले हम लोग हैं और हिन्दुस्थान के साथ व्यौपार करने के सब हक़ हमी लोगों को हैं; किन्तु पुर्त्तगाल का प्रत्येक अधिवासी और हमारा आज्ञा-पत्र लेकर पुर्त्तगाल में रहनेवाले अन्यान्य विदेशी लोग भी समान भाव से हिन्दुस्थान के साथ व्यौपारका नाता जोड़ सकते हैं।"

भाग्यवान परदेशी बनियों के ऊपर कृपा करके ही यह हुक्म दिया गया था, ऐसा नहीं जान पड़ता; क्योंकि व्यौपार करने से उन लोगों को जो कुछ लाभ होता, उसका चौथा हिस्सा पुर्त्तगाल के राज-कोष में देने की बात ठहरायी गयी थी। इसके, आक्षेप का विशेष कारण नहीं था। उन दिनों में

हिन्दुस्थान अथाह रत्नों का भण्डार समझा जाता था ; उस समय हिन्दुस्थान की एक मुट्ठी धूल भी धन के लोभी विदेशी बनियोंकी आंखोंमें बड़ी क़ीमती जंचती थी। वास्कोडीगामा के हिन्दुस्थान में आने से यह प्रमाणित हो गया था, कि एक बार हिन्दुस्थान में आने-जानेका जो खर्च लगता है, लाभ का हिस्सा उससे बहुत ज्यादा, प्राय: साठ गुना, होता है। इस अवस्था में व्योपार से मिले हुए धन का चौथा भाग राज-कोष में देकर राजा को राज़ी रखना कौन नहीं चाहता था ?

इतने दिनोंसे, इमैन्युएल अपनी चकित आँखों से धन माल से भरे हुए हिन्दुस्थान को केवल माहिनी चित्र की तरह देखकर अचरज और खुशी में दिन बिता रहे थे। इस समय तक भी उन्होंने अपने मन में इस चिन्ता को स्थान देने का साहस नहीं किया था, कि एक दिन वही हिन्दुस्थान पुर्त्तगाल के सिंहासन के तले माथा झुकावेगा। लेकिन वास्कोडीगामा के स्वदेश फिर जाने के बाद ही इमैन्युएल ने प्रतिज्ञा की,—"अब हिन्दुस्थान को जीतने का सामान करना होगा। अब कल्पना को अथाह समुद्र के जल में डुबाकर, सत्यरूपी सोने के मन्दिरका द्वार खोलकर, संसार भर को घमण्ड के साथ दिखाना होगा कि हिन्दुस्थान हमारा है।"

इमैन्युएल ने और देरी नहीं की ; जहां तक हो

सका जल्दी ही तेरह व्योपारी-जहाज़ सजाये गये। पुर्त्तगाल के साहसी और चतुर मल्लाह उन जहाज़ों के अध्यक्ष होकर तोप, गोला और बारूद आदि लेकर, होशियार रास्ता दिखानेवाले के इशारे से हिन्दुस्थान की ओर चले। विधर्म्मी नेटिवों को सर्वदा के अन्धकार में से उजेले में लाने के लिये सोलह धर्म्म-याजक भी, दयाके वश में होकर, हिन्दुस्थान आने को साथी हुए। इनके कप्तान पिद्र् अलवरेज़ (Pedru-Alveraze) जब कालीकट पहुँचे; तब ज़मोरिन बड़े ही प्रसन्न हुए। हाय रे! वाणिज्य-शुल्क की मोहिनी माया!

पिद्र् अलवरेज़ ने समुद्र किनारे एक गोदाम बनाकर बड़ी खुशी के साथ व्योपार आरम्भ कर दिया। अरबी व्योपारी तो आगे से ही फिरङ्गियों से जलते थे। पहिले मिलाप में ही, वे उन लोगोंको नहीं देख सकते थे। अब उन लोगोंने बड़ी अचरज की दृष्टि से देखा, कि फिरङ्गी पिद्र्ने समुद्र में एक अरबी जहाज़ पकड़कर ज़मोरिन के पास भेंट —नज़र— की तरह भेज दिया और कालीकट के बन्दर में भी मुसल्मानी व्योपारी-नावों को लूटकर उनपर का माल असबाब उठाने लगे। अरबी व्योपारियों ने समझ लिया, कि एक हाथ में नंगी तलवार और दूसरे हाथ में क्रूश लेकर जो फिरङ्गी लोग हिन्दुस्थान में व्योपार करने आये हैं, वे ऐसे वैसे मनुष्य नहीं हैं; अतएव हम लोगों के साथ फिरङ्गियों का जीने मरने का झगड़ा उपस्थित हुआ है।

महाशक्तिशाली मुहम्मद ने भी खाली हाथों से धर्म का प्रचार नहीं किया था। उनके चेलों ने कृपाण और कुरान का जन्मभर का सम्बन्ध अच्छी तरह समझ लिया था। इसीसे विक्षुब्ध, विध्वस्त और दूसरे की बढ़ती को देखकर जलनेवाले कई एक अरबोंने एक दिन पुर्त्तगाल के कालीकटवाले प्रख्यात गोदाम पर आक्रमण करके उसके कोठीवाल और ५२ नौकरों को जान से मारडाला। फिरङ्गी बनियों के तपे हुए लोहू ने उसी दिन प्रथम हिन्दुस्थान का चरण रँगकर फिरङ्गियों की भविष्यत् प्रतिष्ठा का पथ सुगम कर दिया। पिद्र इस अपमान को भूले नहीं। वे बारह अरबी जहाजों का नाश करने के लिये कोचीन की ओर चले।

घर घर का विवाद भारतवर्ष में सदा सर्वदा से प्रसिद्ध है। आगे भी कोचीन और कालीकट में सख्य सम्बन्ध नहीं था। कोचीन के राजाने विचार किया, कि जब ईश्वर ने सुयोग दिया है तब क्यों इसे योंही निकल जाने दें; अतः उन्होंने पिद्र के साथ मित्रता कर ली। पिद्र ने कल्प-वृक्ष होकर वर दिया—"हम किसी दिन ज़रूर तुमको ज़मोरिन की गद्दी पर बैठावेंगे। जब हम लोग हैं तब भय काहेका और चिन्ता ही कैसी?" कोचीन के राजा ने कालीकट के सिंहासन के सुख-स्वप्न से मोहित होकर खूब सस्ते दामों में पिद्र के हाथ अनेक प्रकार की चीज़ें बेच दीं

और बिना कुछ विचारे ही उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। कोचीन के तीर पर फिरङ्गी बनियों की कोठी बड़े घमण्ड से सिर उठाकर भारत महासमुद्र की लहरों का हिलोरा देखने लगी।

पिद्र की मनोवासना पूरी हुई। कुइलन और कानानोर आदि के राजाओं ने भी पिद्र को मित्र की तरह पाकर अपने को कृतार्थ समझा। पिद्रू अलवरेज़ ने बड़े अचरज से देखा, कि मालावार तीर को छोड़कर भी भारतवर्ष में बहुत से व्योपार करने लायक़ बन्दर हैं। वे मन में कहने लगे, कि ये सब एक दिन पुर्त्तगाल के ही हो जायँगे। क़ीमती चीज़ें जमा करके पुर्त्तगाल को लौटने के समय पिद्रू दुर्भाग्यवश या भूल से कोचान के एक सम्भ्रान्त व्यक्ति को पकड़ ले गये थे। यह काम भ्रम से ही हुआ था, कारण उस समय कोचीन की कोठी में कई एक फिरङ्गी कोठीवाल की तरह पर वास करते थे।

इधर राजा इमैन्युएल भी हाथ बांध कर चुप चाप नहीं बैठे रहे; पिद्रू के अपने देश को लौटने के पहिले, जोआ-ओडानोवा (Joaodanova) चार जहाज़ लेकर मालावार तीर की ओर पिद्रू के पद-चिन्ह का अनुसरण करने को व्यस्त हुए। कालीकट के लूटे और जलाये हुए जहाज़ों में से धूआं का ढेर उठकर मालावार किनारे फिरङ्गियों का पराक्रम विघोषित करने लगा। राजा इमैन्युएल ने देखा कि

उनके सामने दो रास्ते खुले हैं:—एक तो शान्ति और दूसरा समर ; या तो मालावार उपकूल के बन्दरों के साथ व्योपार का सम्बन्ध जोड़ना, नहीं तो कालीकट का नाश करके अरबी बनियों को भारतवर्ष से निकाल बाहर करके हिन्दूस्तान में एक छत्र व्योपार फैलाना। खीष्टान इमैन्युएल अब इस चिन्ता में पड़े, कि कौन रास्ता पकड़ें, अलिभशाखा या खून की प्यासी नंगी तलवार ? व्योपार फैलाने के समय, शान्ति की सुशीतल छाया के तले खड़ा होकर कौन कब समृद्धिशाली हुआ है ? इमैन्युएल कृपाण उठाकर कृतार्थ हुए ; उसीसे भारत महासमुद्र के सेनापति वास्कोडीगामा ने फिर २० जहाज़ लेकर भारतवर्ष में पुर्त्तगाल की पताका गाड़ने के उद्देश्य से यात्रा की।

अधिक दिन नहीं, पाँच वर्ष पहिले जबकि और जहाज़ लेकर टेगस तीर से भारतवर्ष को चले थे, उस समय पुर्त्तगाल ने निराशा में पड़ कर इमैन्युएल के कार्य्यका भीषण प्रतिवाद किया था। बस, प्राणहारी अभियान से डीगामा का निकास करने के लिये पुर्त्तगाल के अधिवासियों ने हाथ उठा २ कर अनेक चेष्टाएँ की थीं। किन्तु अब की बार वैसा नहीं हुआ। डीगामा पुर्त्तगाल का आशीर्वाद सिर पर रखकर, बड़े धमण्ड से हँसते खेलते हिन्दुस्तान के लिये रवान: हुए। बेलेम मन्दिर ने विजय-घण्टा बजा कर वास्को का अभिनन्दन किया। वास्कोडीगामा पहिले

भारतवर्षमें आये थे आविष्कार करने। अबकी बार उन्होंने यात्रा की उसी नीले समुद्र से घुसे हुए भारत की ओर को कुछ और कृपाण की सहायता से आविष्कार की भित्ति को दृढ़ करनेके लिये और कमला का भरा हुआ भण्डार लूटकर पुर्त्तगालका राज्य-कोष भरनेके लिये। इसीसे उस बार देश के सर्वनाश की आशङ्का करके पुर्त्तगालवासियों ने दुःख और क्षोभ से वास्कोडीगामाको जिस प्रकार अभिशाप दिया था, इस बार उसी प्रकार हृदय भरके आशीर्वाद करने लगे। उस दिन और इस दिनमें कितना प्रभेद !

पुर्त्तगालका कर्म-पथ अब लाल किरणोंसे समुज्वल हो कर सर्व साधारणको कर्तव्य-पालन में प्रबोध करने लगा। पुर्त्तगाली लोग अक्लान्त अध्यवसाय और असीम उत्साह से उसी पथ में अग्रसर होने लगे। एक हाथ वाणिज्य से और दूसरा हाथ खून से रंगा हुआ रणदेवी के कन्धे पर रखकर पुर्त्तगालकी कर्म-व्याकुलता उन्नति के मार्ग में दौड़ी। उस अपरिचित देश के सामने, दूर अतिक्रम और बाधा व्यतिक्रम [illegible] कर करता हुआ जल प्रवाह में तिनके की तरह बह [illegible]। आगे कर्मके अनन्त यश से भरा हुआ सुवर्ण-पथ और [illegible] मूर्त्तिमान उत्साह स्वरूप नरपति इमैन्यु एल कर्म और [illegible], कौशल और विचक्षणता से तथा दृढ़ता और [illegible] [illegible] पुर्त्तगाल को उत्साहित करते थे; तथापि बुद्धि और [illegible], कौशल और उत्साह [illegible] को निष्फल होते

यदि कर्मके प्रकृत क्षेत्रमें खड़े होकर प्राणपण से विजय लाभ करनेके उपयुक्त कर्मचारी न रहते; किन्तु इमैन्युएल के शिक्षित नेत्र लोक-निर्वाचन में सुदक्ष थे; उसी से वास्को-डोगामा के प्रथम अभियान के बाद, चौबीस वर्ष में ही मलक्का पर्य्यन्त पुर्त्तगाल को विजय-पताका उड़ने लगी।

उस समय मलक्का * को तरह समृद्धिशाली बन्दर और नहीं था, ऐसा कहने में अत्युक्ति न होगी। एशिया के पूर्व्व और पश्चिम भागके बीच में अवस्थित होनेके कारण मलक्का एशिया के वाणिज्य का केन्द्र स्वरूप हो रहा था। मलक्का में, उस समय चीन और जापान आदि एशियाके सभी राज्यों के जहाज़ देख पड़ते थे और इस ओर मालाबार, सिंहल, कारोमण्डल, यहाँतक कि बङ्गाल के व्यौपारी भी व्यौपार के लिये मलक्का आते जाते थे। अधिक काल नहीं, चौबीस वर्ष के भीतर ही, पुर्त्तगाल इस मलक्का में सुप्रतिष्ठित हो गया था। केवल यही नहीं, वह गोआ और डिउ † नगर में उपनिवेश (Colony) स्थापन करके मालावार उपकूल में एकाधिपत्य कर रहा था और लोहित सागर के पथ से मिस्र और भारतके वाणिज्य में विषम बाधा डालकर फिरङ्गियोंकी सुख समृद्धि की वृद्धि कर रहा था।

उसी परम उत्साही इमैन्युएल के द्वारा दूसरी बार प्रेरित

---

* मलक्का का संक्षिप्त हाल संयुक्तांश में देखिये। प्र० लि०

† गोआ और डिउ का हाल संयुक्तांश मे देखिये। प्र० लि०

होकर, वास्कोडीगामा विक्रम संवत् १५५८ (ई० सन् १५०२) में फिर कालीकट आये। अरबोंकी आगकी शत्रुता डीगामाके हृदय में सर्वदा जाग रही थी। वे ज़मोरिनकी बन्धुता और अनुग्रह भूल कर, जिस कालीकट ने उनको एक दिन सादर अभिनन्दन किया था और राजाका अधिक मान प्रदर्शन किया था, उसी कालीकट पर अग्नि वर्षाने लगे! अरबों के व्योपारी जहाज़ जो तीर पर थे उन सबको नष्ट कर दिया। वास्को जिस उद्देश से दूसरी बार भारतवर्षमें आये थे, वह थोड़ा बहुत सफल तो हुआ था; किन्तु उनके नाम के साथ नृशंस अत्याचारकी कहानी ऐसी संयुक्त हो गई थी कि फिरङ्गी बनियों के नाम से ही लोग अत्यन्त शङ्कित होते थे। उन लोगोंको राक्षसकी तरह समझते थे। अँगरेज़ वर्णित नृशंस हैदरअली भी वास्कोडीगामाकी तरह अत्याचार नहीं कर सके थे, तौभी हैदर का इतिहास लिखनेके समय अँगरेज़ ऐतिहासिकोंने नाक भौं सिकोड़ी है!

डीगामा ने बड़ी बहादुरी से कालीकट में पहुँचकर, वहांके जहाज़ों को पकड़ा; साथ ही साथ आठ सौ मल्लाहों को कैद कर लिया और समुद्र के जल में मनुष्यत्व विसर्जन करके, उनमें से प्रत्येकके दोनों हाथ और दोनों कान खेलकी तरह काट लिये। यदि वे इतना ही करके शान्त हो जाते, तौभी समझते कि उनके पाषाण सदृश कठोर हृदय में मनुष्यत्व का चिन्ह थोड़ा बहुत वर्तमान था।

किन्तु नहीं, उन्होंने वे सब कटे हाथ और रक्तसे तराबोर नाक कान इकट्ठे करके हचों की सूखी पत्तियों के ढेरमें लपेटकर ज़मोरिन के पास भेज दिये। क्यों? राजाके चरण कमल में उपहार की तरह। यह समझकर, कि ज़मोरिन भोजन बनवाकर खायँगे*। यह कहानी सुनकर विश्वास करनेका साहस नहीं होता, हृदय काँपने लगता है; किन्तु निरपेक्ष इतिहास धर्म-साक्षीकी तरह इस भयङ्कर अत्याचार की कहानी की सत्यता प्रमाणित करनेके लिये सप्रमाण जीवित रहेगा। सब दिन यही कहेगा, कि यह पैशाचिक काण्ड फिरङ्गियों के ही उपयुक्त था और किसी के नहीं।

जिस समय यह पैशाचिक व्यापार घटा था, उस समय, जान पड़ता है, डीगामा भूल गये थे कि एक दिन ज़मोरिन के राज-महलमें अच्छे अच्छे फल मूलों से उनके जल पान की व्यवस्था की गयी थी; कालीकटके अनेक रईस, गृहस्थ और धनाढ्यों के घरमें एक दिन डीगामा ने भूख में भोजन, प्यास में पानी और आराम के लिये बिस्तरा पाया था। उसी के उपयुक्त पुरस्कार की तरह, फिरङ्गी बनियोंके श्रेष्ठ सरदार कालीकट को विध्वंश करनेके लिये उद्यत होकर, निरपराध मल्लाहों के खून से सिंचे हुए कटे हाथ, कटे कान और कटी नाकें भोजन बनाने के लिये राज-महल में भेजकर पृथ्वीपर

यशस्वी हुए थे *। हतभाग्य 'नेटिवों' वा अधिवासियों में से जो लोग बन्दी होकर विचारके लिये डीगामा के निकट लाये गये थे, कड़े कड़े काठ वा पत्थरोंके टुकड़ों से उनके दाँत तोड़कर, टूटे हुए दाँतों के टुकड़े उनके पेटमें घुसेड़ दिये गये थे। अत्याचार के सब से ऊँचे सिंहासन पर बैठकर भी, इस प्रकार के अत्याचार की प्रक्रिया की कल्पना की जा सकेगी कि नहीं, इसमें सन्देह है।

सम्वाद पहुँचानेवाला एक अभागा ब्राह्मण दूरदृष्टिसे फिरङ्गियोंके मुँहमें पड़कर केवल प्राण बचानेके लिये स्वीकार करनेको बाध्य हुआ था, कि वह सन्देशा पहुँचानेवाला नहीं बल्कि गुप्त चर (खुफ़िया पुलिस) है। हतभाग्य को और दूसरा उपाय नहीं था, किन्तु उसकी यन्त्रणाका शेष यहीं नहीं हुआ। फिरङ्गी सरदारने पैशाचिकता में उन्मत्त पिशाचको भी पराजित करके, ब्राह्मणका होठ और दोनों कान काट लिये। उसके बाद एक कुत्ते का तुरन्त काटा हुआ कान उस हतभाग्य के कटे हुए कानों के स्थान पर लगाकर, उन्होंने उसको जमोरिनकी सभामें भेज दिया। हाय ब्राह्मण! तुम्ही पैमोडा में पाँच वर्ष पहिले तुम्हीं लोगोंने न एक दिन इस राक्षस तुल्य हिंस्र स्वभाववाले फिरङ्गी सरदारको खूब सम्मान दिखाकर गौरीके मन्दिर में चन्दन उपहार दिया

* Sir W. W. Hunter's British India.

था ? राज-महल के फाटक पर तुम्हीं लोगोंने न एक दिन इस नर-पिशाचके लिये सम्भ्रम सहित अपेक्षा की थी ?

जैसे सरदार उनके अनुचर लोग भी वैसे ही उपयुक्त थे। एक दिन विनसेण्टो नामक एक फिरङ्गी ने एक बड़े माननीय अरबी बनिये को बिलकुल अकारण अथवा कल्पित कारणसे बेत मारते मारते अचेत कर दिया था; उससे भी तृप्ति न होने पर, उस बेहोश हतभाग्यके मुँहमें विष्ठा भरवाकर उसके ऊपर एक टुकड़ा सूअरका माँस रख कर मुँह बाँध दिया था। सुनते हैं, वह मन्दभाग्य अरबी बनिया कदाचित एक दिन महामान्य विनसेन्टो सोड्रीको अपमान सूचक वचन बोला था, ऐसा उन्हें सन्देह हुआ था! कोई २ कहता है, कि अपमानजनक बात बोलनेकी बात आत्माभिमानी सोड्रीकी सम्पूर्णतया गढी हुई है। इसके मूलमें ज़रा भी सत्य नहीं है। इतिहासवेत्ता हण्टर साहबने इसीसे कहा है:—"The Portuguese cruelties were deliberate rather than vindictive." "फिरङ्गियोंका अत्याचार प्रतिहिंसक नहीं था। उन लोगोंने इच्छामत अत्याचार किया था।"

प्रतिहिंसा परायण होकर मनुष्य जब अत्याचार करता है, तब उसके लिये क्षमा वा उत्तर रहता है। किन्तु जो मनुष्य अकारण, अनायासही, अत्याचार करनेका प्रण करके अत्याचार

करता है उसके लिये क्षमा कभी नहीं होती। वह मनुष्य मानव-विचारके अमलमें आनेके योग्य भी नहीं हैं।

अमानुषिक अत्याचारके स्रोतसे समग्र मालाबारको विध्वस्त करके, डीगामा विजय ढोल पीटते पीटते पुर्त्तगालको लौट गये। इतने दिनों बाद जमोरिनको समझ पड़ा, कि फिरङ्गियोंने उनकी बन्धुताका सम्मान कहाँ तक और किस तरह रक्खा है! इतने दिनों बाद वे समझे, कि वाणिज्य-शुल्क की प्रत्याशासे उन्होंने कैसी भयङ्कर आपद् बुलायी! अब उनको याद हुआ, कि पाँच वर्ष पहिले जब मुसल्मान बनियोंने फिरङ्गियोंके विरुद्ध अभियोग किया था, मालाबारसे उन लोगोंको विताड़ित करनेके लिये सविनय अनुरोध किया था, उस समय उन लोगोंकी कातर प्रार्थना पर कान न देकर उन्होंने क्या ही भयङ्कर भूल की थी।

अरबी बनिये पूर्व्वापर फिरङ्गियोंसे विद्वेष ही रखते थे। वे लोग इन सब भीषण अत्याचारोंका बदला लेनेके लिये उन्मत्त हो गये थे। अत्याचारसे मरे हुए अरबोंका एक एक रक्त-विन्दु रो रो कर बदला माँगने लगा। महम्मदका शानदार धर्म्म काँपने लगा। क्रोधसे मत्त, क्षुब्ध, अरबोंने फिरङ्गियोंके मित्र कोचीन-राजके राज्य पर चढ़कर पुर्त्तगीज़ कोठीवालों को छीन लेना चाहा; किन्तु कोचीन-राजने शरणागत फिरङ्गियोंकी रक्षा करनेके लिये युद्ध, कलह और विपद आदिका कुछ भी ख़याल न किया।

इधर वास्कोडीगामाने भारत परित्याग करनेके पहिले मालाबारमें खूब रोना पीटना मचवाकर; कोचीन, काननोर, कुइलन और कालीकटमें व्योपारका खूब दृढ़ बन्दोबस्त करके, दो नयी कोठियाँ बनाई थीं और राजाकी आज्ञासे काननोरकी कोठीमें बड़ी भारी भारी तोपें, बारूद और गोले आदि युद्धके सामान इकट्ठे करके ज़मीनके नीचे गाड़ रक्खे थे। कुछ काल बाद गोला गोली देखकर काननोरके सोये हुए अधिवासी अकस्मात जाग उठे। कोचीन-राजने कालीकटकी दुर्दशा सुनकर भी नहीं सुनी। वे फिरङ्गी बनियोंके पैशाचिक अत्याचारकी कहानी सुनकर भी सतर्क न हुए। जमोरिनके सिंहासनने उस समय उन्हें मोह-मुग्ध कर रक्खा था। नीयत ख़राब होनेसे कोई क्या कर सकता है?

मालाबार और अरबोंका खौलता हुआ शाप सिर पर लेकर, फिरङ्गी डीगामा लिस्बनको तो लौटे; किन्तु उनके स्थान पर जो फिरङ्गी कर्त्ता बनकर आये, वे भी उनके पद-चिन्हका अनुसरण करनेसे विरत न हुए। यह कहानी आगे कही जायगी।

सोट्रोने बड़ी खुशीसे उनमें आग लगा दी। ढेरके ढेर धुएंने आकाशमें उठकर कालीकटके सिंहासनके तले पुर्त्त-गीज़ोंकी विजय-कहानी विज्ञापित की। बालूमय वेलाभूमि पर खड़े होकर भयसे घबराये हुए अधिवासी—'नेटिव'—लोग देखने लगे, कि समुद्रका हृदय आगसे घिर गया है। हर तरङ्गके सङ्ग मानों एक आगका पहाड़ कालीकटको जलानेके लिये बड़ी तेज़ीसे चला आ रहा है।

प्रतिहिंसा परायण वास्कोडीगामाने तब भी भारतवर्षकी छाया परित्याग न की; वे दल बल सहित कानानोरमें सोट्रो की राह देख रहे थे। सोट्रोसे युद्धकी बात सुनकर, घबराये हुए गामा कानानोरकी कोठीकी खूब रखवारी करने लगे। उन्होंने समझ लिया था, कि बिना सुरक्षित क़िला बनाये भारतवर्षमें पुर्त्तगीज़ोंको जगह नहीं मिलेगी।

खुला खुली क़िला बनानेकी बात-चीत ठीक न होगी, ऐसा जानकर अनेक उपायोंसे कानानोरके राजाको समझा बुझाकर गामाने बहुतसी तोपें, उनके लायक़ गोले और बारूद कानानोरकी कोठीमें रक्खे। लेकिन युद्धका समान उस समयके लिये भूमिमें गाढ़कर रक्खा गया था।

कोटकी क़िलाबन्दी करनेके लिये मज़बूत प्राचीरकी ज़रूरत होती है। इसलिये कानानोरकी कोठीही उस समय फिरङ्गियोंका क़िला हुई। वास्कोडीगामाने कानानोरके राजाको राज़ी करके कोठीके चारों ओर शहर-पनाह

बनवानेकी आज्ञा ले लो। कानानोरके राजाने समझा, कि इसमें हानिही क्या है? कोठीमें जो पुर्त्तगीज़ बनिये वास करेंगे, उनकी जान मालकी रखवारीके लिये कोठी को मज़बूत दीवारसे घेरना बहुतही ज़रूरी है। इन लोगोंके मनमें किसी तरहका छल कपट नहीं है। ये लोग जब यहीं रहेंगे तब तो सब हमारीही प्रजा हैं।' अस्तु, बातकी बातमें कानानोरकी कोठीके चारों ओर पत्थरकी मज़बूत दीवारने सिर उठाया। दीवार होनेसे आने जानेका रास्ता भी चाहिये : इसलिये दीवारमें एक बड़ा भारी दृढ़ फाटक बना। डीगामाने राजाको समझाया, कि उपद्रव करनेवालोंके हाथोंसे बचनेके लिये फाटकका बन्द करनेका भी बन्दोबस्त करना ज़रूरी है। दरवाज़ेकी चाभी हमारेही पास रहा करेगी। हम रोज़ रातमें उसे बन्द करेंगे और सवेरे फिर खोल दिया करेंगे।

वास्कोडीगामा भारतवर्षमें सब दिन रहने नहीं आये थे। स्वदेशवासी जो लोग भारतवर्षमें रहे, उन्हीं सब पुर्त्तगीज़ोंके लिये जहां तक हो सका अच्छा बन्दोबस्त करके संवत् १५५८ ई० सन् १५०२ के एक दिन सवेरे डीगामा सत्य २ ही अपने देशको रवानः हुए। फाटककी चाभी कोठीवालोंके हाथमें रक्खी गई। विन्सेन्टी सोद्रो कप्तान मेजरका पद पाकर, भारत महासागर का कर्त्तभार ग्रहण करके, कालीकटका जहां तक हो सका अनिष्ट करने और सुविधा होनेसे मक्का जानेवाले

मूर जहाज़ोंको लूटनेका अख़्तियार पाकर बड़े भारी कर्म-क्षेत्रमें उतरे।

अपमानित और पीड़ित ज़मोरिन बराबर बदला लेनेका अवसर ढूँढ़ रहे थे। उन्होंने देखा, कि कोचीन-राज त्रिमम-पुरा फिरङ्गी बनियोंके साथ व्यौपारके सम्बन्धमें बँध गया है। यह उनुसे सहा न गया। उन्होंने प्रतिज्ञा की, कि जिस प्रकारसे हो कोचीनके राज्यसे चिर शत्रु फिरङ्गियोंको निकाल बाहर करनाही होगा। मौक़ा समझकर, बनियोंने भी ज़मोरिनको उसकाना शुरु किया। फिरङ्गियोंके अत्याचारने उन लोगोंको उन्मत्त और पागल कर दिया था। त्रिमम-पुराके सभासदोंने इस काल युद्धसे अपनेको अलग रखनेके लिये बहुत चेष्टा की ; पर शरणमें आये हुए फिरङ्गियोंकी रक्षा करनेके लिये दृढ़ प्रतिज्ञ होकर, अन्तमें उन लोगोंने ज़मोरिनके साथ युद्ध करना ही अच्छा समझा।

कोपे हुए ज़मोरिन पचास हज़ार (५००००) सेना लेकर कोचीनके निकटवर्त्ती रेपेलिम द्वीपमें आ पहुँचे। उसी समय सोद्री भी कोचीन आये। फरनान्डेज़ और कोरिया आदि पुर्त्तगीज़ोंने उनसे विनय पूर्व्वक हज़ार अनुरोध किया, पर व्यर्थ। सोद्री अपने युद्ध-जहाज़ और सेना सामन्त लेकर युद्ध के पहिले ही भाग निकले। कोई कहता है, कि ज़मोरिन के भय से और कोई कहता है कि लोहित समुद्र में मूर व्यौपारियों के क़ीमती माल

से भरे हुए जहाज़ोंको लूटकर, स्वयम् धनवान होनेकी इच्छा-से हो, सोद्रो कोचीन-राजकी सहायताके लिये आगे नहीं बढ़े। यहां तक कि अपने प्रजा-देशवासियोंको भी भूल गये।

ज़मोरिनके साथ त्रिमसपुराका भयङ्कर युद्ध आरम्भ हुआ। ज़मोरिनके धन (घूस)के लोभमें आकर, त्रिमसपुराकी सेना-मेंसे बहुतेरोंने ज़मोरिनके झण्डेके नीचे जमा होकर कोचीनके विरुद्ध हथियार उठाये। डोगामाके साथ, दो इटली निवासी भारतवर्षमें आकर, कोचीनमें पुर्त्तगीज़ोंके साथ वास करते थे। उन लोगोंने भी कोचीन-राजका पक्ष परित्याग करके ज़मोरिनका पक्ष ले लिया। त्रिमसपुरा हारकर, कोचीन छोड़, निकटवर्ती विपिन-द्वीपमें भाग गये ; किन्तु भागनेके समय भी शरणागत फिरङ्गियोंको नहीं भूले। ज़मो-रिनने कोचीन तो ले लिया, किन्तु वे विपिन द्वीप पर अधि-कार न कर सके। कोचीनमें कालीकटकी विजय-पताका उड़ने लगी।

इधर लोभी सोद्रो, अपने देशवासियों और मित्र कोचीन-राजकी विपदकी बिल्कुल परवाह न करके, लूट करनेकी इच्छासे, लोहित सागरमें पहुँचे थे ; किन्तु धर्म्मकी आंखोंसे वह सहा न गया ; रास्तेहीमें भयानक तूफान उठा और उनके जहाज़ डूब गये। सोद्रो और उनके भाई विशाल तरङ्गोंके साथ कहाँ बह गये सो किसीने न जाना।

वहां पुर्त्तगालके राज्य सिंहासन पर बैठकर डोम मेनोयल

मूर जहाज़ोंको लूटनेका अख़्तियार पाकर बड़े भारी कर्म-क्षेत्रमें उतरे।

अपमानित और पीड़ित ज़मोरिन बराबर बदला लेनेका अवसर ढूँढ़ रहे थे। उन्होंने देखा, कि कोचीन-राज त्रिमम-पुरा फिरङ्गी बनियोंके साथ व्यौपारके सम्बन्धमें बँध गया है। यह उनसे सहा न गया। उन्होंने प्रतिज्ञा की, कि जिस प्रकारसे हो कोचीनके राज्यसे चिर शत्रु फिरङ्गियोंको निकाल बाहर करनाही होगा। मौक़ा समझकर, बनियोंने भी ज़मोरिनको उसकाना शुरु किया। फिरङ्गियोंके अत्याचार ने उन लोगोंको उन्मत्त और पागल कर दिया था। त्रिमम-पुराके सभासदोंने इस काल युद्धसे अपनेको अलग रखनेके लिये बहुत चेष्टा की; पर शरणमें आये हुए फिरङ्गियोंकी रक्षा करनेके लिये दृढ़-प्रतिज्ञ होकर, अन्तमें उन लोगोंने ज़मोरिनके साथ युद्ध करना ही अच्छा समझा।

कोपे हुए ज़मोरिन पचास हज़ार (५००००) सेना लेकर कोचीनके निकटवर्त्ती रेपेलिम द्वीपमें आ पहुँचे। उसी समय सोद्री भी कोचीन आये। फरनान्डेज़ और कोरिया आदि पुर्त्तगीज़ोंने उनसे विनय पूर्व्वक हज़ार अनुरोध किया, पर व्यर्थ। सोद्री अपने युद्ध-जहाज़ और सेना सामन्त लेकर युद्ध के पहिले ही भाग निकले। कोई कहता है, कि ज़मोरिन के भय से और कोई कहता है कि लोहित समुद्र में मूर व्यौपारियों के क़ीमती माल मसालों

से भरे हुए जहाज़ोंको लूटकर. स्वयम् धनवान होनेकी इच्छा-से हो, सोद्रो कोचीन-राजकी सहायताके लिये आगे नहीं बढ़े। यहां तक कि अपने प्रवासी देशवासियोंको भी भूल गये।

ज़मोरिनके साथ त्रिममपुराका भयङ्कर युद्ध आरम्भ हुआ। ज़मोरिनके धन (घूस) के लोभमें आकर, त्रिममपुराकी सेना-मेंसे बहुतेरोंने ज़मोरिनके झण्डेके नीचे जमा होकर कोचीनके विरुद्ध हथियार उठाये। डोगामाके साथ, दो इटली निवासी भारतवर्षमें आकर, कोचीनमें पुर्त्तगीज़ोंके साथ वास करते थे। उन लोगोंने भी कोचीन-राजका पक्ष परित्याग करके ज़मोरिनका पक्ष ले लिया। त्रिममपुरा हारकर, कोचीन छोड़, निकटवर्ती विपिन-द्वीपमें भाग गये; किन्तु भागनेके समय भी शरणागत फिरङ्गियोंको नहीं भूले। ज़मो-रिनने कोचीन तो ले लिया, किन्तु वे विपिन द्वीप पर अधि-कार न कर सके। कोचीनमें कालीकटकी विजय-पताका उड़ने लगी।

इधर लोभी सोद्रो, अपने देशवासियों और मित्र कोचीन-राजकी विपदकी बिल्कुल परवाह न करके, लूट करनेकी इच्छासे, लोहित सागरमें पहुँचे थे; किन्तु धर्मको आँखोंसे वह सहा न गया; रास्तेहीमें भयानक तूफ़ान उठा और उनके जहाज़ डूब गये। सोद्रो और उनके भाई विशाल तरङ्गोंके साथ कहाँ बह गये सो किसीने न जाना।

वहां पुर्त्तगालके राज्य सिंहासन पर बैठकर डोम मैनोएल

ने (Don Manoel.) विचार किया, कि जब तक ज़मोरिन मूर बनियोंकी सहायता करते रहेंगे तब तक भारतवर्षमें पुर्त्तगालकी प्रतिष्ठा असम्भव है। ज़मोरिनको परास्त करके दलित न कर सकनेसे, वास्कोडीगामाने जो इतने खर्च और मिहनतसे चढ़ाई की है वह बेफ़ायदा और निष्फल हो जायगी और पुर्त्तगालकी आशा पर पानी फिर जायगा। अतएव उनकी आज्ञासे नौ खूब बड़े बड़े नये जहाज़ सजाये गये। अफोन्सोडा अल्बुकर्क और उनके बहनोई फ्रान्सिस्कोडो अल्बुकर्क छः जहाज़ लेकर भारतका माल मसाला लेनेके लिये रवानः हुए और बाकी तीन जहाज़ोंको लेकर अन्टोनियो डासालधाना लोहित सागरमें मक्काके वाणिज्य-शासनके लिये चले।

यहाँ युद्धके अन्तमें कोचीनमें थोड़ी बहुत फौज रखकर, ज़मोरिन कालीकट चले आये थे। सेना भी निश्चिन्त होकर कोचीनमें रहती थी। एक दिन अकस्मात् फ्रान्सिस्कोडा आलबुकर्क वहाँ आ पहुँचे। ज़मोरिनकी सेना फिरङ्गियोंके भयसे इतनी डर गई थी, कि फिर उन लोगोंके आनेकी खबर सुनतेही कोचीन छोड़कर भाग गई।

शरणागत-रक्षक होनेके कारण फ्रांसिस्कोडोने, कोचीन-राजको खूब धन्यवाद दिया और डोम मैनोएलके नामसे १०००० दस हज़ार रुपया उपहार दिया। कोचीन राज बिना मिहनतके अपने सिंहासन पर प्रतिष्ठित हुए।

क्रिमसपुराके सिंहासनपर सुप्रतिष्ठित होनेके बाद, विद्रोही शासन * का समय आया। निकटवर्ती एक द्वीपके राजा ने कोचीनके सिंहासनकी छाया परित्याग करके ज़मोरिनका आश्रय लिया था, इसलिये फिरङ्गियोंकी तलवार खूनकी प्यास मिटाने लगी। मनुष्योंसे भरे हुए गाँवकी अटारियाँ भस्मके स्तूपमें परिणत होकर, फिरङ्गियोंकी वीरता बताने लगीं। फिरङ्गियोंकी चोखी तलवार द्वीपान्तरमें राज-मण्डल के भीतर पहुँच गई। राजपुरी लुट गई; राजाके रक्तने रो रो कर पृथ्वीकी पीठ पर अत्याचारका चित्र लिखा और प्राण-हीन नगर श्मशानके तुल्य हो गया। देखतेही देखते रैपेलिम फिरङ्गियोंके रण कोलाहलसे थर्रा उठा। उस स्थानमें एक दिन ज़मोरिनकी छावनी मुकर्रर की गई थी; इसीसे रैपेलिमके अधिवासी लोग दलके दल मारे जाने लगे। रैपेलिमके राजकुमार बड़ी बहादुरीसे युद्ध करके पराजित हुए। उनकी सेनाके वीर सिपाहियोंने शत्रुकी तलवार और तोपोंसे निहत होकर और किसी किसीने समुद्रके पेटमें कूद कर प्राण छोड़ा। वह समृद्धिशाली स्थान क्षण भरमें भस्मके स्तूपमें परिणत होकर, ठण्डी ठण्डी हवाके स्पर्शसे, समुद्र-गर्भमें उड़ गया।

पुर्त्तगीज़ोंकी मित्रता और वीरतासे कोचीन-राज बड़े

---

* विद्रोही-शासन = बैरियोंको सज़ा देना।

प्रसन्न हुए। फिरङ्गियोंने यह बात नहीं समझी सो नहीं, वास्कोडीगामा एक दिन जिसका सूत्रपात कर गये थे, आज फ्रान्सिस्कोडी आलबुकर्क उसीको पूरी प्रतिष्ठा करनेका शुभ मुहूर्त खोजने लगे। उन्होंने समय जानकर, एक दिन त्रिमम्पुराके निकट प्रस्ताव किया, कि कोचीनको रक्षा करनेके लिये एक दुर्ग बनानेकी बड़ी आवश्यकता है। दुर्ग बननेसे राजका भी भला होगा और पुर्त्तगीज़ कोठीवालोंको भी सुविधा होगी; किन्तु कोचीन-राजका विशेष भला होगा। कारण जमोरिन यदि शत्रुतावश किसी दिन कोचीन पर आक्रमण करेंगे; तोभी कुछ भयका कारण नहीं रहेगा। त्रिमम्पुरा जिन्होंने उनके अनुग्रहसे अपना राज्य-सिंहासन यहाँ तक कि जीवन भी पाया था उनका अनुरोध टाल न सके। टालनेकी उनकी इच्छा भी न हुई। ऐसे हितैषी बन्धुका किसी तरह अविश्वास करनेका उस समय कोई कारण न था। उन्होंने खुशीके साथ दुर्ग बनानेकी अनुमति दे दी और खर्च बर्च भी अपने पाससे देनेकी हामी भरी।

शीघ्रही एक अच्छा ऊँचा स्थान फिरङ्गियोंकी राय से ठीक किया गया। राजा की आज्ञा से हज़ारों मनुष्य दुर्ग बनाने में सहायता करने लगे। फिरङ्गियोंने भी जहाँतक हो सका चेष्टा करनेमें त्रुटि नहीं की। उन लोगोंके उत्साह और एकाग्र चेष्टा से तथा सर्वसाधारण और राजा की सहायतासे थोड़े ही समय में भारतवर्षमें फिरङ्गियोंका पहिला पत्थरका क़िला तैयार हो गया।

भारत में पुर्त्तगीज़ों के अधिकार जमाने की उस प्रथम सीढ़ी को फिरङ्गी लोग बड़ी आशा और बड़े आनन्द से देखने लगे। भारत महासागर की नीली, फेनदार तरङ्गों की लहरों से स्नूपमान होकर वह नया शिला-दुर्ग शक्ति और दृढ़ता तथा बुद्धि और कार्य्य कुशलता की अनन्तमूर्ति की तरह इमैनुयेल का पवित्र नाम लेकर "मैनोयेल" के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

रेपेलिम द्वीप का एक भाग नाश करके भी फिरङ्गी लोग शान्त न हो सके। थोड़े ही दिनों में रेपेलिम के राजकुमार के अन्यान्य नगर और ग्राम आदि पर आक्रमण करके उन लोगों ने हज़ारों निरपराध नगरवासियों को निहत किया। यह खबर जब नायरों के पास पहुंची तब ६००० हज़ार नायर लोग प्राण देने का प्रण करके फिरङ्गियों को बाधा देने के लिये तैयार हुए*।

नायर जाति समर में दुर्द्धर्ष थी। उन लोगों ने बड़ी बहादुरी से फिरङ्गियों का सामना किया। समर पटु सुदृढ़ हाथों में तेज़धार वाली चोखी तलवार लेकर नायर लोग स्वदेश और स्वजनोंके लिये निडर होकर लड़ने लगे। फिरङ्गी

---

* एक विख्यात इतिहासिक लिखते हैं :—The report of this attack soon spread and the whole country rose in arms to expel the invaders, while above 6000 Nairs hastened to the assistance of their country men. They attacked the Portuguese

बनियों को समझ पड़ा कि इस देश में भी योडा हैं, यहाँ भी वीरता है और इस देश में भी रणकौशल वर्त्तमान है। वे लोग ज्यादा देर तक न ठहर सके। नायरों के आक्रमण से पीछे हट कर उन लोगों ने निकटवर्त्ती नदी का आश्रय ग्रहण किया और अन्त में किसी तरह कोचिन में लौट कर प्राण बचाया। यदि अलबुकर्क समय पर सहायता न करते तो कदाचित् सबके सब मारे जाते।

उस दिन तो पुर्त्तगीज़ लोग हट गये किन्तु दूसरे दिन शाम को फिर युड उपस्थित हुआ। रात भर युड करने के बाद फिरङ्गी लोग कई एक ग्राम जला कर खूब सवेरे कम्बलम् द्वीप में जा पहुंचे। कम्बलम् में ७०० सात सौ अधिवासियों के तप्त शोणित से दम भर में समुद्र का जल लाल हो गया। फिरङ्गियों ने उसके बाद उन्मत्त, खून के प्यासे जमोरिन से शत्रुता करने की प्रतिज्ञा की। कम्बलम् को भस्म करके वे लोग खून से तरबतर नंगी तलवारें हाथों में लेकर जमोरिन के राज्य में धँस गये और जो कुछ सामने मिला उसी को ध्वंश करने लगे।

---

with so much fury that they forced them to retreat and drove them back to the river. In this retreat Duitate Pacheco had a narrow escape of being cut off; he would probably have been taken or killed, had not Albuquerque gone to his aid.

सन्मुख समर में अकृतकार्य्य हो कर ज़मोरिन ने मूर बनियों के सहित कौशल का आश्रय ग्रहण किया। उन्होंने विचारा कि फिरङ्गी लोग नाना प्रकार का माल मसाला लेने के लिये ही भारत में आये हैं यदि वह सब सामग्री न पावेंगे तो आप ही मालावार को परित्याग करके चले जायेंगे। इधर ज़मोरिन इसी का उपाय रचने लगे किन्तु कौशली आल-बुकर्क कुइलन की रानी के राज्य में दो जहाज़ मसाला इकट्ठा करके जहाज़ में लदवाने लगे। रानी के मन्त्री लोग उनको अनेक प्रकार से सम्मानित और सन्तुष्ट करने लगे। अन्तमें कुइलन में एक कोठी बनाने की आज्ञा दे दी। कुइलन में मूरों के सिवाय और कोई विदेशी व्यौपारी नहीं था। इसीसे अलबुकर्क को सब विषयों में इतना सुभीता हुआ था।

कुइलन-राज्य से फिरङ्गियों को निकाल बाहर करने के लिये ज़मोरिन कुइलन की रानी से बार बार अनुरोध करने लगे, किन्तु कुछ फल न हुआ। रानी ने उत्तर दिया:- "फिरङ्गी लोग हमारे राज्य में आकर कोई अत्याचार नहीं करते, हमारी किसी प्रजा से भी छेड़ छाड़ नहीं करते फिर हम उनके साथ क्यों शत्रुता करें।" जो हो, अन्तमें फिरङ्गियों के साथ ज़मोरिन की एक सन्धि हुई, किन्तु फिरङ्गियों के अन्याय करने से वह सन्धि थोड़े ही दिनों बाद भङ्ग हो गई।

जिस भारतवर्ष के भीतर आने की इच्छा करनेवाले अनेक

वीरों का हृदय एक दिन दूर से ही देखकर काँपने लगता था, अब वही पुर्त्तगालवासी धीरे धीरे राज्य जमाने लगे। अफोन्सोडा अलबुकर्क और उनके बह्निनोई ने भारतवर्ष में पुर्त्तगीज़ों की प्रधानता की रक्षा और विस्तार का सम्पूर्ण आयोजन किया। इधर अण्टोनियों सालधाना ने अफ्रिका की पूर्व सीमा को लूटने और जलाने में लगे रहकर लोहित सागर से मुसलमानों के साथ मिस्र का वाणिज्य-सम्बन्ध तोड़ देने का पथ साफ़ किया। समुद्रतीर के बड़े बड़े ज़िमींदारों के साथ अलबुकर्क की सन्धि हो गई और उसमें सेन्ट-टामस ख्रष्टानों का पूर्व प्रचलित सुविधा सुयोग सब स्थिर रहा। कुइलन की दीवानी और फ़ौजदारी की विधिव्यवस्था पर उस देश के ख्रष्टानों का सम्पूर्ण अधिकार रहा। कोचिन के शिलादुर्ग ने फिरङ्गियों की विजय घोषणा करके गर्व के साथ सिर उठाया। इसके पहिले डीगामा के शिष्य सोद्री ने माला-बार के किनारों में लूटमार करके पुर्त्तगाल की वाणिज्य तरणि परिपूर्ण कर ली थी।

अफोन्सोडोगामा अलबुकर्क, अधिक दिन भारतवर्ष में रहते, किन्तु किसी कारण वश वे शीघ्र ही देश को लौट गये। एक दिन वास्कोडीगामा ने भारत से लिसबन में पहुंच कर जैसी ख्याति और सम्मान पाया था, अलबुकर्क भी उसी तरह आंखों पर बैठा कर सम्मानित हुये थे। पाँच मन छोटे और आध मन बड़े मोती, एक बहुत बड़ा हीरे का

टुकड़ा तथा एक पारसी और एक अरबी घोड़ा और अन्यान्य द्रव्यादि उपहार की तरह लेकर जब अलबुकर्क लिसबन नगर में उपस्थित हुये तब चारों ओर आनन्द का डङ्का बजने लगा।

यहां ज़मोरिन पुर्त्तगीज़ों का अत्याचार भूले नहीं; अफोन्सो के भारत से जाने के बाद ही वे मालावार के अन्यान्य राजाओं से मिलकर कोचिन के पुर्त्तगीज़ों को निकाल बाहर करने की चेष्टा करने लगे। २८० दो सौ अस्सी युद्ध जहाज़ अस्त्र शस्त्र से सुसज्जित हुए। ३८२ तीन सौ बयासी तोपें और सब मिलाकर प्रायः ५०,००० पचास हज़ार सेना के सहित ज़मोरिन युद्ध करने चले। पुर्त्तगीज़ों के सरदार दुरातट पैचेको (Durtate Pacheco) ने कोचिन राज्य का सेनापतित्व ग्रहण किया। पुर्त्तगीज़ और देशी सब समेत उनकी सेना की संख्या केवल ५०० पांच सौ थी।

पांच मास तक घोर युद्ध हुआ। उसकी कहानी यहां पर न कही जायगी। ज़मोरिन ने बहुत सी पीतल की तोपें तैयार करायीं किन्तु वे पुर्त्तगीज़ों से युद्ध में पार न पा सके। पुर्त्तगीज़ बनियों की प्रतिष्ठा भारत के भाग्य में अग्नि के अक्षरों से लिखी हुई थी। इसी से मालावार के सम्मिलित राजाओं की शक्ति ने भी पुर्त्तगीज़ों की वीरता से हार मान ली। उन लोगों का उत्साह और उद्यम सभी व्यर्थ हुआ; अत के इनके दो एक स्वजनद्रोही, खलस्वभाव, दुरात्माओं को

(घूस) से वश में करके शत्रु के भोजन में खूब तेज़ विष मिलाने की चेष्टा भी शेष में निष्फल हो गई।

बारम्बार परास्त होकर ज़मोरिन की सेना पीछे हट गई। अन्त में १९००० उन्नीस हज़ार सेना के जीवन प्रण पर ज़मोरिन कोचिन-राज्य से सन्धि करने को वाध्य हुए। वहां लिसबन् के राजसिंहासन पर बैठे पुर्त्तगालके राजाने विचार किया कि भारत के एक राजा के साथ दूसरे भारत के ही राजा का युद्ध करा देने से भारत में पुर्त्तगीज़ों की प्रतिष्ठा का पथ सुगम हो जायगा; और एक दल यूरुपीय सेना तैयार करके उनका अनुकरण करने के लिये यूरुपीय सेनापति के नेतृत्व में भारतवर्ष की सेनाओं को शिक्षा देने से भारत में पुर्त्तगीज़ों की शक्ति चिर प्रतिष्ठित और अजय हो जायगी। अतएव नरपति इमैनुयेल ने शीघ्र ही खूब बड़े बड़े तरह जहाज़ों के साथ १२०० बारह सौ सेना भेजी। लोपो-सोआरेज़ उस सेना का नेतृत्व भार ग्रहण कर के भारतवर्ष में आये।

जिस बन्दर में अरबी बनियों की विशेष उन्नति देख पड़ने लगी, सोआरेज भारत में आकर उसी बन्दर को एक दम ध्वंश करने लगे। जितने पुर्त्तगीज़ बनिये आगे से कालीकट में बन्दी थे और जिन दो एक मिलनीज़ों ने साम्प्रति ज़मोरिन का आश्रय ग्रहण किया था, सोआरेज ने उन सभोंको छोड़ देने को कहा। ज़मोरिन सोआरेज़ के पहिले प्रस्ताव में तो

सहमत हुये, किन्तु वे शरणागत दोनों मिल्लनोज़ों को पुर्त्त-गीज़ों के मुंह में धर देने को प्रस्तुत न हुए। इस प्रत्युत्तर से सोआरिज के आत्माभिमान में बड़ा धक्का लगा। उन्होंने तुरन्त कालीकट पर आग बर्षाना आरम्भ कर दिया। कालीकट का ध्वंश कार्य्य दो दिन तक चलता रहा। कालीकट ध्वंश कर के पुर्त्तगीज़ सेनापतिने निरपराध क्रांगानोर पर दृष्टि छोड़ाई। क्षण भर में क्रांगानोर और उसके बन्दर के समस्त युद्ध जहाज़ भस्मीभूत् हो गये। यहूदी और मूरोंके उपासना मन्दिर भी लुट गये।

बुद्धिमान, ऐश्वर्य्यशाली अरबी बनियों ने तब खूब समझ लिया कि, 'भारतवर्षमें अब हम लोगों को स्थान न मिलेगा।' भारत उपकूल के शक्तिशाली राजा लोग भी पुर्त्तगीज़ों के अत्याचार से उन लोगों की रक्षा करने में असमर्थ हुए। अत-एव उन लोगोंने एक दिन अपना अपना धन व माल जहाज़ में भर कर मिश्र का रास्ता पकड़ा। सोआरिज् का शिकार निकल जाने पर उन्होंने मूरों पर आक्रमण किया और २७ सत्ताईस वाणिज्य तरणियाँ लूट लीं। २००० दो हज़ार मूर बनियों ने नितान्त निर्दयता से निहत हो कर समुद्र के शीतल गर्भ में स्थान लिया। चारों दिशाओं को चिता के धूए से छा कर लोपो सोआरिज गौरव के साथ लिसबन को लौट गये।

अनेक अत्याचार सहन करके अनेक प्राणों की बलि देके और बहुत धन नष्ट करके अन्तमें महा समृद्धिशालिनी काली-

कट नगरी के चिताभस्म पर खड़े होकर ज़मोरिन विचारने लगे कि अरवियों के बहकाने से फिरङ्गी व्योपारियों के साथ इतने दिनों तक युद्ध करके क्या फल पाया। मोआरेज ने शक्तिशाली मूरों का नाशकर दिया। उन्हीं के साथ ज़मोरिन की सब आशा भारत महासागर की चञ्चल तरङ्ग माला की तरह उसी अगाध और असीम समुद्र में मिलगई। जमोरिन ने तो उन्हीं लोगों के साहस पर निर्भर करके आशा का सुवर्ण मन्दिर बनाया था—उन्हीं लोगों की सहायता और उन्हीं लोगों के धन से समुद्र तीर पर एकाधिपत्य लाभ किया था और उन्हीं लोगों के गौरव से गौरवान्वित होकर आप 'सामुरि' के नाम से ख्यात हुये थे। इतने दिनों बाद अब मालावार तीर का अरब के वाणिज्य का दृढ़ प्रतिष्ठित कनक सिंहासन पुर्त्तगीज़ों की विजय वीरता से चूरचूर होकर विलुप्त हो गया। केवल शोक, सन्ताप, विनष्ट गौरव और हृत सर्व्वस्व मालावार की 'हाय! हाय!' रोने की ध्वनि ने समुद्र की अनन्त तरङ्गों के हाहाकार में मिल कर पुर्त्तगीज़ों के अत्याचार की कहानी को जाग्रत रक्खा और फेन से परिपूर्ण वेलाभूमि ने उन घायल और कतल किये हुये भारतवासियों के गरम गरम खून से रङ्ग कर पुर्त्तगीज़ों के इतिहास में लाल अक्षरों से लिख रक्खा:—

"Ask me, and I shall give thee the heathen for thine inheritence, and uttermost parts of the earth for thy possession. Thou shalt break them with a rod of iron; thou shalt dash them in pieces like a potter's vessels."

दसवा अध्याय।

शूरवीर नर प्रतिदिन प्रतिछिन,
करते जाते काम बड़ा।
लगातार वे धुनमें रहते,
चाहे कारज होय कड़ा॥

हरिदास माणिक।

बाहुबलसे व्योपार फैलानेकी कहानी इतिहासमें नई नहीं है; किन्तु पुर्त्तगीज़ बनियोंने शक्ति-मन्त्र-द्वारा जितनी शीघ्रतासे भारतमें वाणिज्य करनेका अधिकार प्राप्त किया था और जितनी शीघ्रतासे सुप्रतिष्ठित होकर पाश्चात्य जगत्को विस्मित किया था, इतिहासमें उसकी तुलना सहजमें नहीं मिलती। आविष्कारके सम्मोहन युगमें पुर्त्तगालके दृढ़ प्रतिज्ञ राजाका आशीर्व्वाद, उन्मत्त आकांक्षाको लेकर, चञ्चल चरणोंसे चारों ओर फिर रहा था। केवल मुसल्मान व्योपारी ही नहीं, भूमध्यके विदेशी व्योपारियोंने भी एक दिन बड़े २

नेत्रोंसे देखा कि, लोहित समुद्रका पथ बन्द करके महाशक्ति-शाली पुर्त्तगीज़ बनिये भीषण अग्नि पर्वतकी तरह खड़े हैं। उस पर्व्वत को लाँघकर प्रतीच्यके सुवर्ण-पथमें अग्रसर होना अब असम्भव है।

उन दिनों भारतका माल मसाला लाकर मूर लोग खम्बात् अरमुज़ और अदन प्रभृति स्थानोंमें आकर व्यौपार करते थे और अरमुज़से भारतका माल बोझ करके विदेशी लोग, पारस्य उपसागरके रास्ते से, बसोरा नगरमें ले जाते थे। बसोरा उस समय महा समृद्धिशाली नगर था। वही सब माल बसोरासे स्थलकी राह आरमेनिया, त्रिविज़न्ड, तातार, एलेपो, डमस्कस् और भूमध्य सागरके तीरवर्त्ती वेरूढ़ नामक बन्दरमें लाया जाता था। यूरोपीय बनिये वहाँ पर जहाज़ लेकर अपेक्षा किया करते थे; माल पहुँचतेही तुरन्त वे लोग भारतवर्षका माल लेकर अपने देशको चले जाते थे। जितनी सामग्री अदनमें लाई जाती थी, वह सब लोहित सागरके पथसे टोरी किम्बा सुएज़के निकट होकर कैरो नगरका चरण छूकर, नीलनद पार करके, अलेकज़न्ड्रियामें आती थीं। अलेकज़न्ड्रिया उस समय एक बड़ा भारी बन्दर था। वहाँ विदेशी व्यौपारी भारतका सोना लेनेके लिये बड़े आनन्दसे अपेक्षा किया करते थे; उसीसे वेरूढ़की तरह अलेकज़न्ड्रियासे भी भारतका माल मसाला सुदूर यूरोपमें पहुँचाया जाता और वहाँ ऊँचे दरसे बिक्री होता था।

कोई पुर्त्तगीज़ व्योपारी उस समय तक भारतवर्षमें स्थाई रूपसे वास नहीं करता था। जो जब कार्य्यका भार लेकर, सैन्य सामन्तके सहित लूट मार करनेके उद्देश्यसे, भारतमें आता था, वह अपना कार्य्य सम्पादन करके दो चार वर्षमें अपने देशको लौट जाता था। स्वदेश भक्त पुर्त्तगीज़ सरदारों मेंसे कोई कोई जब बारम्बार राजासे आवेदन करने लगे कि, भारतवर्षमें एक स्थाई प्रवासी पुर्त्तगीज़ सरदार रहना चाहिये; नहीं तो सब परिश्रम व्यर्थ हो जायगा; तब राजा मैन्युएल पुर्त्तगीज़ शक्तिको अक्षय बनानेकी व्यवस्था करने लगे।

पुर्त्तगालकी प्रतिष्ठासे वेनिसियन लोग शीघ्रही समझ गये कि उन लोगोंका व्योपार दिन दिन कम होता जाता है। बहुत दिन पहले उन लोगोंने जिस बातकी आशङ्का की थी अब वह सत्य होने लगी। अस्तु, वे लोग अब चुप न रह सके; कैरोका राज सिंहासन भी अब काँपने लगा। पुर्त्तगीज़ोंका आधिपत्य दिन दिन बढ़ता देखकर सुलतान बहुतही डरते थे, कारण भारतके धनसेही उस समय मिश्रमें गुलछर्रे उड़ रहे थे। पुर्त्तगीज़ बनियोंको, एकाएकी समुद्रमें से निकल कर, भयङ्कर दैत्यकी तरह, समृद्धिको ग्रास करते हुए देखकर, सुलतानका सिंहासन जो एकदम डगमगाने लगा उसमें आश्चर्य्य ही क्या है? सुलतानने उसीसे इस आपदको दूर करनेके लिये घोषणा की कि भारतवर्षके व्योपारमें एक मात्र उन्हींका अधिकार है और यह अधिकार आजका

नहीं सहाये है। पुर्त्तगालने बिलकुल अन्याय करके इस चिरायत अधिकारमें हस्तक्षेप किया है। पुर्त्तगाल यदि अलग न होगा तो वे शीघ्रही उसका प्रतिशोध लेंगे। मिस्र, सीरिया और पैलेसताइन वासी क्रस्तानोंके रक्तसे पृथ्वी रँग दी जायगी ; सुलतान किसीको क्षमा न करेंगे। केवल यही नहीं, प्रतिहिंसाकी भयङ्कर अग्निमें क्रस्तानराजका उपासना-मन्दिर भी भस्मीभूत हो जायगा। यारुशालमका पुण्य मन्दिर चूर चूर करके, सुलतान मिस्रकी शक्तिको मिस्रके उचित अधिकारसे सुप्रतिष्ठित करेंगे।

इस भयङ्कर प्रतिशोधकी बात सुनकर धर्मके पण्डा 'पोप' बहुत घबराये, पर मैन्युएलने अविचलित हृदयसे निःसंशय होकर पोपके निकट संवाद भेजा—"अलग होना असम्भव है।" उन्होंने यह भी कहा—"पुर्त्तगालकी शक्ति पोपका अधिकार और राज्य बढ़ानेके लियेही नियोजित हुई है और पुर्त्तगालके वीर लोग स्वदेश और स्वजनोंको त्याग कर ईसाकी महिमाका प्रचार करनेके लियेही प्राणहारी प्रतीच्यके अभियानमें नियुक्त हुए हैं। प्रतीच्यमें पुर्त्तगालकी प्रतिष्ठाका और कोई कारण नहीं है। अतएव मुसलमानी शक्तिका सत्यानाश करनेके आयोजनसे मैन्युएल किसी तरह निवृत्त नहीं हो सकते।"

इधर जब सुलतानने देखा कि, उनके भय दिखानेसे कुछ फल न हुआ, तब वे भी युद्धके आयोजनमें लग गये।

विनिसीयोंने युद्ध-जहाज़ बनानेके लिये उनसे अनुरोध किया। मिश्रमें युद्ध-जहाज़ बनानेके लायक़ काठ नहीं था, इससे वे लोग डालमेटियाके वनसे काठ मंगाने लगे। सुलतानकी आज्ञासे भारी भारी पुराने वृक्ष कटने लगे। डालमेटियाका घना वन देखतेही देखते साफ़ हो गया। बड़े बड़े कारीगरोंने आकर सुएज़ बन्दरमें अस्थाई कारखाने स्थापन किये, कारण कटे हुए वृक्ष पानीमें तैराकर सुएज़ बन्दरमेंही लाये जाते थे। अन्तमें सुदक्ष कारीगरोंने वहां भारी भारी युद्ध-जहाज़ प्रस्तुत करना आरम्भ कर दिया।

यहां राजा मैन्युएल भी सुलतानके साथ युद्ध करनेका आयोजन करने लगे। उनका असीम उत्साह और कर्म कुशलता, मुसल्मानी वाणिज्यकी मर्य्यादाके लिये विलुप्त कर देनेके लिये उन्हें व्यस्त करने लगी। मैन्युएलने देखा कि, अदन अरमुज़ और मलक्काको वशमें करनेके सिवाय मुसल्मानी वाणिज्यकी तीव्र धाराको रोकनेका और कोई उपाय नहीं है। अतएव शीघ्र ही 'डाम फ्रांसिस्कोडा आलमिदा' नामक एक पुर्त्तगीज़, पुर्त्तगाल-राजके प्रतिनिधि बनाकर भारतवर्षमें भेजे गये। अंजद्वीप, कानानोर, कोचीन और कुइलनमें सुदृढ़ दुर्ग बनानेकी आज्ञा पाकर आल्मिदा पचीस जहाज़ और १५०० पन्द्रह सौ सेना लेकर लिस्बनसे रवान: हुए।

आलमिदा ही भारतके प्रथम क़स्तानी प्रतिनिधि थे। भारतमें पुर्त्तगालकी प्रतिष्ठाके लिये उन्होंने भारतवर्षमें

स्थाई भावसे रहनेका आदेश पाया था। आलमिदाने कुइ-लोआ द्वीपमें एक सुरक्षित किला बनाया और मोम्बासाके तीर पर उस देशके अधिवासियोंके जहाज़ोंको जलाकर मोम्बासा को अपने आधीन कर लिया। महलोंसे सुशोभित सुन्दर नगर क्षण भरमें भस्म-स्तूपमें परिणत होकर आलमिदाका प्रताप जताने लगा। पुर्त्तगीज़ोंके आक्रमणसे राज-महल चूर चूर हो गया। भारत महासागरमें पहरा देनेके लिये कई एक पुर्त्तगीज़ोंको रखकर, आलमिदा पुर्त्तगीज़ोंका वाणिज्य केन्द्र सुरक्षित करके मालाबार उपकूलमें मुसलमानोंका वाणिज्य नष्ट करने और भारत महासागरमें मुसलमानी शक्तिको सर्व्वदाके लिये डुबा देनेके उद्देश्यसे निर्भय होकर आगे बढ़े।

अँज द्वीपमें पुर्त्तगीज़ोंका किला बना। अँजमें उन लोगों की धूलि न पड़ते पड़ते ही ग्रामकी बस्ती भस्मीभूत हो गयी। तीर परके व्योपारी जहाज़ोंका अग्नि संस्कार हो गया। अँज-का विनाश करके आलमिदा कानानोर पहुँचे। वहाँ भी तुरन्त एक किला तैयार हो गया। विजयनगरके राजा नरसिंह राव उस समय दक्षिण भारतके सर्व्वमय कर्त्ता थे। उन्होंने पुर्त्तगालके अधिपति आलमिदा की मुलाक़ात से कृतार्थ होकर राजा मैन्युएलके पुत्रके साथ अपनी कन्याके विवाहका प्रस्ताव करके पुर्त्तगीज़ोंको सन्तुष्ट किया।

पुर्त्तगीज़ोंको धीरे धीरे सुप्रतिष्ठित होते देख कालीकट के ज़मोरिन भी सुलतानके साथ मिल गये और छिपी

रीतिसे युद्धका बन्दोबस्त होने लगा। किन्तु ब्रह्माका लिखा कौन मेट सकता है? एक प्रवासी पुर्त्तगीज़ने मुसलमानी फ़क़ीरका वेश धरके, ज़मोरिनके राज्यमें घुस, युद्धका सब हाल चाल मालूम कर लिया। ज़मोरिनका भाग्य फूटा! अन्तमें पुर्त्तगीज़ बनियोंकी प्रबल शक्तिने ज़मोरिनके जी जानसे लगकर किये हुए उद्यमको व्यर्थ कर दिया। पुर्त्तगी-ज़ोंका प्रताप, तीन हज़ार मुसल्मानोंके खूनसे समुद्रका जल रँगकर, विजय-गौरवसे गर्ज्जने लगा। मालाबारमें मुसल्मा-नोंका वाणिज्य दम भरमें विलुप्त हो गया। कूशने कुरान को पराजित करके अन्तमें चार वर्षके बाद खूनसे सिंची हुई पृथ्वीके नीचे आत्म-संस्थापन किया।

मूर बनिये आलमिदाके आनेके पहिले तक आशा और साहससे छातीको बाँधकर मालाबारके तीर पर व्यौपार करते थे। आगेकी बात स्मरण करके, वे लोग कदाचित तब तक यही समझते थे कि पुर्त्तगीज़ डाकू जैसे समय समय पर लूट मार करनेके लिये इस देशमें आते हैं वैसेही कभी कभी आया करेंगे। इस लिये डाकुओंके भयसे सर्वदाके लिए रत्नोंका घर छोड़कर भाग जाना व्यर्थ है, वरन उनके आने पर कुछ काल सतर्क रहनेसेही बनेगा। किन्तु अब उन लोगोंको समझ पड़ा कि पुर्त्तगीज़ लोग केवल लूटनाही नहीं चाहते, वे मुस-लमानोंको जड़से उखाड़ देना चाहते हैं। पुर्त्तगीज़ोंका वज्र क्षण भरके लिये नहीं है—वह ब्रह्माके अभिशापकी तरह

अबसे सर्वदा उन लोगोंके साथ साथ फिरा करेगा। उस अभिशापकी अग्निसे मुसल्मान बनियोंका अब निस्तार नहीं है। अब उन लोगोंने अच्छी तरह समझ लिया कि मालाबार उपकूल उन लोगोंके लिये विपज्जनक हो गया। मालाबारमें अब अकण्टक मुसल्मानी वाणिज्य की आशा नहीं है; वरन मालाबारको काया तक छूनेसे पुर्त्तगीज़ोंके हाथसे लुन्ठित, विध्वस्त और विदग्ध होना पड़ेगा। अतएव वे लोग भारत उपकूलसे बहुत दूर होकर सुमात्रा और मलक्कामें आने जाने लगे। राज-प्रतिनिधि आलमिदाके समुद्री पहरेदार यह सम्वाद पातेही जहाज़ लेकर मूरोंका नाश करनेके लिये आगे बढ़े।

कमला जब कृपादृष्टिसे देखती है तब महा विपद्के मूल और महा सर्वनाशमें भी सौभाग्य छिपा रहता है। पुर्त्तगीज़ लोग जब मूरोंके सुमात्रा और मलक्काके वाणिज्य-पथको भी सर्वदाके लिए बन्द करनेको तैयार हुए, तब ईश्वरसे सहा न गया। एकाएकी बड़े ज़ोरसे आँधी उठी और उन लोगोंको रास्ता भुलाकर कुपथमें ले चली। तूफान और तरङ्गोंसे बहते बहते पुर्त्तगीज़ोंके जहाज़ एक दिन प्रातः कालके समय एक अनाविष्कृत नये तीर पर आ लगे। पुर्त्तगीज़ोंने चकित होकर देखा कि, यहाँ पर भी मूर बनियोंकी कमी नहीं है।

इतनी दूर सिंहल तक पुर्त्तगीज़ डाकुओंकी पहुँच देखकर भीत मूर लोग कोई तो भागने लगे और किसी किसीने

नाना प्रकारके बहुमूल्य उपहार देकर उन्हें प्रसन्न करके आत्म-रक्षा की। सिंहलके राजाने शीघ्रही पुर्त्तगीज़ोंके साथ मित्रता कर ली। इस नये अदृष्टपूर्व्व आकस्मिक आविष्कारसे प्रसन्न होकर आल्मिदाके पुत्र डमलरिस्को कोलम्बो नगरमें क्रूस स्थापन करके कोचीनकी ओर बढ़े। रास्तेमें कुइलन-राजका विरजम् नगर जलाकर, उन्होंने पुर्त्तगीज़ोंके खून बहाने का बदला लिया।

ज़मोरिन दिन दिन बलहीन होते जाते थे। उनकी जो अप्रमेय शक्ति एक दिन दक्षिण भारतमें वाणिज्य शासन करती थी, उसको अब बराबर शिथिल और वीर्यहीन होते देखकर उन्होंने डिउ नगरके राजा मलिक अजको पुर्त्तगीज़ोंका नाश करनेके लिये निमन्त्रित किया; किन्तु पुर्त्तगीज़ोंके साथ शक्तिकी परीक्षामें विजय लाभ करना दुराशा समझ, मलिक अज ज़मोरिनके प्रस्तावका प्रत्युत्तर करनेको बाध्य हुए। इधर आलमिदाकी कर्ण-गुहामें वह गुप्त आमन्त्रणाकी बात प्रति-ध्वनित हो गई। डमलरिस्कोने तुरन्त युद्धके लिये यात्रा की और गनकालोवाज़ नामक एक पुर्त्तगीज़ सेनापति राज-प्रति-निधिके पुत्रकी सहायताके लिये कानानोरसे रवानः हुए।

आल्मिदा की कर्म कुशलता से उस समय कोचीन और कानानोर में रहनेवाले पुर्त्तगीज़ सरदारों में से किसी एक मनुष्यके स्वाचरित अनुमति-पत्रके बिना इस देश का कोई व्योपारी आ जा नहीं सकता था।

कानानोरसे चलकर गनकालोने देखा कि पासही समुद्रमें एक मूरोंका व्यवसायी जहाज़ माल लेकर चला आ रहा है। उन्होंने उसके जानेका रास्ता रोक दिया। भीत मल्लाह लोग झटपट दिखाने लगे कि वे लोग बिना अनुमति-पत्रके नहीं जा रहे हैं, लोरेङ्कोडाब्रिटा नामक पुर्त्तगीज़ सरदारका स्वाक्षरित अनुमति-पत्र उनके साथ है। गनकालोने वह पत्र देख कर विचार किया कि यह निश्चय ही जाल है, कभी सत्य नहीं है। बस फिर क्या था, क्षण भरमें मूर बनिये कैद कर लिये गये। पुर्त्तगीज़ोंने उन निर्दोषी कैदियोंको तुरन्त जहाज़के पालमें लपेट कर अच्छी तरह सिलाई की कि जिसमें कोई निकल न जाय और उसके बाद उन लोगोंको लहराते हुए समुद्रके अथाह गर्भमें डालकर रास्ता पकड़ा !! इस अत्याचारमें पुर्त्तगीज़ोंके देवताओंने भी, जान पड़ता है, गनकालोकी ओर देखकर आँखें बन्द कर ली थीं !!

इस देशके अन्धे और अविश्वासी अधिवासियोंका रक्तपात करने और उनका विनाश करनेमें पुर्त्तगीज़ोंको कुछ दोष नहीं देख पड़ता था।

कई वर्ष पहिले सरदार कैवरेल जब बारह सौ १२०० सैना लेकर भारतवर्षको चले थे, तब मैन्युएलने उनके साथ धर्म-याजक भी भेजा था। पुर्त्तगीज़ोंकी भारत पर चढ़ाई उस समय धर्म-युद्धकी तरह समझी जाती थी। पुर्त्तगालके राजाने कैवरेलसे कह दिया था कि मुसलमान और मूर्त्ति-

पूजकों—हिन्दुओं—पर सत्य २ तलवार हाथमें लेकर आक्रमण करनेके पहिले, उनके पुरोहितोंने कहना कि वे काम आध्यात्मिक तलवारसे अविश्वासियोंको धर्म-पथपर लानेकी चेष्टा करें; पर जो अधर्मी लोग ईसाके सेवक न होना चाहें और व्योपारका पथ रोकें तो बिना सकुचाये अग्नि और कृपाणकी सहायता लेना और अधर्मियोंके साथ काल-युद्धमें भिड़कर उन्हें जानसे मारना!

अब तक सुसभ्य और सुमार्जित यूरोप में "धर्मकी एकतामें सबका अधिकार समान है" यह मन्त्र जीवित देख पड़ता है। उसीसे जो लोग क्रूशके अधिकारी थे, क्रूशके बाहर रहने वाले उनकी छाया तक नहीं छू ने पाते थे; उसीसे क्रूस को ना पसन्द करने वाले अन्योंके साथ धर्म-युद्ध करके पुर्त्त-गीज़ लोग निष्ठुरताकी शेष सीमा तक पहुँच गये थे।

संख्यामें पुर्त्तगीज़ लोग बहुत कम थे, इसीसे अपने उद्देश्य साधनकी सुविधाके लिये वे लोग अपने विरोधियोंको हदसे जियादा दुःख देते थे।

वास्कोडीगामाने भारतवर्षमें दूसरी बार आकर भारतवासियों पर अत्याचार, पुर्त्तगीज़ोंके शासन और राज्य विस्तारकी नीतिका अवश्य पालन करना, अपना मुख्य कर्तव्य समझ लिया था। उसीसे उस समयके पुर्त्तगीज़ोंने डाकुओं और पिशाचोंकी तरह घोर अत्याचार करके इतिहासमें राक्षसोंकी पदवी पायी है; उसीसे वे लोग युद्धके अन्तमें कैद किये हुए

शत्रुओंको बड़ी निठुरतासे हत्या करते थे और शत्रुओंको दिखा कर, उन्हें तोपके मुंह पर रखके, उनके चिथड़े २ उड़ा कर, उन लोगोंको हदसे ज़ियादा कष्ट देनेमें ज़रा भी नहीं हिचकते थे, उन लोगोंके पत्थर समान कठोर हृदयमें ज़रा भी चोट नहीं लगती थी ! !

पुर्त्तगीज़ सिपाही लोग लूट पाटमें लगकर थोड़ेही काल में कार्य्य सम्पन्न कर लेनेके उद्देश्यसे, भीत, कांपती हुई चिल्ला चिल्ला कर रोती हुई, शरीर परके कपड़े खुल जानेसे नङ्गी हो गई, और बालोंको खोले हुए प्राणके भयसे भागती हुई अबलाओंके दोनों हाथ, कान और नाक आदि बड़ी निर्दयतासे काट कर सोनेके कड़े, सोनेके कर्णफूल और सोनेकी नाककी नथुनी आदि बिना सकुचाये नोच लेते थे। एक मनुष्यसे मांगकर लेनेमें या एक मनुष्यकी देह परसे उतार लेनेमें जितनी देर लगती है, तलवारकी सहायतासे उतनीही देरमें पांच मनुष्यका गहना जमा हो जाता है ! इसीसे पुर्त्तगीज़ लोग तलवारसे ही काम लेते थे।

जिस भारतके धन रत्नके लोभसे, सात समुद्र और तेरह नदी पार करके, पुर्त्तगीज़ोंने इस देशमें आकर पहिले राजाके द्वार पर और जहां तहां आदर सम्मान पाया था; उसी देशके अधिकारियोंका हाल बतानेके समय, उस समयके पुर्त्तगीज़सरदारोंने पुर्त्तगालके राजाको लिखा था कि, "इस देशके मनुष्य कुत्ते हैं !! इनकेलिये तेज़ तलवारका बन्दोबस्त होना चाहिये !!"

इतिहास बीती हुई बातोंका जीवित साक्षी है। वही इतिहास काँपते हुए कण्ठसे और थरथराते हुए हृदयसे पुर्त्तगीज़ोंके पाशविक अत्याचारकी कहानी कह रहा है। आज तक डिउ उपनिवेशका निकटवर्ती छोटा सा द्वीप मिटि, "शव द्वीप" के नामसे विख्यात होकर पुर्त्तगीज़ोंके अत्याचारकी कहानीका प्रमाण देता है। मिटि क्या चिर दिन शव का ही द्वीप था? नहीं, ऐसा नहीं, सम्वत् १५८१ में जब पुर्त्तगीज़ोंने मिटि द्वीप पर अधिकार किया था: तब भी वहाँ बालक और जवान स्त्रियोंके खिलखिलाकर हँसनेकी आवाज़ सुख चैनके चिन्हकी तरह वर्तमान थी। विजयी डाकुओंने वहाँके समस्त अधिवासियोंको मारकर, उनके तप्त-शोणितसे तर पृथ्वी पर खड़े होकर, बड़ी खुशी और बड़े गौरवसे मिटि द्वीपका नामकरण किया था "शव द्वीप!!"

डिउ उपनिवेशकी दुर्दशाकी बात स्मरण करनेसे आज भी हृदय काँपने लगता है। पुर्त्तगीज़ोंकी खूनसे रँगी हुई तलवारको देखकर, अनेक छोटे छोटे बालक प्राणके भयसे रोते रोते उन लोगोंके पैरों पड़ते थे; किन्तु निर्दय पुर्त्तगीज़ पिशाचों के हृदयमें ज़रा भी दया नहीं उत्पन्न होती थी; वे लोग बालकों के खूनसे अपने चरणोंको रङ्ग कर बड़े प्रसन्न होते थे और कभी कभी तो वही तेज़ धार की तलवार सबकी सब बालकोंकी माताओंके छातीमें घुसेड़ देते थे। डिउ उपनिवेश पर आक्रमण करनेके समयके सरकारी काग़ज़ पत्रोंमें साफ़ साफ़ लिखा है:—

"हम लोगोंने किसीको नहीं छोड़ा; यहां तक कि स्त्री और बालकोंकी भी हत्या की है।"

इतनी खूना-खूनी पर जिस राज्यकी प्रतिष्ठा होती है उसका सिंहासन कभी न कभी अवश्य टूटता है। तलवारकी चोटसे गला कटवा कर, जीवनकी अन्तिम घड़ीमें अभागे असहाय लोग जब भगवानकी ओर अन्तिमबार देखकर आँखें बन्द कर लेते हैं,—उस समय उनका राज्य-सिंहासन भी डगमगाने लगता है—उनका शाप उस समय और नहीं सोता। बिच्छू काटनेसे जिस तरह मनुष्य चौकन्ना होकर, उसको पकड़ कर मार डालनेके लिये बड़ी बड़ी आँखोंसे पीछा करता है; उसी तरह शाप भी हत्यारोंके पीछे पीछे छिपकर आँख खोले फिरता रहता है—उनको जलाये बिना उसकी लपक कभी नहीं लौटती। भारतमें पुर्त्तगीज़ोंका भी राज्य बहुत दिन तक नहीं टिका। पुर्त्तगीज़ोंने केवल प्रतिहिंसा करनेके लिये ही अत्याचार नहीं किया था; उन लोगोंका अत्याचार प्रतिहिंसा मूलक नहीं था, वह अत्याचार अत्याचारके ही लिये था। हत्या करनेके उद्देश्यसे ही हत्या की गई थी; खूनके लोभसे ही खून बहाया गया था! ऐतिहासिक हण्टर साहबने इसीसे कहा है :—

"The Portuguese cruelties were deliberate, rather than vindictive."

—•—

ग्यारहवां अध्याय।

पुर्त्तगीज़ोंका वाणिज्य।

Throughout the Middle Ages commodities of Asia were known and valued and as civilization progressed and Europe emerged from Barbarism, the demand for pepper and ginger, for spices and silks and brocades increased. H. M. Stephens.

मिस्रके सुलतानने सङ्कल्प कर लिया था, कि जिस प्रकारसे हो भारत महासागरसे फिरङ्गियोंको निकाल बाहर करके निष्कंटक होंगे। उसीसे सुएज़ बन्दरमें बड़ी धूम धाम से बारह भारी भारी युद्ध जहाज प्रस्तुत हो रहे थे। बड़े चतुर और लड़ाईमें खूब पक्के सरदार लोग तुरन्त उन जहाज़ोंको लेकर फिरङ्गियोंका नाश करने चले। फिरङ्गियोंने पहिले प्रमाद समझा; किन्तु जब उन लोगोंने देखा कि, मिस्रीय लोग हिन्दुस्तानके राजाओंकी तरह नहीं हैं, मिस्रीय सेना भारतकी सेना नहीं है और सुलतानकी रणतरी मुसल्मानोंकी रणतरी नहीं हैं, तब वे खूब समझ गये कि अब "पड़े कठिन

रावणके पाले । यह लोग बड़े लड़ाके हैं, इन लोगोंके युद्ध जहाज़ खूब मज़बूत और हरवे हथियारोंसे सजे और नाना प्रकारकी युद्धकी सामग्रियोंसे भरे हैं। लेकिन भारतके व्योपार ने उस समय उन लोगोंके हृदयमें नई शक्ति पैदा कर दी थी; आलमिदा उस समय पुर्त्तगाल राज्यके भारतमें रहने वाले प्रतिनिधि थे। उनके साहसी पुत्र लोरेञ्जो आलमिदाने उस समय लक्ष्मीकी कृपासे सिंहल आविस्कार करके वहाँ पुर्त्त-गोजोंका व्योपार सुप्रतिष्ठित किया था। पुर्त्तगीज़ लोग भारतके धन रत्नका लोभ न छोड़ सके। सुलतानकी भयङ्कर समर-सज्जाको देखकर भी वे लोग पीछे न हटे।

इधर सुलतान का आयोजन सम्पूर्ण होते ही, उन्होंने १५००० पन्द्रह हज़ार सेनाके साथ मीरहुसेनको पुर्त्तगीजोंसे युद्ध करनेके लिये भेजा* और उनसे कह दिया कि मुसल-मानोंके साथ मिलकर खूब ज़ोर शोरसे पुर्त्तगीजों पर आक्र-मण करना। मीरहुसेन, जहाँ तक हो सका, बहुत जल्दी उत्तर बम्बई प्रदेशके समुद्र तीर पर बसने वाले मुसल्मानोंके साथ मिले। यहाँ पुर्तगीज़ आलमिटाने भी समझ लिया था

* This was the first regular war which the Portuguese had yet met. The fleets of the Zamorin, which Pacheco and Don Lourence De Almeida had defeated, consisted of only merchant ships roughly adapted for war by the Mopla traders of Calicut. [R N. P.]

कि जो समस्त मुसल्मानी शक्ति सुलतानके साथ मिल जायगी तो पुर्तगीज़ोंका नाम पल भरमें मिट जायगा। अतएव तुरन्तही मीरहुसैनकी चाल बन्द करनेके लिये उन्होंने अपने पुत्रको भेजा और चलनेके समय उन्हें खूब समझा कर कह दिया कि, जिस प्रकारसे हो ऐसा करना कि जिसमें मीरहुसैनके साथ मुसल्मान लोग मिलने न पावें।" लोरेञ्जो यद्यपि थे तो नये ही उमरके जवान,किन्तु वे खूब समझ गये कि मीर हुसैन जो मुसल्मानोंके साथ मिल जायगा तो सुलतानकी क्रोधाग्नि क्षण भरमें पुर्तगीज़ोंको भस्म कर देगी और पुर्तगीज़ोंकी समस्त आशा समुद्रके अगाध जलमें निमग्नहो जायगी। लोरेञ्जो वीर थे। पुर्तगीज़ोंके गौरव की प्रतिष्ठा उनके हृदय में जाग रही थी। इसीसे इस भयङ्कर कार्य्य का भार लेकर वे सम्मुख-समरमें अग्रसर हुए। पुर्तगीज़ोंका बल उस समय चारों ओर बँटा हुआ था। लोरेञ्जोको जब कुछ उपाय न सूझ पड़ा, तब उन्होंने स्थिर किया कि किसी प्रकारसे मीरहुसैनका रास्ता रोकें, तब तक यदि हमारे पिता सेना जुटा सकेंगे तो काम बन जायगा। उस समय इसके सिवाय और दूसरा उपाय भी नहीं था।

मुल्तानकी सेनाके साथ लोरेञ्जोका भयङ्कर युद्ध आरम्भ हुआ *। लोरेञ्जोने अपनी सेनाके सरदारोंको जमा करके एक सभा की।

---

* Don Lowrence Almeida was unable to prevent

इस काल-समरसे दूर रहनेके लिये उनके सरदार उनसे बारम्बार अनुरोध करने लगे ; किन्तु लोरेङ्गोने उनकी बातों पर कान न दिया। सवेरे फिर युद्ध आरम्भ हुआ। मुसल्मानों के अग्नि बरसानेसे पुर्तगीज़ लोग एक दम विपर्य्यस्त होने लगे। लोरेङ्गो उस समय स्वदेशका नाम रखनेके लिये अपनी सेना को उत्साहित कर रहे थे। अकस्मात शत्रुओंकी ओरसे एक गोला आकर उनके पैर पर गिरा और वे लँगड़े हो गये *।

junction of the Egyptian and the Diu fleet, and on their approach to his station in the port of Chaul he boldly sailed out and attacked them. His members were totally inadequate, but he had received express orders from his father to prevent the allies from coming south to Calicut to join Zamorin.

* For two days the Portuguese maintained a running fight, but Don Lowrenco De Almeida soon found that he had to deal with more experienced and warlike foes than the merchant-captains he had so often defeated. His ship was surrounded on every side ; his leg was broken by a cannon ball at the commencement of action ; neverthless he had himself placed upon a chair at the foot of the main mast and gave his orders as cooly as ever. Shortly afterwards a second cannon ball struck him in the breast and the young hero who was not yet twenty one expired [H M Stephens]

लेकिन तब भी उन्होंने हथियार नहीं छोड़ा। जिसमें उनकी सेना डर न जाय, ऐसा विचार कर वे अपने युद्ध-जहाज़के मस्तूलके नीचे एक कुरसी पर बड़े कष्टसे बैठकर सेना चलाने लगे। फिर दुश्मनोंकी तोपें बड़े ज़ोरसे गर्जने लगीं और फिर गोले छूटे; इस बार एक जलता हुआ लोहेका टुकड़ा आकर लोरिंझोका हृदय छेदकर चला गया! मूर लोग मारे आनन्दके जयध्वनि करने लगे!

इसके अनन्तर मूरोंने देखतेही देखते लोरिंझोके जहाज़में घुसकर उसे डुबो दिया। बचे खुचे उन्नीस पुर्त्तगीज़ मल्लाह क़ैद करके कैम्बे नगरको भेज दिये गये। मीरहुसैन भी वीर थे; वे खूब धूम धामसे पुर्त्तगीज़ लोरिंझोकी अन्तिम क्रिया समाप्त करके, उनके वीरताके गाथा (record) की आलोचना करते करते आगे बढ़े। पराजित और विनष्ट-गौरव फिरङ्गी लोग, पुर्त्तगालके प्रतिनिधि आल्मिडाके पास उनके वीर पुत्रके संग्राममें मरनेका सम्वाद लेकर, बड़े दुःखी मनसे कोचीनको लौटे। सुल्तानके भीषण प्रतिशोधकी प्रतिज्ञा फिर मानों उन लोगोंके कानोंमें वज्र निनादकी तरह ध्वनित हो उठी। वीर पुत्रके लिये आंसू बहाते बहाते आल्मिडा थरथराने लगे और उन्होंने पुत्रघाती शत्रुका नाश करनेके लिये फिर सङ्कल्प किया।

विक्रम सम्वत् १५६२ में जब विस्ताओ-दा-कानहाने लिस्बन नगर छोड़ा, तब ओल्फोन्सोडी आलबुकर्क भी कः ज

हाज़ और चार सौ सिपाहियोंके सरदार बनाकर भारत भेजे गये थे। चलनेके समय पुर्त्तगालके राजा मैन्युएलने उनसे गुप्तरूप से कह दिया था कि तुमही भारतवर्षके पुर्त्त-गीज़ राजप्रतिनिधि होगे—आलमिदा केवल तीनही वर्ष गवर्नर रहेंगे *।

आलबुक़र्कने भारतके स्वर्ण-सिंहासनका स्वप्न देखते देखते हृदयमें बड़ी अभिलाषा रख कर भारतवर्षकी ओर यात्रा की। रास्तेमें पारस्य उपसागर और लोहित सागरमें फिरते २ उन्होंने अरमुज़ (Ormuz) में एक क़िला बनाया। उनके साथी पुर्त्तगीज़-सेनाके अन्यान्य सरदारोंने उनके कार्य्यका खूब प्रतिवाद आरम्भ किया। उन लोगोंने कहा कि अरमुज़ में क़िला बनानेके लिये पुर्त्तगाल-राजकी आज्ञा नहीं है। पर आलबुक़र्कने जब उन लोगोंकी बात पर कान न दिया, तब उन लोगोंने झगड़ा करनेका उपक्रम किया। उनमेंसे तीन मनुष्योंने, तुरन्त आलबुकर्कसे छिपकर और आलमिदाके निकट पहुँचकर, अपने प्रधान अध्यक्षके नाम नालिश की।

---

* Affonso de Albuquerque was to go to India and take out the supreme command from the Viceroy. These secret orders were not communicated to the Viceroy immediately, and Albuquerque was directed not to present his commission until Almieda had completed his years of Government :

(H. M. stephens,)

आलबुकर्कने समझा था कि, पुर्त्तगीज़-शक्ति युद्ध करके जो कुछ जीतेगी वह सब सर्व्वदा पुर्त्तगालका ही रहेगा। इसीसे भारतवर्षमें आनेके समय उन्होंने अफ्रिकाकी पूर्व सीमामें पुर्त्तगीज़ शक्तिको सुरक्षित करके लोहित सागरके मुहाने परके सकोटरा नामक स्थान पर अधिकार कर लिया।

सकोटराका बन्दर उस समय मुसल्मानोंके आधीन था। मुसलमानी शक्तिही उस समय सकोटरामें प्रधान समझी जाती थी और मुसल्मान नागरिकही वहां भरे हुए थे। मालाबारके सेन्ट टामस (Saint Thomas) खीष्टानोंकी तरह निम्न श्रेणीके थोड़े बहुत एशियायी खीष्टान (Asiatic Christians) भी सकोटरामें थे। आलबुकर्कने मुसल्मानों की सब भू सम्पति छीन ली। खीष्टानोंको कैथलिक शाखामें दीक्षित किया और निर्व्विवाद दीक्षा ले लेनेके पुरस्कारकी तरह मुसल्मानोंका ताड़वृक्षोंका बन उन्हें उपहार देकर आप तृप्त हुए और खीष्टानोंको भी सन्तुष्ट किया। उसके बाद सकोटरामें एक सुदृढ़ क़िला और एक फ्रांसिस्कान उपासना-मन्दिर (Church) बनवाकर, उन्होंने अरबकी ओर यात्रा की। उनके भाईके पुत्र सकोटराके रक्षककी तरह रहकर वहाँ पुर्त्तगीज़ोंका व्योपार फैलाने लगे। आगे कहा गया है कि, आलबुकर्कके सेनापतियोंमें कई कारणोंसे विद्रोहका भाव देख पड़ता था। वह सब असुविधा रहते भी आलबु-

कुर्कने कट्टा (Katta) और मस्काट (Muskat) को गोलोंकी वर्षासे चूर चूर कर दिया।

पारस्य उपसागरके प्रवेश-मार्गमें जितने छोटे छोटे बन्दर थे, आलबुकर्कने उन सभोंको अपने अधिकारमें करना चाहा; क्योंकि ऐसा होनेसे एक ओर सकोटराका दुर्ग और दूसरी ओर अरमुज़ का दुर्ग दोनों जागते पहरेदारोंकी तरह पुर्त्तगीज़ोंके वाणिज्य-पथको बहुत दूर तक रक्षा करते। कुछ दिनों बाद वैसाही हुआ। अरमुज़के राजाने अन्तमें आलबुकर्कके दिये हुए सन्धि-पत्रकी शर्तोंसे सम्मत होकर एक सन्धि-पत्र लिख दिया। उसमें उन्होंने लिखा कि 'प्रधान सेनापतिने अपनी शक्तिके प्रभावसे हमको अरमुज़के सिंहासन परसे उतार दिया था, हमने अब उन्हींसे सब अधिकार फिर प्राप्त किया है। उनके आधीन जितनी सेना है उसका वेतन हम प्रतिवर्ष पुर्त्तगाल-राजका राज-कर की तरह पर दिया करेंगे।' सन्धिपत्र पाकर आलबुकर्ककी अभिलाषा पूरी हुई। पुर्त्तगीज़ोंके इतिहासमें एक नया चित्र लिखा गया।

यह पहिलेही कहा गया है कि आलबुकर्कके तीन विद्रोही सेनापतियोंने आलमिदाके पास मुक़दमा खड़ा किया था। उन लोगोंकी बात पर निर्भर होकर आलमिदाने अरमुज़के राजा सैफुद्दीन और वहांके शासनकर्ता खोजाअतरके निकट लिख भेजा कि 'राजाके नामसे आलबुकर्कने जो कुछ अत्या-

चार किया है उसके लिये उन्हें पूरी सज़ा भोगनी पड़ेगी।" खोजाअतरके पास आलमिदा का पत्र देखते ही आलबुकर्क समझ गये कि आलमिदाके साथ मुलाक़ात होनेसे उनकी कैसी पूजा होगी! किन्तु वे घबराये नहीं; राजा मैन्युएल ने गुप्तरूप से भारतका शासन-भार उन्हींके हाथोंमें सौंप दिया था इसीसे आलबुकर्कके हृदयमें साहस था। जो हो आलबुकर्कने अपनी इच्छाके अनुसार अरमुज़में किला बनाया, वहाँके राजाको अपनी सुविधाके सन्धि-सूत्रमें बाँध लिया और उस देशमें पुर्त्तगालकी शक्ति सुप्रतिष्ठित करके वे भारतवर्षमें पहुँचे।

आलमिदा तब तक भी पुत्रका शोक नहीं भूले थे। उनके निर्भय वीर पुत्रकी वीरोपमम मृत्यु हर घड़ी आलमिदाको पुत्रघाती शत्रुको उचित दण्ड देनेके लिये नियुक्त करना चाहती थी। आलमिदा जिस समय डिउ नगर पर आक्रमण करके मुसल्मानोंको सर्वदाके लिये भारतवर्षसे निकाल बाहर करनेका आयोजन कर रहे थे, आलबुकर्क भी उसी समय भारतमें आकर उपस्थित हुए। उन्होंने आतेही आलमिदाके साथ मुलाक़ात की और राजा मैन्युएलकी आज्ञा सुनाकर हिन्दुस्थानका शासन-भार माँगा, यहाँ तक कि अपना 'विलेम' जहाज़ दिखाकर कहा कि 'आलमिदाके लिये' विलेम में चढ़कर पुर्त्तगालको लौट जाना ही अच्छा होगा। राजा मैन्युएल उस समय सात समुद्र और तेरह नदीके पार थे।

आलबुकर्ककी जवानी बात पर क्या आलमिदा भारतवर्षकी आशा छोड़ सकते थे *? उन्होंने पुर्त्तगाल-राजके निकट अर्जी भेजी और आलबुकर्ककी बदमाशी और राजाकी आज्ञा को न माननेका अभियोग चलाया। क्या जाने, यदि इतना करके भी हिन्दुस्थानसे प्रस्थान करना पड़े, यदि आलबुकर्कही सचमुच भारतवर्षके शासनकर्त्ता हो जायँ, आलमिदा यही सोचकर अनेक उपायोंसे खूब धन रत्न लूटने लगे। इतने समय तक भारतवर्षमें रहकर कौन मूर्ख खाली हाथों से अपनी झोंपड़ीमें बिलकुल भिखारीके वेशमें लौट सकता है? सोखनेके लिये अथाह सुधा-समुद्र सामने रहते कौन मूढ़ प्याससे छटपटाते हुए सूखे कण्ठसे फिर मरुभूमि का आश्रय लेता है? आलमिदा मूर्ख नहीं थे, इसीसे उन्होंने भी वैसा नहीं किया।

मीरहुसैन उस समय डिउ नगरमें अपेक्षा कर रहे थे। अमत्त आलमिदाने बड़े वेगसे मुसल्मानों पर आक्रमण किया। उनके साथ उन्नीस युद्ध-जहाज और १६०० सौ योद्धा थे। फिरङ्गियोंने अंजद्वीपसे दभोल बन्दरमें पहुँच कर बड़ी धूमधाम से युद्ध आरम्भ कर दिया। युद्धमें पराजित होकर दभोल

* Almeida replied that his term did not expire till January 1509, and that he desired to defeat the Egyptian fleet of Emir Husain and to wreck vengeance for the death of his son, Dom Lourenco :— H. M. Stepnens,

वासियोंमेंसे कितने ही तो पहाड़ और बनमें भाग गये, बाक़ी सोलह सौ दभोल वासियोंके तप्त शोणितसे रञ्जित होकर आलमिदाने नगरको लूट लेनेकी आज्ञा दी। किन्तु फिरङ्गियोंके दुर्भाग्यसे. अकस्मात् आग लग गयी और दभोल जल कर भस्म हो गया। इतिहास बीती हुई बातोंका जीवित साक्षी है। वही इतिहास साफ़ साफ़ कह रहा है कि, धन रत्नके लोभसे फिरङ्गी लोग आलमिदाके साथ जानेमें असम्मत हुए थे। इसी कारणसे उन्होंने अन्तमें दभोलके नाश कर देनेकी आज्ञा दी थी।

इधर उस समय मलिक अय्याज़ और मीरहुसेन दो सौ युद्ध-जहाज़ लेकर आलमिदाकी अपेक्षा कर रहे थे। प्रमत्त आलमिदाने बड़े जोरसे मुसल्मानों पर चढ़ाई की। फिरङ्गियोंका वह अप्रतिहत * वेग मीरहुसेन न सम्हाल सके। वे हारकर हारनेका समाचार ले जाने वाले दूतकी तरह कोम्बेके राजाके निकट भाग गये। उनके तीन हज़ार* सैनिकों को मृत्यु-शय्या पर सुलाकर फिरङ्गी लोग जीतका डङ्का बजा

* On February 2, 1509 Don Francisco-De-Almeida came up with the united fleet of the Mohammedans under Emir Husain and Malick Ayaz ed-Din, and after a battle which lasted the whole day a great victory was won, in which the Mohammedans are said to have lost 3000 men and the Portuguese only twenty-two.—H. M. Stephens.

गे लगे। आलमिदाने शत्रुओंके जहाज़ोंको लूट कर जला दिया। केवल चार बड़े और दो छोटे जहाज़ फिरङ्गियोंकी सेवाके लिये रख लिये गये। सुल्तान और मीरहुसेनकी विजय पताकाएँ विजयी सेनापतिके सगौरव अभिनन्दनकी तरह पुर्त्तगाल-राजके निकट भेज दीगईं।

डिउ बन्दरका जहाजी वा जल-युद्ध इतिहासमें छोटा सा है, शोणित-पानके हिसाबसे सामान्यही कहा भी जा सकता है, किन्तु फिरङ्गियोंके इतिहासमें वह एक चिरस्मरणीय घटना है। फिरङ्गियोंके गौरवके लिये इतिहासमें अतुलनीय है। एशिया खण्डका जो गौरव-रवि उस दिन नील समुद्रमें हताश होकर डूब गया था! वह फिर न उठा। मुसल्मान लोग उस समय शायद यह नहीं समझ सके थे कि, फिरङ्गियोंसे हार कर उन लोगोंने हिन्दुस्थान भरके वाणिज्यका नाश किया है। इतने दिनोंसे वाणिज्य-लक्ष्मी एशिया खण्डमें पूजा पा रही थी; डिउके युद्धके बाद वह ख्रीष्ट राजाओंके हाथ बँध गयी। पुर्त्तगीज़ोंका अमानुषिक अत्याचार सहन करके भी एशियाकी नव शक्तिने इतने दिनोंतक मुसल्मानोंकी रक्षा की थी; परन्तु विक्रम सम्वत् १५६६ के वैशाख मासके बाद उसने अपना कर कमल एकदम खींच लिया और बिलकुल मान हीन होकर म्लान-मुखसे ख्रीष्ट-राजके सामने हाथ जोड़कर खड़ी हो गयी। क्रूशने कुरानको पराजित कर दिया। वह हार केवल मुसल्मानोंही की नहीं हुई थी,

हिन्दू और मुसल्मान आदि सभी भारतवासियोंको उस पराजयका फल भोगना पड़ा था। भारत महासागर बहुकालके लिये पुर्त्तगीज़ोंका लीला क्षेत्र हो गया था ; इस देशकी जातियोंका परस्पर विवाद और स्वार्थपरताही इसका कारण था। इसीसे कहा गया है कि, डिउ बन्दरकी समुद्री लड़ाई हल्की वा सामान्य होने पर भी पुर्त्तगीज़ोंके गौरव, सुप्रतिष्ठा और नव-शक्ति जो भारतवर्षमें बहुत समय तक अक्षय थी उसकी अतुल कहानी है। केवल यही नहीं, वह लड़ाई सुल्तानके पराजय और भारतके भयङ्कर फल भोगकी भी कहानी है। इसीसे पुर्त्तगीज़ोंके इतिहासमें वह चिरस्मरणीय है और उसीसे पुर्त्तगीज़ आलमिदा भी पुर्त्तगीज़ोंके राज्यमें वर्णनीय है।

सुलतानका भाग्य सचमुच फट गया था : डिउके पराजयके बादही उनका राज्य और सिंहासन सब गया। सलीम * ने मिस्र, सीरिया और पैलेस्टाइनको अपने अधिकारमें कर लिया। पुर्त्तगीज़ लोग जिस तरह मीरहुसैन को जीत कर हो

---

* Selim I, who was then ruling at Constantinople, was at issue with the Mamluke Sultan of Egypt, whom a few years latter he conquered, but the opposition between them was not understood in Portugal, and it was believed that the Turks, would be inclined to assist the Egyptians : —H. M. Stephens

निश्चिन्त नहीं हुए थे—अब सलीम भी सुलतान की तरह पुर्त्तगीज़ोंकी प्रतिष्ठाका भीतर भीतर अनुभव करने लगे। हाय! यदि दोनों सुलतान आगेसेही मिल जाते तो क्या न बनता! उन लोगोंमें धर्म्मका पार्थक्य नहीं था; जातिगत पार्थक्य भी नहीं था, यदि वे लोग विद्वेषको भूलकर, आपसमें मेल करके, भारतका उद्धार करना चाहते तो क्या न होता? परन्तु ईश्वरकी इच्छा वैसी नहीं थी। कुछ काल बाद जब तुर्कों और विनीसियोंने, अपना अपना द्वन्द कलह और परस्परका विद्वेष भूलकर, पुर्त्तगीज़ोंके नाश करनेके लिये मन प्राणको एक करके कमर बाँध ली, तब सुल्तान की समस्त चेष्टाएं विफल हो गईं। पहिले सलीमने विनीसियों को सब स्थानों पर व्योपार करनेके सम्पूर्ण अधिकार दे दिये थे। पूरबका माल मसाला अलेकज़न्ड्रियासे ले आनेमें राजा का क़ानून कोई रोक टोक नहीं करता था। परन्तु लिस्बनके माल पर राजाके महसूल वा राज कर का खूब भारी बोझ डाल दिया गया था।

उससे पुर्त्तगीज़ोंका वाणिज्य मरा नहीं; क्योंकि वे लोग जलके रास्तेसे बहुत सहज और थोड़ेही खर्चमें अनेक बहुमूल्य चीज़ें ले आकर यूरोपमें बेचते थे। उसीसे यूरोपके व्योपारमें विनीसियोंका स्थान दिन दिन कम होने लगा था। कैम्बेकी अभिशप्त सन्धिके कारण विनीसीय लोग दिन दिन धनहीन और बलहीन होने लगे। अन्तमें ऐसा समय आ

पहुंचा था कि, उन लोगोंको माल मसाला बेचनेके लिये,बाध्य होकर, पुर्त्तगाल-राजकी आज्ञा लेनी पड़ती थी। शत्रुओंको हराकर,आलमिदा विजय गौरवको मस्तकपर रखकर कोचीन को लौटे । उस समय उनको इस बातकी बड़ी भारी चिन्ता थी कि कहीं आलबुकर्क भारतवर्ष का शासन भार न ले लें। अतः वे अपने साथी
उपाय करने लगे।

यहाँ कोचीनके राजा एक सुयोगकी अपेक्षा कर रहे थे। उन्होंने देखा कि वर्त्तमान और भावी सरदारोंमें खूब गड़बड़ मच रही है। इस समय दोनों अपना अपना और जमाने में लगे हैं; व्यौपारकी ओर किसीकी दृष्टि नहीं है। अतएव उन्होंने समय समझ कर मालकी रफ़्नी (Export) बन्द कर दी। कोचीन-राजने पुर्त्तगीज़ोंको पहिचाना नहीं था; पहिचानते तो शायद ऐसा विचार न करते। पुर्त्तगीज़ कभी व्यौपारको नहीं भूलते, उसीसे आलमिदा भी नहीं भूले। उन्होंने ख़बर पातेही आलबुकर्कसे कुछ दिन चुप रहनेको कहा। इसी बीचमें कोचीन-राज मौक़ा देखकर आलबुकर्क की तरफ़ हो गये और पुर्त्तगालमें अपना दूत भेजनेको तैयार हुए।

आलमिदाने यह ख़बर भी पायी, किन्तु तोभी उन्होंने अपना शासन कर्त्तृत्व (हुकूमत) परित्याग नहीं किया। वे एकदम अन्तिम परिणामकी अपेक्षा कर रहे थे। हुकूमतके लोभने

आलमिदाको यहां तक अन्धा कर दिया कि, वे सच और झूँठ बिना बिचारेही आलबुकर्कके मित्रोंसे उसको खटपट करा देनेका उपाय करने लगे। जिससे आलबुकर्कका आदर मान मिट्टीमें मिल जाय और जिससे कोचीन राजके निकट खड़े तक न होने पावे, आलमिदा अब उसीका बन्दोबस्त करने लगे।

कवि ने सच कहा है 'लोभ पाप को मूल' लोभ से सर्वदा पाप जन्मता है। आलमिदा और आलबुकर्क के विवाद की कहानी उस पाप की तसवीर है। उस तसवीर में आलमिदा विशेष कलङ्क से काले देख पड़ते हैं। आलमिदा को लोभ था इससे पाप ने उन्हीं को पकड़ा। उन्होंने पुर्त्तगाल-राज के निकट झूँठ मूठ रिपोर्ट की थी कि, "आलबुकर्क विद्रोही हैं और वे चुपचाप जमोरिन के साथ मेल करके भारतवर्ष से पुर्त्तगीजों को निकाल देने का उपाय कर रहे हैं इत्यादि"। पाप का पथ सर्वदा फिसलाने वाला (चिकना वा काईदार) होता है; आलमिदा उसी फिसलाने वाले रास्ते से दिन दिन फिसलते फिसलते नीचे जाने लगे।

विद्रोही ठहराकर आलमिदा ने कानानोर के क़िले में आलबुकर्क को क़ैद कर रक्खा। उनका घर द्वार भी तहस

---

* Albuquerque again demanded that Almeida should resign the Government to him. But the Viceroy, influenced

नज़रबन्द कर दिया, और यह कह कर कि "जो कोई आलबुकर्क का पक्ष लेगा उसी को हम जेलखाने में ठूंस देंगे," सब को भय दिखाने लगे।

आलमिदा के साथ रहनेवाले नौकरों को छोड़ कर और सब के लिये हथियार बांधने को मनाई हो गई। आलमिदा के मनमें शक था, कि कहीं ये लोग आलबुकर्क के पक्ष में होकर कुछ विपद न उठावें। जाति वालों को भी खबर लेने में आना कानी न की गयी। जिन पुर्त्तगीज़ व्यापारियों को उन्होंने आलबुकर्क का साथी समझा, उनको भी जेल में डाल कर बेड़ी हथकड़ी पहनाने में देर नहीं की। किन्तु 'अपना चेता दूर है प्रभु चेता तत्काल' आलमिदा का पत्र आदि जला कर आलबुकर्क को पदच्युत करने और उनका अपमान करके उन्हें राजा की दृष्टि में शत्रु ठहराने

---

by Joao-da-Nava and the other captains, who had good cause to fear Albuquerque's anger, persistently refused. They drew up a requisition to the Viceroy, which they got signed by many other officers, stating that Alfonso-de-Albuquerque was a man of great maptitude, and covetous, and of no sense, and one who new not how to govern anything, much less so great a charge as the Empire of India; The Viceroy received this petition favourably. In August 1509, he ordered Albuquerque to be imprisoned at Cannanore :- Albuquerque's commentaries Vol. 11 P. 33.

के सब उपाय, पापी मनुष्य की सन्तान की तरह, जन्मते ही विनष्ट हो गये।

आलमिदा को हिन्दुस्थान पर हुकूमत करने की इच्छा इतनी प्रबल हो उठी थी, कि जब इतना करने पर भी कुछ सन्तोषदायक फल न देख पड़ा; तब वे धोखे धड़ी से आलबुकर्क को विष देकर मारने की चेष्टा करने लगे; परन्तु यह सब विषम उपाय करके भी उन्होंने भारतवर्ष का कर्त्तृत्व आर भविष्यत् के लिये न पाया। आलबुकर्क का भतीजा मार्शल-दान-फरनन्दो कौटिन्हो पुर्त्तगलराज का आज्ञापत्र लेकर एक दिन अकस्मात् कनन्वर—कानानोर*—में आ पहुँचा और उसने तुरन्त आलबुकर्क को जेलखाने से बाहर कर दिया। आलमिदा बुद्धिमान थे वे चट समझ गये कि हमारा कुछ भरोसा नहीं है, और बिना कुछ कहे सुने ही आलबुकर्क के हाथ में भारतवर्ष का शासन-भार सौंप कर बिल्कुल टूटे हुए हृदय से कोचीन को छोड़ कर चले

---

१ कानानोर का हाल संयुक्तांश या पुस्तक के शेष भाग में देखिये।

* In October 1509 fresh fleet arrived at Cannanore under the command of Dom Fernao-de-Nontinho Marshal of Portugal. This powerful nobleman was a relative of Albuqnerque, and atonce released him from custody. With Albuquerque the Marshal sailed to Cochin, and he insisted that, in compliance with the Royal Mandate, Albuquerque should be immediately recognized as the Governor of India H. M. Stephens.

गये। परमेश्वर दुष्टों को अवश्य दण्ड देते हैं। आलमिदा को भी पाप का फल भोगना पड़ा। लिस्बन को लौटने के समय मालवाना उपसागर के तीर पर वहाँ के कतिपय अनार्य अधिवासियों के साथ आलमिदा के सहचरों का विवाद उपस्थित हुआ। आलमिदा के एक नौकर ने दो निरपराध और नितान्त अनार्य अधिवासियों को बहुत हैरान किया। उस पर उन लोगोंने उस उसण्डे नौकर को खूब पक्की गच की तरह पीट पाट कर, उसके ऊँचे चढ़े हुए मिज़ाज को चौरस कर दिया। इस अपमान का बदला लेने के लिये आलमिदा नौकरों के कहने से दलबल सहित तीर पर उतरे। किन्तु उतरते ही बहुत दूर से फेंका हुआ एक तेज़ बर्छा आकर उनका गला छेद कर पार कर गया। आलमिदा के पाप का प्रायश्चित्त हुआ। अपने तप्त शोणित से जन-हीन वेलाभूमि को रँग कर आलमिदा ने पाप का भार उतार दिया। अगाध समुद्र ने फेन भरित लहरों को उठाकर भयङ्कर गर्ज्जना से चारों दिशाओं को कँपाते हुए आलमिदा का अन्तिम आर्त कण्ठ स्तब्ध कर दिया। धर्म्म की जय हुई और पाप का क्षय हुआ।

बारहवां अध्याय।

History, ancient or modern, records no achievement of armed commerce so rapid, so brilliant, and so fraught with lasting results :—Sir W. W. Hunter.

पुर्त्तगीज़ों की वाणिज्यनीति के साथ इतिहास ने हमें खूब परिचित कर दिया है। हाथ में भीख माँगने को तूम्बा लेकर भिखारियों की तरह रत्नाकर के किनारे खड़े होकर, अन्त में तलवार और तोपों से रक्त की नदियां बहाकर अपना पूर्ण रूप दिखाते हुए भारतवर्ष में व्यौपार फैला कर उन लोगोंने सर्वदा के लिये नाम पैदा किया था। हमलोग आगे देख चुके हैं कि वास्कोडीगामा ने काँपते हुए हृदय से भारतवर्ष के तीर पर आकर अपना जहाज़ लगाया था। आश्चर्य्य भरी आँखों से ज़मोरिन का धन रत्न देखा था और राजा के द्वारा अश्रुत पूर्व्व सम्मान प्राप्त किया था। किन्तु लौटने के समय उन्होंने अपना असली रूप प्रकट करने में त्रुटि नहीं की थी।

पुर्त्तगाल राज डोम मैन्युएल ने 'जेहाद' कह कर जिस युद्ध-यात्रा का नाम रक्खा था, वह क्रम को

---

on March 1, 1510. And it is a strange irony of fate that the famous conqueror of the Mohamadan fleet, who by his victory assured the power of the Portuguese in the East, should die by the hands of ignorant African savages :—R. N. P.

भोट में रहकर "कृपाण की सहायता से व्यापार फैलाने की हिकमत" के नाम से इतिहास में सुपरिचित हो रहा है। फिरङ्गी जाति बड़ी चतुर है; वास्कोडीगामा उसी के शिरोमणि थे। उन्होंने सहज ही में समझ लिया था कि, भारतवर्ष में रहने वाली जातियों का परस्पर विवाद ही एक दिन उन लोगों के विनाश का पथ साफ़ करेगा। राजा इमैन्युएल भी यह बात समझ गये थे। उसी से माल मसाले से भरे हुए व्योपारी-जहाज़ों में तोप, बारूद और गोला आदि युद्ध के सामान रख कर भारतवर्ष में भेजे गये थे। फिरङ्गियों का इतिहास देखने से जाना जाता है कि, उन लोगों के वाणिज्य ने विजय वैजयन्ती का अनुसरण नहीं किया था, विजय वैजयन्ती ही वाणिज्य के पीछे पीछे नितान्त चोरों की तरह, एक दम मुर्दे की तरह, और बिल्कुल बलहीन की तरह भारतवर्ष में आई थी। उसके बाद हिन्दुस्तान की दुर्बलता, स्वार्थ, निद्रा, और घर घर के कलह का आश्रय पाकर, दिन दिन परिपुष्ट होके, अन्त में गौरव के साथ अपना अधिकार जमाकर सुप्रतिष्ठित हुई थी। उस समय भारतवर्ष के नाश्चिन, प्रतारित और रणाहत राजाओं की शक्ति एक दम जड़ से भस्म हो गई थी।

विक्रम सम्वत् १५५५ * में वास्कोडीगामा ने जब भारतवर्ष को परित्याग किया था तब की व्यापार-नीति चार भागों में

* १४९८ ई० सं०।

विभक्त हो जासकती है। पहिले यह स्थिर किया गया था कि, प्रत्येक व्यापारी जहाज़ एक एक जङ्गम कोठी की तरह रह कर भारतवर्ष का माल मसाला खरीद कर लिस्बन के बाज़ार में पहुँचाया करेगा; और यह सब तैरती हुई कोठियाँ धन के लोभी फिरङ्गी बनियों के रहने की जगह बनकर भारतवर्ष के समुद्र में व्यापार करती फिरेंगी। किन्तु थोड़े ही दिन बाद इस सरल और सहज नीति को परित्याग करके पुर्त्तगाल ने स्थिर किया कि, तैरनेवाली कोठियों से कुछ लाभ न होगा। समुद्र के किनारे पर खूब मज़बूत पत्थर की कोठियाँ बनाकर फिरङ्गियों को रखना होगा। कैबरल ने इसी नीति का अनुसरण किया; किन्तु इससे भी सुविधा न हुई; तब फिरङ्गियों ने समझ लिया कि बिना सेना इकट्ठा किये काम न चलेगा। दूसरी चढ़ाई के समय वास्कोडीगामा सेना एकत्रित करने लगे।

फिरङ्गियों का व्यौपार समुद्र किनारे फैलने लगा। लेकिन तब भी भारतवासियों के काम काज में उन्हें सन्देह रहता और उन लोगोंकि बलके ऊपर एकदम विश्वास करने का साहस नहीं होता था। वास्कोडीगामा मनमें सोचते थे कि जो इतना भारी साम्राज्य एक बार हिलेगा, एकबार भी जाग उठेगा अथवा भ्रमको समझकर अपने कर्तव्य पालन करने को कमर बांधेगा तो बड़ाही अनर्थ हो जायगा। मुट्ठी भर फिरङ्गी वीर लोग तो ऐसा

होने से लगभग में अथाह समुद्र में डूब जायेंगे। इसीसे उन्होंने लड़ाई का सब सामान ज़मीन के नीचे गाड़ रक्खा था। सब के सामने रखने की हिम्मत नहीं कर सके। सोते हुए सिंह को कौन जान बूझकर उठाता है?

किन्तु फिरङ्गी सरदार आल्बुकर्कने जब आकर देखा कि, सब भ्रान्ति और सब संशय केवल अपने मन का भूल है, यह सिंह कभी न हिलेगा और कभी न जागेगा. यह मुर्दे की तरह सोया हुआ है, तब उन्होंने ज़मीन में गड़े हुए अस्त्र शस्त्र एक एक करके बाहर निकाले। जिन सब सुरक्षित स्थानों को बाल्कोडागामा ने अमोलक व्यापार का गोदाम वा कोठी कह कर प्रसिद्ध किया था, अलबुकर्क अब इच्छामत निर्भय होकर कहने लगे कि, यह सब कोठी नहीं, फिरङ्गियों के किले हैं। उन्हीं सब किलों में तब फिरङ्गी सरदारों के आधीन पूर्व्व और पश्चिम के समर-व्यवसायी युद्ध करना सीखने लगे। आलबुकर्क के शिष्य माल्-धाना उस समय निशङ्क होकर लाल समुद्र का मुँह रोक कर बैठे। अरबी बनियां ने सोकर उठे हुए मनुष्य की तरह आँख खोलकर देखा कि सब चौपट हो गया है। उन लोगोंके पुराने झोपड़ों में आग घुस गई है।

उसके बाद पाकिओ और सोआरेज आये। इतने दिनों की शिक्षा यह लोग भूले नहीं थे, तुरत अरबी बनियां पर चढ़ाई की। विधाताके वज्र की तरह उस चढ़ाईने दक्षिण

भारत के मुसलमानी व्योपार-केन्द्र का नाश कर दिया। उस समय केवल एक पारस्य उपसागर का भरोसा रह गया। लेकिन कितने दिन! अन्तमें वह भी गया। देखते ही देखते फिरङ्गी लोग मालावार-तीर के हर्त्ता कर्त्ता विधाता हो गये। १५५६ से १५६१* यही पांच वर्षों में फिरङ्गियों का व्योपार जिस तरह फैल गया और प्रसिद्ध होगया, आज कलके आधुनिक वा पुराने समय के किसी इतिहास में उसकी तुलना नहीं मिलती।

आगे हम देख चुके हैं कि, भारतवर्ष में एक स्थायी फिरङ्गी शासन कर्त्ताके न रहने से बहुत प्रकार की गड़बड़ होती थी। उसीसे आल्मिदा बड़ी भारी फौज लेकर हिन्दुस्तान में सब से पहले ईसाई शासन कर्त्ता बनकर आये थे। उन्होंने आते ही पहले अफ्रिका के पूर्व के किनारे को सुरक्षित किया था। फिरङ्गियोंके जहाज़ उस समय वहांसे चल कर भारत के समुद्र में निष्कण्टक ज़ोर जमाने लगे। मोम्बासाको हाथमें करके कुइनोआमें एक क़िला बनाकर आलमिदाने मालाबार को जीतने में मन लगाया था। उस समय अरबी बनिये मालाबार में ज़ोर जमाने के लिये बड़े ही उत्सुक थे। आलमिदा का इरादा खाली मालाबार को ही नाश करने का नहीं था। वे ऐसा उपाय सोच रहे थे कि जिससे मुसल्मानों का जहाज़ी बल

* १८८८ में १५०५ वर्षा वा अब्द।

सब दिनके लिये भारत महासागर से हट जाय। पुर्त्तगालके राजाने इस समय विचार किया कि, अब मालाबार किनारेमें अरबी बनियों को निकाल बाहर करने के लिये मिहनत करना बेफ़ायदा है अब भारत महासागर को पुर्त्तगाल के आधीन करना चाहिये। इस से इस्लाम और क्रूस में जो भयङ्कर युद्ध की आग जली थी पुर्त्तगाल के राजा उसके लिये भी तैयार हो रहे थे। उस विपुल रणभूमि के मध्य में पैलेस्टाइन और बाइजेनसियम् साम्राज्य में मुसल्मानों की फ़ौज बहुत दिनों तक रक्षित थी सैकड़ों वर्ष की लड़ाईमें भी वह क्षीन गर्व नहीं हुई थी। किन्तु रणभूमि के पश्चिम प्रान्तमें स्पेन और पुर्त्तगाल में क्रस्तान साम्राज्य धीरे धीरे प्रवेश करने लगा था। वही समर भूमि अब पश्चिम से पूर्व्वमें आ पहुँची। यह बात राजा इमैन्यु एल की तरह मुसल्मान लोग भी समझ गये थे।

फिरङ्गी आल्मिदाका शोचनीय परिणाम हम आगे ही देख चुके हैं, किन्तु हिन्दुस्तानमें रहनेके समय वे एक दिन भी कर्त्तव्य विमुख नहीं हुएथे। उनके अगणित सैन्यदलने बहुतेरे उपायोंसे मालाबारका नाश किया था और मुसल्मानोंके व्योपारको भी पातालमें पहुँचा दिया था। आल्मिदाने स्थिर किया था कि, वे भारतवर्ष में बिना जरूरत कई एक क़िले बनाकर बेफायदा खरच के भारमें न पड़ेंगे। इसीसे उन्होंने अपने राजाको लिखा था :—

"इस देशमें किलोंकी संख्या जितनी बढ़ायी जायगी पुर्त्तगालकी शक्ति उतनी ही तेज़-हीन होती जायगी। हम लोगोंका सब दल समुद्रके जलमें ही फिरे तो अच्छा होगा। हम लोग जो समुद्र में ज़ोर न जमा सकेंगे तो फिर सब वृथा है। हमारा जहाज़ी बल जबतक प्रबल रहेगा, भारतवर्ष तब तक हमीं लोगोंका है, और किसीका नहीं हो सकता। जहाज़ी बल न रहने से हिन्दुस्तानमें क़िला बनानेसे कुछ फल नहीं है।"

किन्तु पुर्त्तगालके राजाने उस समय आशाका आलोक देखा था। समुद्रके रास्ते से प्रतिष्ठा लाभ करनेकी बातसे उनका मन तृप्त नहीं होता था। वे उस समय जल-पथ और स्थल पथ दोनोंके मालिक होकर भारतवर्षकी प्रभुता चाहते थे। इसी से हम देखते हैं कि, पहले भारतवर्षकी चढ़ाई में फिरङ्गी लोग मालाबार में प्रतिष्ठित हुए थे; उन लोगोंको कोई पराजित नहीं कर सका। उसके बाद चार वर्ष में आलमिदाके कौशल और कार्य्य-कुशलताने फिरङ्गी लोगोंको भारत समुद्र का एक छत्र मालिक बना दिया था। आलमिदा के बाद जब आलबूकर्क भारतके फिरङ्गी सरदार हुए, तब फिरङ्गियोंकी विजय वैजयन्ती भारत-साम्राज्य लाभ करनेके लिये अग्रसर हो रही थी। राजा इमेन्युएलने विक्रम सम्वत् १४८२ से १५७८ तक राजत्व किया था। इस

१४२५ से १५२१ ईसवी सन।

सुदीर्घ शासन समय में उन्होंने पहले वास्को-डीगामाको हिन्दुस्तानमें भेजा था। फिर उन्होंने हिन्दुस्तानमें फिरङ्गियों-का राज्य जमाकर फिरङ्गी राजधानी को अटारियों, कोठियों और महलोंसे समुज्ज्वल कर दिया था। पुर्त्तगाल के इति-हासमें उसीसे इमैन्युएल सदा पूजित हैं। उनकी कीर्त्ति कहानी बड़े बड़े अक्षरों में लिखी हुई है।

आल्मिदाने जब दुःखित मनसे अपने देशको यात्रा की। तब उनके यार दोस्तोंने भी उनके सङ्ग भारतको छोड़कर प्रस्थान किया था। वे लोग जानते थे कि, जिस आलबुकर्क के विरुद्ध होकर वे सब आल्मिदाका भला करनेमें तत्पर हुए थे, वह आलबुकर्क अब भारतवर्षमें फिरङ्गियोंके कर्त्ता हुए हैं। इसीसे अपना कल्याण न समझकर वे लोग वह स्थानही छोड़कर भाग गये थे।

आलबुकर्क की दृष्टि बड़ी दूरदर्शी थी। उन्होंने घरके विवाद की ओर ध्यान न दिया और देखा कि फिरङ्गी लोग इतने दिनोंतक केवल कई एक सामन्त राजाओं के साथ युद्ध और कलह में लगे थे, किन्तु अब वह दिन नहीं है। अब या तो इस्लाम, नहीं तो ख्रीष्ट ही समग्र समु-द्र-पथका अधिपति होगा। अब विपुल मुसल्मानी शक्तिके साथ मुट्ठीभर ख्रीष्टानोंका युद्ध, जैसे शक्ति-हीन कई एक सामन्त राजाओंके साथ हुआ था वैसा नहीं है। "वह रूम आया—वह रूमी सेना देख पड़ती है।" इसी भयसे

आल्बुकर्क सदा चिन्तित और कम्पित होने लगे। किस तरह पुर्त्तगाल की प्रतिष्ठा और विपक्षका पराजय होगा। अलबुकर्क उस समय इसीकी चिन्तामें व्याकुल होगये थे।

अलबुकर्कने जो सब कीर्त्ति भारतमें छोड़ जानेका विचार किया था उसकी बात अब याद पड़ने से, इसे जान पड़ता है कि, मनुष्यके लिये वह बिल्कुल असम्भव है। वह केवल आरब्यो-उपन्यास की कल्पनामय अलौकिक कहानीके ही उपयुक्त है। उन्होंने नीलनदीकी चाल रोक कर उसको लाल समुद्र में लाकर फेंकने का विचार किया था। जिसमें उस की शाखा प्रशाखा मिसरके भीतर जाकर उस देशकी उर्व्व-रा शक्तिको बढ़ा न सके यही उनका उद्देश्य था। उनकी दूसरी कल्पना और भी भयङ्कर थी वे मुसल्मानों पर इतने श्रद्धा-हीन थे कि, मक्का नगरीको तहस नहस करके हज़रत मोहम्मद की गड़ी हुई लाश को खोदके निकाल लानेका और अन्तमें पृथ्वीके सामने उसी शवदेह की अग्निक्रिया करके मुसलमानोंको लज्जित करनेका विचार किया था।*

* To carry away from Mecca the bones of the abominable Mahomed (Mahommad), that, there being reduced publicly to ashes, the votaries of so foul a sect might be confounded.--

D. Albuquerque's Commentaries I, P. XLI -- Sir, W. W. Hunter.

आलबुकर्क के कल्पनामय उपन्यास में इसमें कुछ काम नहीं है। उनकी कर्म कुशलता और राज्य फैलानेका कौशल ही इतिहास का आलोच्य विषय है। इससे देख पड़ता है कि, उन्होंने पहले पारस्य उपसागर और लाल समुद्र का प्रवेश-मुख बन्द करके नील और यूफ्रेटिस नदी के तीर परके मुसल्मानी वाणिज्यके नाश करनेका विचार किया था। इस काममें उनकी कामना थोड़ी बहुत सफल भी हुई थी। हरमुज़का सुदृढ़ क़िला, अदन अवरोध और दक्षिणमें मिश्र पर चढ़ाई करने के लिये एबासीनिया की खीष्टान शक्तिको उत्तेजित करना ही उसका प्रमाण है।

आल्बुकर्क का दूसरा काम मालाबारके मुसल्मानी वाणिज्यका नाश करना था। गोआ पर अधिकार कर के आल्बुकर्कने उसको भी पूरा किया था। किन्तु यह गोआ का उपनिवेश फिरङ्गी बनियोंका काल हुआ था। भारत वर्षके दक्षिण पश्चिमके किनारे पर इतने दिनमें जो फिरङ्गी जहाज़ी शक्ति प्रबल और पराक्रान्त कहकर प्रसिद्ध थी, गोआ में ही उसका पतन हुआ था। आल्बुकर्क मालाबारका सिर्फ मुसल्मानी-वाणिज्य ही विनष्ट करके चुप नहीं हुए थे बल्कि उन्होंने इसकी भी चेष्टाकी थी कि, जिससे पूर्व के किसी स्थान पर इस देशका वाणिज्य जीवित न रह सके। और इसीके लिये मलक्का अधिकार करके वहाँपर क़िला बनाया था। फिरङ्गियोंका शासन भी अब तक मलक्का में निष्कण्टक था।

तेरहवाँ अध्याय।

The stratagic design for converting the Indian ocean from a Moslem to a Christian trade route was complete. It only remained for his successors to fill in details.

Sir, W. W, Huuter.

आल्बुकर्क जब भारतवर्ष में पुर्त्तगाल के सबसे बड़े जहाजी सरदार और शासन कर्त्ताकी तरह विराजमान थे, उसी समय समूरी राज की शक्ति का नाश करनेके लिये वे यथाविहित आयोजन करने लगे थे। आल्बुकर्क ने कहा था कि, 'कालीकटका नाश कर सकने पर हम बड़े खुश होंगे।' कोचीनके राजाने भी इस तरफ़ कालीकटका सब हाल चाल जाननेके लिये दो ब्राह्मण गुप्तचर नियुक्त किये। वे लोग सर्व्वदा खबर इकट्ठा करने लगे।* केवल इतना ही करके जो कोचीन राजा चुप हो जाते तोभी होता, किन्तु भारतवर्ष का इतिहास सब दिन से कलङ्क-मलिन है। आपस का कलह और "घरके भेदी विभीषण" ने ही हमेशा भारतवर्षके गिरनेका रास्ता साफ किया है। उसीसे स्वार्थान्ध भविष्य दृष्टि विहीन कोचीन राजने कई एक सामन्त राजाओंको पत्र लिखा कि जिसमें वे लोग जमोरिन के साथ लड़ाई आरम्भ करके उनकी कालीकटकी सेनाको दूसरी ओर खींच ले जायँ। आल्बुकर्कने भी कोचीनको सहायता देनेमें बाकी

* Portuguese in India Dauvers.

नहीं रक्खा। इस तरफ़ गुप्तचर ने आकर ख़बर दी कि, राजा कालीकटमें नहीं है, उसकी सब सेना दूसरी जगह युद्ध करनेमें लगी है अतएव राजधानी पर चढ़ाई करनेका यही अच्छा मौक़ा है।

गुप्तचर के मुँहसे यह ख़बर सुनकर फिरङ्गियोंकी समर-सभा बैठी। सभामें यह ठहराया गया कि, यही सुयोग है। राजधानी पर चढ़ाई करना ही चाहिये। जिसमें किसीको सन्देह न हो उसके लिये अपनी बातको छिपाकर आल्बुकर्कने घोषणा की कि, 'हम गोआ पर चढ़ाई करनेका बन्दोबस्त कर रहे हैं।'

इधर कोचीन से फिरङ्गियोंके जहाज़ कालीकट नाश करने चले। दो हज़ार फिरङ्गियोंकी सेना जय जयका शब्द करती हुई आगे बढ़कर एक दिन कालीकट जा पहुँची, उस समय नगर अरक्षित था। समूरीराज राज्यमें नहीं थे और नागरिक लोग भी निश्चेष्ट और निस्सन्देह होकर दिन बिता रहे थे। फिरङ्गियोंकी सेना बिना किसी तरह की रोक टोकके आगे बढ़ने लगी। मुसल्मानोंकी मसजिद आग लगने से धू धू करके जलने लगी। अन्तमें राजमहल तक भस्म होने लगा। उस समय भी भारतवर्षमें वीर थे, वे लोग बड़ी हिम्मतके साथ हथियार उठाते थे। वे वीर नैय्यारी थे तो मुट्ठीभर ही, किन्तु बड़ी बहादुरी के साथ लड़ने लगे। उस लड़ाई में स्वयम् मार्शल और

उनके साथी और और भी अनेक प्रधान प्रधान फिरङ्गी योद्धा लोग चिर निद्रा में अभिभूत हो गये थे। आल्बूकर्क पर भी दो चार हाथ पड़े थे। नन्थारी सेना की वीरता के सामने उस दिन फिरङ्गियोंकी सेना एक दम बेइज्जत होकर भाग निकली, जो अन्टोनियो और राबेल नामक दो पुर्त्तगाली कप्तान् सेना समेत आकर न पहुँच जाते तो, शायद फिरङ्गियोंकी पराजय और भी भीषण होती। शायद हारने की खबर लेकर भागनेवाला भी कोई न रहता। भारतवर्ष में जयचन्द संख्यातीत थे। उसीसे विजय नगरके राजा नरसिंहराव फिरङ्गियोंको सहायता देनेमें प्रतिश्रुत हुये। प्रतिदानकी तरह आलबुकर्क ने कहा "अबसे हरमुजसे लाये हुए घोड़ोंका व्योपार आपके ही देशमें होगा। दक्षिण में रहनेवाले उस सौभाग्यसे वञ्चित रहेंगे"। रूमी सेनाके नामसे उन दिनों फिरङ्गी लोग बड़े ही डरने लगे थे।

उसीसे दूसरीबार युद्धाभियान की व्यवस्था करते ही करते आल्बूकर्कने जब सुना कि, रूमके तुर्क लोग गोआमें बड़े प्रबल होगये हैं और उन लोगोंकी सहायता के लिये सुलतान की भी सेना आ रही है, तब वे बड़े घबड़ाये। थोड़े ही समय में फिरङ्गियों की सेनाने पंजिम दुर्ग जीतकर उसमें आग लगाकर जला दिया और किले के अस्त्र शस्त्र लूट-कर जहाज़में चले आये। जलदस्यु तिमोजा फिरङ्गियोंको सब तरह से सहायता करने लगे। आखिरकार नागरिकों

ने शीघ्र ही पुर्त्तगाल राजाका आनुगत्य स्वीकार करके अत्याचार से रक्षा पाई।

विजय पाकर खुश आल्बुकर्क अन्तमें सेना समेत गोआ के द्वारपर जा पहुँचे। वहां युद्ध भी न करना पड़ा। गोआ के सेनापति ने डरपोककी तरह फिरङ्गियोंकी शरण लेली। गोआके दुर्गमें रण युद्धका सामान भरा हुआ था सज्जाका अभाव नहीं था। तोप, गोले, गोला और बारूदकी भी कमी नहीं थी। केवल कमी थी हिम्मती और लड़ाके सेनापतिकी। उसी अभावके कारण गोआ फिरङ्गियों के हाथमें आगया। चालीस व्यापारी-जहाज़ पूर्ण माल मसालासे भरे और बहुत से घोड़े आदि फिरङ्गियोंने लूट लिये। रूमी और तुर्कियोंके स्त्री, पुत्र और कन्या आदि भी फिरङ्गियों के हाथ में कैद हो गयीं। गोआके सेनापतिने शरणागत लोगोंको परित्याग करके क़िले की सब चीज़ें ले लीं और भागकर प्राण रक्षा करके यशस्वी हुए। आस पासके छोटे छोटे दुर्ग जिनमें तुर्क और रूमी लोग वास करते थे उनको भी शीघ्रही निकाल बाहर किया। मालाबार और गुजरात के शक्तिहीन होनेके कारण गोआको वशमें कर लेनेसे दक्षिण और उत्तर बम्बई तीर का भी वाणिज्य आल्बुकर्क के हाथमें आगया था। कच्छ उपसागर से लेकर दक्षिण कुमारिका अन्तरीप पर्य्यन्त फिरङ्गियोंका वाणिज्य जीत हो गया। अन्त में यह हाल हुआ कि, जो मुसल्मानी वाणिज्य-जहाज़ एक

दिन निर्व्विवाद मालबार के तीर पर व्योपार करते फिरते थे, अब फिरङ्गी के आदेश पत्र बिना उन सबका चलना एक दम बन्द होगया था।

आल्बूकर्कने गोआ पर अधिकार तो कर लिया; किन्तु निश्चिन्त न हो सके। उन्होंने सुना कि, आदिलशाह फिर-ङ्गियों पर चढ़ाई करने के लिये खूब आयोजन कर रहे हैं और शंखेश्वर के राजा वाम्रोजी, सूबाके सेनापति रोशन खाँ और करपत्तनराज के मालिक राव्वल, आदिलशाह को सहा-यता करनेके लिये तैयार हो रहे हैं। यह खबर सुनकर फिरङ्गी लोग बड़ी चिन्ता करने लगे।

आदिलशाहने विजयपुरके राजासे मदद माँगी। किन्तु नरसिंहराव एकान्त मुसल्मानोंके वैरी थे। अपने स्वार्थ में भूलकर उन्होंने फिरङ्गियों की तरफ़ होकर हथियार उठाना चाहा।* उन्होंने यह नहीं समझा कि, गोआ नगरसे फिरङ्गी बनियोंको निकाल बाहर कर देनेमें भारतवर्षका मंगल होगा। हिन्दू और मुसल्मानोंका आपसका वैरही भारतवर्षके अवनतिका मूल कारण है। इतिहास हमें हमेशा से यही शिक्षा देता आता है।

---

* The king Narsing had, however, replied that forty years ago the Moors of the Deccan had taken the Kingdom of Goa from him, and he was not now sorry to see it in the possession of the King of Portugal, and that his intention was to assist the Portuguese in defending the place—Danvet. Vol, I.

युद्धका बन्दोबस्त होने लगा। आल्बुकर्क गोआ नगरमें जाने के सब रास्तों और घाटोंको सुरक्षित करने लगे। उन्होंने इसका भी बन्दोबस्त किया कि, जिससे गोआका कोई सूर बनिया आदिलशाह के पास पत्र वगैरः न भेज सके। ज़रूरत पड़ने पर शरण लेने और भाग निकलने के लिये जहाज भी तय्यार रक्खा गया। आदिलशाहने सेना सामन्त लेकर बालस्हरिम्में डेरा डाल दिया और आल्बुकर्क के पास दो दूत भेजे। उन दूतोंने आकर ख़बर दी कि, गोआ नगरके बदले में आदिलशाह समुद्र किनारे का एक दूसरा स्थान छोड़ देनेको राज़ी हैं; किन्तु आल्बुकर्कने वह बात न मानी। दोनों दूत पालकी पर बैठकर लौट गये।

आखिरमें मई महीनेकी अँधेरी रात में मुसल्मानोंने दो दलोंमें बँटकर गोआको घेर लेनेकी कोशिश की। पहले दलके तीन मनुष्योंको छोड़कर और सभी फिरङ्गियोंके हथियारोंसे मारे गये। लेकिन दूसरे दलने बड़ी बहादुरी से बढ़कर दुआर्ते-दा-सूसाको सेना समेत मारकर क्षार कर दिया। विजयी मुसल्मानी सेना रास्ता पाकर बन्याके प्रवाहकी तरह गोआ नगरमें घुस गई। आल्बूकर्क उस समय नाव पर चढ़कर भागकर जहाज़में जा छिपे। फिरङ्गियोंका राक्षसी स्वभाव कभी गुप्त रहनेवाला नहीं था। इसीसे भागनेके समय भी आल्बूकर्क ने हुक्म दिया कि, क़िलेके एक सौ पचास प्रधान सूर बनियोंका सिर काट कर

डाल दो, अस्तबलके घोड़ोंकी जांघका मांस काट कर उन्हें बेकाम कर दो और हथियारों के गोदाम में आग लगा दो।*

अनेक प्रकारसे विध्वंस होकर आलबूकर्कने अन्तमें कोचीन आकर एक समर-सभा आह्वान की। उन्होंने फिरङ्गी सरदारोंसे कहा कि, गोआपर अधिकार करने की बड़ी ज़रूरत है। गोआसे निकाल बाहर करनेसे भारतवर्षसे फिरङ्गी बनियोंका नाम विलुप्त हो जायगा। आख़िर में युद्ध करना ही स्थिर हुआ। आल्बूकर्कने पुर्त्तगाल राजको लिखा, "गोआ जो हाथके नीचे रहेगा तो हम लोग दक्षिण भारतको आसानी से जीत सकेंगे। युद्ध-जहाज़ ही का हम लोगोंको भरोसा है और गोआके अधिवासी लोग जहाज़ बनानेमें बड़े होशियार हैं। यूरुपके कारीगर लोग इस देशमें आकर थोड़े ही दिनोंमें अकर्मण्य हो जाते हैं। वे शेषमें मनुष्यत्व के भी बाहर हो जाते हैं। किन्तु गोआके मिस्त्री लोग बराबर एक ही तरह काम करते हैं। गोआके मुसल्मानोंके अधिकारमें रहनेसे वे लोग अनायास ही असंख्य युद्ध-जहाज़ तय्यार करके हम लोगोंको एकदम विध्वंस कर देंगे। किन्तु हमलोग जो गोआके मालिक हो जायँगे तो दक्षिणका हिस्सा सहज

*"...) he ordered Garper De Paiva to proceed to the fortress and direct his men to cut off the heads of Melique Cufecondal and of 150 Moors of the ..., to hamstring all the horses that were in the stables, and to set fire to the arsenals - Danvess, Vol, I.

हो में जीता जा सकता है। कारण आपसके भीतरी विवादसे वह प्रदेश इस समय बिलकुल शक्तिहीन है आलवुककीने विदेशी होकर जो समझा था हमारे देशी राजा लोग स्वार्थ के अन्धकार के नीचे रहकर वह समझ न सके। इसी से लोग बोलते हैं, कि "जिसके घरमें पहले आग लगती है उसको उसकी कुछ खबरही नहीं होती" भारतवर्ष के किनारे पर उस समय धीरे धीरे जो आग जलने लगी थी उसे इस देशके राजा लोग जान भी नहीं सके थे। वे लोग उस समय आपसका कलह लेकर व्यस्त होरहे और फिरङ्गियों की खुशामद भरी बातों में भूलकर देशकी भलाई पर उन लोगों ने बिलकुल ध्यान न दिया।

"इस मुसल्मानों को सब दिनके लिये जड़से उखाड़ कर, और मोहम्मद की जलती हुई आगको हमेशा के लिये ठण्ढी करके परमेश्वरकी वासनाको पूरी करेंगे।" फिरङ्गियों का समराभियान उसीसे किसी किसी इतिहास में जेहाद वा धर्म्म-युद्धके नामसे प्रसिद्ध है। किन्तु प्रकृत इतिहासकी आलोचना करनेसे देख पड़ता है कि, फिरङ्गियोंका युद्धाभियान धर्म्मके आवरणके भीतर रहकर इस देशके व्योपार का नाश कर रहा था। कृशकी प्रतिष्ठा करने की कामना से फिरङ्गी लोग भारतवर्ष में नहीं आये थे। भारत के अमूल्य धन सम्पद को लूटकर लिसबनमें कुबेर का भाण्डार बनाने के लिये ही वे लोग यहां आये थे। इसीसे उन्हों ने छल, बल तथा कौशल और देशकी 'विभीषण नीति' में कुशल राजाओं के गृह-विवादकी सहायतासे गोआ नगर जीतकर खूनकी नदी बहायी थी।

लड़ाई में जीत कर विजयी फिरङ्गी ने हुक्म दिया कि, 'जो आदमी जो कुछ लूटकर पावेगा वह सब उसीका होगा'। लुटेरे फिरङ्गी लोग मतवालों की तरह एक घरसे दूसरे घरमें दौड़ने लगे। उन लोगों की तीखी तलवार की मारसे असंगिनती मुसल्मानों ने प्राण खोये। नागरिक लोगोंका सर्व्वनाश हो गया। मुसल्मानों की स्त्रियाँ फिरङ्गियों के पाशविक अत्याचार से धर्म्महीना होकर रोने पीटने लगीं और गोआ नगर श्मशान तुल्य हो गया।

उस महा विपदसे केवल ब्राह्मण और किसान लोग बच गये। क्योंकि आलबुकर्कने हुक्म दिया था कि उन लोगों पर कोई अत्याचार होने न पावे।

गोआ जीतने के बाद आलबुकर्कने राजा इमैन्युएल के पास जो लम्बा चौड़ा पत्र लिखा था उसके एक हिस्से में देखा जाता है :—

"गोआपर अधिकार करने के समय तुर्कियों के ३०० आदमी मरे हैं। बहुत लोगों ने पैर कर नदी पार करने की कोशिश की थी। हमलोगों ने उन्हें जलमें डुबा दिया है। उसके बाद हमने नगर में आग लगा दी थी। चार दिन तक हत्याकाण्ड बन्द नहीं हुआ। हम लोगों ने किसीको क्षमा नहीं किया। केवल ब्राह्मण और किसानों ने रक्षा पाई है। छः हज़ार मूरों के खूनसे धरती रँग गई थी। यह विराट व्यापार खूब अच्छी तरह पूरा हो गया है।"

लूटमार के काम में नरहत्या करके इतनी हिम्मत पाना केवल फिरङ्गियों के ही इतिहासमें शोभा पाता है।

गोआ में जब युद्धका डंका निस्तब्ध हुआ, तब आलबुकर्क पुर्त्तगीज़ों के साथ कैद की हुई मुसल्मान स्त्रियोंका विवाह करने लगे। सुन्दरी युवती के लोभ से अनेक फिरङ्गियोंने ख्रीष्टान धर्मकी रोक टोक और अनुशासन भूलकर

It was indeed a great deed and well carried out Albuquerque's letter to King Dom Manuel : 22 December 1510.

मुसल्मान स्त्रियोंका पाणिग्रहण किया और गोआमें रह-कर भारतवासी बने। अनेक हिन्दू और मुसल्मानोंने भी स्वार्थान्ध होकर उस समय ख्रीष्टान धर्म्म ग्रहण कर लिया। गोआमें फिरङ्गियों का राज्य संस्थापित हुआ। आल्बुकार्क ने अपने राजाको खबर दी, 'गोआ एक बड़ा विख्यात स्थान है। *जो कभी हिन्दुस्तान भर फिरङ्गियों के हाथसे निकल जाय और केवल गोआ ही रह जाय, तो भारतवर्ष फिरसे अधिकार करने में देर नहीं लगेगी।' किन्तु इतिहास कह देता है कि गोआ में अधिकार फैलाकर राज्य स्थापन करना ही फिरङ्गियों के पतन का कारण हुआ। आल्बुकार्क ने समझा था कि सभी फिरङ्गी उनको तरह स्वदेशप्रेमी, साहसी, लड़ाके और स्वार्थशून्य हैं, किन्तु वह उनकी भूल थी। जो उठता है वह गिरता है और जो गिरता है वह फिर उठता है, यह विधाता का अखण्डनीय नियम है। *इसीके अनुसार उसके बन्दोबस्तमें ईश्वर ही लगे हुए थे। लेकिन आल्बुकार्क की तेज़ दूरदृष्टि ने उस बन्दो-बस्त को नहीं देख पाया था।

पुर्त्तगालके राजाने हुक्म दिया था कि, उच्चवंशके प्रधान प्रधान सरदारों के साथ मुसल्मानी स्त्रियोंका विवाह करो। किन्तु आल्बुकार्क ने राजाके उस हुक्मपर ध्यान न देकर सभी फिरङ्गियों की इच्छा पूर्ण की थी। *इतिहासकी आलोचना

*Portuguese in India.—Danvers.

करने से देखा जाता है कि लगभग दो हज़ार फिरङ्गी ब-नियों ने इस देशकी स्त्रियोंका पाणिग्रहण करके, जीवन नि-वाहने के लायक़ धन आदि पाया था। खुद आल्बुकार्क भी इस देशकी स्त्रीके साथ विवाह करके कृतार्थ हुए थे।

आल्बुकार्क के विजय को बातने हिन्दुस्थानके राजाओं के हृदय में डर पैदा कर दिया। कोंकन के राजा ने तुरत उनके साथ मेल करनेकी इच्छासे दूत भेजा और किला बनाने के लिये डिउ बन्दर छोड़ देनेको राजी हुए। होना-वर-राजने भी गोआ से दूत भेजकर मित्रता की बातचीत की। यहां तक कि फिरङ्गियों के खास और पुराने वैरी कालो-कटके ज़मोरिन पर्य्यन्त आल्बुकार्क के साथ मित्रता करने के लिये व्यस्त हो गये और अपने राजमें पुर्त्तगीज़ दुर्ग बनाने के लिये अच्छी जगह देनेको सम्मत हुए।

विजयी आल्बुकार्क इस समय गोआ को सुरक्षित कर रहे थे। फिरङ्गी कारीगर लोग इस देशके मिस्त्रियों की सहायता से गोआ नगरको ऐसा दृढ़ बनाने लगे कि, जिसमें कोई शत्रु उसपर चढ़ भी आवे तो कुछ हानि न कर सके। लेकिन तब भी आदिलशाह की हिम्मती सेनाओं के भयसे आल्बुकार्क कांपते थे। वे केवल आदिलशाहसे ही डरते थे। उसीसे जहां तक हो सका किला बनाने और नगर की रक्षा करने का काम जल्दी ही ख़तम करने लगे। किलेके लिये पत्थर की ज़रूरत हुई। आल्बुकार्क झट

मुसल्मानोंके समाधि-मन्दिरों को तोड़ फोड़कर उन्हींके पत्थरों से गोआमें फिरङ्गियों का क़िला बनाने लगे।*

उस समय मलक्का द्वीप खूब धन दौलत से भरा हुआ था। चौदहवीं सदीके एक प्रसिद्ध भूगोलिक अबुलफ़िदा कह गये हैं कि उस समय मलक्का, अरब और चीन के व्योपार का केन्द्रस्थल कहकर प्रख्यात था। मुसल्मान, पारसी, हिन्दू और चीना व्योपारी लोग उस समय मलक्का ही में व्योपार करते थे। गोआ जीतकर ही फिरङ्गी सरदार आल्बूकर्क मलक्कापर चढ़ाई करने का बन्दोबस्त करने लगे। मुसल्मानी व्योपार जिससे एकदम नष्ट हो जाय उसी का वे जी जानसे उपाय कर रहे थे। आगे कह आये हैं कि, वही इच्छा पूर्ण करने के लिये आल्बूकर्क ने बहुतसे उपायों से पारस्य उपसागर और लाल सागर का प्रवेश-पथ जीत लिया था। उसीसे नील और उफ़रात नदीके तीर परके स्थानोंका मुसल्मानी-वाणिज्य हमेशा के लिये विलुप्त हो गया था। उसके बाद ही फिरङ्गी सरदार ने मालाबार तीरका व्योपार नाश किया। गोआ नगर सुरक्षित होकर उन्हीं समृद्धि शाली व्योपारके कलङ्क मलिन समाधि मन्दिरोंकी रक्षा करने लगा। तब भी मलक्का बाक़ी था।

---

* Portuguese in India—Dauvers

Threw down the sepulchres of the Moors to provide stone for the fortification................"

(Ormuz) बन्दरमें भेजे जाते थे। जो जाति इतनी मिहनती, इतनी कौशली और इतनी तेज नज़रवाली है, उस जातिका इतिहास पृथ्वी के इतिहास में जो अलौकिक कहकर न प्रसिद्ध होगा तो किसका होगा ? वह जाति जो भारतवर्ष के स्वार्थान्ध, कलह-निपुण, घरघरके झगड़े तकरार से क्षीण, सौभाग्य के सूत्रपात में ही प्रसन्न और धैर्यहीन राजाओं के चिताभस्म पर कीर्त्ति का ताज महल न बनावेगी तो कौन बनावेगा ? आलबूकर्क वही ताजमहल बना रहे थे। डीगामा भिखारी की तरह इस देश में आकर जिस ताजमहल की जड़ की प्रतिष्ठा कर गये थे, आलबूकर्क सम्राट् की तरह उसी नींव के ऊपर मन्दिर खड़ा कर रहे थे। विशाल यूरोपखण्ड में पुर्त्तगाल एक बिल्कुल छोटासा प्रदेश मात्र है। यूरोप की अन्यान्य विराट शक्तियों के सामने पुर्त्तगाल की शक्ति सूर्य्यके सामने जुगनू के समान थी। किन्तु उस ज़रासे जुगनू के पेटमें जो प्रलय का तेज गुप्त था, उसने युरोपीय शक्तिके इतिहास को म्लान कर दिया है।

जो मुसल्मानों का वाणिज्य बहुत दिनोंसे भारत समुद्र में एकमात्र छत्रपति की तरह विराज रहा था, अब उसके सब व्यौपारी जहाज़ जो आफ्रिका से पारस्य उपसागर, पारस्य उपसागरसे मालाबार तीर और मालाबार तीर से मलक्का द्वीप भरमें राजत्व करते फिरते थे, मुट्ठी भर फिरङ्गियों की हिकमत, रणचातुरी, ठगविद्या और प्रलो-

मन से भारत समुद्र के अगाध जल में डूब गये। मुसल्मानों की भारतकी वाणिज्य श्री अनाथिनी की तरह रोने लगी। किन्तु उस रोने की आवाज़ को और किसीने न सुना। वह अनन्त समुद्र की लहरों के हर हर शब्द में जाकर मिल गई। एक पक्षपातहीन अंगरेज़ने यह देखकर कहा है।*

मलका जीतने के लिये फिरङ्गी लोग तैयार हो रहे थे। आल्बूकर्कने अब सेना समेत यात्रा की। रास्ते में सुमात्राके राजा और यात्रा द्वीपके अधिपतिने उन्हें ज़रा भी नहीं रोका टोका, बल्कि उनका आनुगत्य स्वीकार करके वे लोग कृतार्थ हुए। यहां मलकाराजने पहिलेही से कई फिरङ्गियों को क़ैद कर रक्खा था। आल्बूकर्क की तोप बज्र की तरह गरज कर कहने लगी :—'जो भलाई चाहो, तो कैदियों को छोड़ दो'। मलकाराज की यह इच्छा नहीं

* The acheivement would have been a splendid one for the greatest of European powers. Accomplished by one small Christian Kingdom it makes the history of Portugal read like romance. *

W. W Hunter.

The strategic design for converting the Indian Ocean from a Moslem to a Christian trade route was complete. It only remained for his (Albuquerque) successors to fire in the details. *

Sir W. W. Hunter.

थी कि फिरङ्गियों के साथ युद्ध करें। किन्तु 'विधिकर लिखा को मेटनहारा'। मलक्काके मुसल्मान और गुजराती व्योपारी लोग उन्हें उत्तेजित करने लगे। आलबुकर्क की भी इच्छा थी कि, जो बिना लड़ाई झगड़ा किये ही उद्देश्य सिद्ध हो जायगा तो हथियार नहीं उठावेंगे। किन्तु वैसा न हुआ। मलक्काराज मेल करने में राज़ी न हुए।

तब दस नावें और थोड़ी सी फिरङ्गी-सेना मलक्काके तीर पर उतरी और चण भरमें गृहस्थों की झोपड़ियों में आग लगाकर निकटवर्त्ती कई एक गुजराती व्योपारी जहाज़ों को जला दिया। इस आपद की ख़बर पातेही मलक्काके राजाने कैद किये हुये फिरङ्गी रुइ दा-अरंजो और उनके कई एक साथियों को आलबुकर्क के पास भेज दिया। किन्तु चुपके चुपके वे लड़ाई के लिये तैयार होने लगे। मलक्का-राजमें उस समय बीस हज़ार योद्धा तैयार थे।

शीघ्रही लड़ाई आरम्भ होगई। पुर्त्तगीज़ फ़ौज बड़ी बहादुरी से नगरमें घुसने लगी। उस समय मुसल्मानी सेनाके सिपाही लोग नगरमें एक पुल की रखवारी में लगे हुए थे। वे लोग बिल्कुल कापुरुष की तरह उसे छोड़कर भाग गये। तब मलक्काके राजा खुद घोड़े हाथी वगैरः लेकर वहाँ पहुँचे और सूरी सेनाको उत्साहित करने लगे। किन्तु वे लोग चणभरमें छत्र भङ्ग हो गये। उनलोगों की मस्जिद आलबुकर्क के हाथ में चली गई। अब मलक्काराज २०,०००

फौज़ लेकर फिरङ्गियोंके साथ युद्ध करने लगे। फिरङ्गियोंके बर्छी की चोट से उनके हाथी का सिर छिन्न भिन्न हो गया। मतवाले हाथीने महावत को सूँड़ में लपेट कर मार डाला। राजा घायल हो कर ज़मीन पर गिर पड़े। ऐसी गड़बड़ मची कि उन्हें कोई पहचान भी न सका और वे उसी मौक़े पर पुत्र और दामाद को लेकर भाग गये आल्बूकर्क तब सूरी सेनाओं को मारने लगे। मतवाले फिरङ्गी लोग पुलपर अधिकार जमाये ही रहे। सेनापति की आज्ञासे नगर के दोनों प्रान्तों में आग लगा दी गयी और समृद्धिशाली नगरी पलभर में लङ्का की तरह जलने लगी।

दूसरे दिन मलक्काके राजाने फिर आल्बूकर्क के पास दूत भेजा। आल्बूकर्क ने कहा 'हम ऐसे क्षमा नहीं करेंगे। लेकिन जो मलक्काके राजा पुर्त्तगालके राजा की वश्यता मञ्जूर करें तो क्षमा कर सकेंगे'; किन्तु वह न हुआ। चतुर मलय-सिपाहियों ने अग्नि का जहाज़ लेकर फिरङ्गियों के जहाज़ में आग लगाने के लिये बहुत बार कोशिश की, किन्तु कुछ फल न हुआ।

आल्बूकर्क की फौज़ के सरदारों में उस समय एक झगड़ा पैदा होगया था। कोई कोई बोलते थे कि, मलक्कामें क़िला बनाने से कुछ लाभ नहीं होगा। इससे बेफायदा, इस अनर्थक युद्ध की कुछ ज़रूरत नहीं है। किन्तु आल्बूकर्क बड़े चतुर थे। उन्होंने उन लोगों को समझा

दिया कि मुसल्मानों को मलक्कामें से निकाल देने से ही काइरो और मक्का आपही विनष्ट हो जायँगे। वीनिस तक के लोग माल मसाले के लिये बाध्य होकर पुर्त्तगाल से भीख माँगेंगे और विनीसियों का स्वाधीन व्योपार विलुप्त हो जायगा।

सर्दार की इस अखण्डनीय युक्ति को हृदयङ्गम करने में फिरङ्गियों को ज्यादा देर न लगी। वे लोग ताज़े उत्साह से फिर लड़ाई में भिड़े। फिरङ्गियों की तोपों के गोलों के मारे मलक्कावासी बड़े हैरान हो गये। मूरलोग मलक्का से निकाल दिये गये। बहुत से लोग घायल होकर भाग गये। आल्बूकर्कने तब फिरङ्गियों को आज्ञा दी, जिसको पाओ उसी को हत्या करो। फिरङ्गियों की तलवार की चोट से कितने सिर कटकर ज़मीन पर गिरे उनकी गिनती करना कठिन है। केवल नयन शेठी नाम के एक हिन्दूने आल्बूकर्क की आज्ञा से रक्षा पायी थी। फिरङ्गियोंने लूट मार के समय किसीकी धन सम्पत्ति नहीं छोड़ी थी; लेकिन नयन शेठी की एक कौड़ीतक किसीने नहीं छूई। शेठीने कुछ दिन पहिले कैद किये हुए फिरङ्गी अरंजो की कुछ सहायता की थी; उसीसे आल्बूकर्क ने उसको छोड़ दिया था।

मलक्का जीतकर आल्बूकर्कने उसी नयन शेठीके ही हाथोंमें उसका शासन भार सौंप दिया। इधर मलक्काके राजाने जङ्गलों और पर्वत की गुफाओंमें फिर फिर कर सहायता की चेष्टा में

बहुत जगह दूत भेजे। किन्तु फिरङ्गियों के साथ लड़ाई करने के लिये कोई भी आगे न बढ़ा। लिङ्गद्वीप के राजा मलक्का के आधीन थे। विपद के समय वे भी सहायता करने से इँकार कर गये। उनको यह न सूझ पड़ा कि, मलक्का फिरङ्गियों के हाथमें दे देना जो है, माल मसालेके वाणिज्य को लात मार के दूर कर देना भी वही है। मलक्का के राजाने जब देखा कि, अपने देश में सहायता पाना असम्भव है तब उन्होंने चीन देश में दूत भेजा। लेकिन 'कालस्य गतिविटना' चीनके राजाने भी मुँह मोड़ लिया। उन्होंने कहा कि हम अभी तातार लोगोंके साथ युद्ध करने में लगे हैं। इस समय मलक्का को कुछ सहायता नहीं कर सकते। सुना जाता है कि चीन देशके कई एक बनिये मलक्का तीरपर मलय लोगोंके हाथसे पकड़ लिये गये थे; इसीसे चीन-राजने मलक्काको सहायता देने से इँकार किया था।*

राज्यभ्रष्ट, स्वजनबन्धु-हीन, मलक्का-राज और अधिक दिन न जी सके। उनको मृत्युके साथही साथ मलक्का के उठने की आशा भी सदाके लिये दूर हो गई। भारत समुद्र के वाणिज्यने बहुत वर्षों के लिये फिरङ्गियों के चरणों की शरण ली। चञ्चला वाणिज्य-लक्ष्मी फिरङ्गियों को रत्नहार पहिना कर, पुर्त्तगाल-राजको मणिरत्न उपहार देने लगीं।

आल्बुकर्क अब मलक्का में किला बनाने लगे। थोड़ेही

* Portuguese in India.—Dauvers.

दिनों में "ए फोमोसा" (Afomosa) नामक सुरक्षित क़िला मलक्का में फिरङ्गियों की असीम शक्ति की जागती मूर्ति की तरह खड़ा हो गया। उसके एक एक पत्थर का टुकड़ा रो रो कर कितने ही बीते युगोंके कर्मवीर मलक्काके राजाओं का इतिहास गाने लगा। आल्बूकार्कने मलक्का राजाओंके समाधि मन्दिर तोड़ कर और मुसल्मानों की मसजिदों को चूर चूर करके उनके पत्थरों से क़िला बनाया था। मलक्काराज के पन्द्रह सौ विश्वासी नौकर और साथी लोग फिरङ्गियोंकी ताड़ना से राज-समाधि मन्दिरों को तोड़ तोड़ कर पत्थरों के टुकड़े ले आने लगे, और कोई कोई उन्हीं सब पत्थरों के टुकड़ों को गढ़ गढ़ कर फिरङ्गियों का विजय-मन्दिर गढ़ने लगे।

फिरङ्गियों के क़िले, फिरङ्गियोंके व्योपारी जहाज़ों और फिरङ्गियों की तोप बन्दूकों से मलक्काद्वीप धीरे धीरे सुशोभित हो गया। आलबूकर्क तब पुर्त्तगाल के राजा के नाम के प्रचलित मुद्रा तैयार करने लगे। देशमें घोषणा कर दी गई कि,जो कोई मलक्का-राजके नामका मुद्रा पाकर फिरङ्गियों की टकसालमें न दे देगा तो उसकी जान लेली जायगी। प्राणके भयसे डरे हुए मलक्कावासी ढेर के ढेर पुराने मुद्रा ला ला कर फिरङ्गियों की टकसाल भरने लगे। राजा इमैन्युएल के नाम के नये रुपये पैसे तैयार होकर मलक्कामें घर घर फिरङ्गियों की शक्ति और प्रतिष्ठा जगाने लगे। नये प्रचलित

मुद्राओं को लेकर फिरङ्गी लोग नगर में फिरने लगे। बहु मूल्य झूलों से सजे हुए हाथी पर चढ़कर वे लोग नगर की परिक्रमा करने लगे और रास्ते में मुट्ठी भर भर कर नये रुपये पैसे लुटाने लगे। चकित नागरिक लोग बड़े आनन्द से उन्हें लूटने लगे।

आल्बुकर्क तब मलक्का की हत श्री को फिर से फिरा लाने की कोशिश में थे। सब स्थानों पर शान्ति संस्थापित करके, उन्होंने राज-कार्य्य में हिन्दुओं को ही अधिक अधिकार दिया। मलक्का के सब बन्दर फिर विदेशी व्योपारी जहाजों से भर गये।

मलक्का विजय करके सुदक्ष गवर्नर आल्बुकर्कने बड़ी खुशी से राजा इमैन्युएल के पास सन्देशा भेजा। राजा इमैन्युएल ने खुशी मनसे क्रस्तानों की विजय-कहानी पोप को सुनायी। तलवार और क्रूश की लड़ाई में क्रूश की जीत की बात सुनकर, पोपने बड़ी धूम धाम से रोम नगर में उत्सव किया। समस्त खीष्ट राज्यों का उस उत्सव में मान हुआ। मुसल्मानों का वाणिज्य सर्व्वदा के लिये डूब गया और फिरङ्गी लोग बहुत वर्षों के लिये भारत समुद्र के एक मात्र सम्राट हो गये।

पन्द्रहवाँ अध्याय।

आलबूकर्क निश्चिन्त मनसे गोआ छोड़ कर मलक्का विजय के लिये आगे बढ़े। उस समय हनोवर के राज-भाई मलहर राय गोआके शासनकारी थे। आदिलशाह ने देखा कि यही ठीक मौका है। उन्होंने उस सुयोग को त्याग न करके अपने सेनापति फौलादखाँको गोआ जय करने को भेजा। समुद्री डाकू तिमोजा और मलहर रायके साथ युद्ध होने लगा। अन्तमें तिमोजा हारकर भाग गये। फौलाद खाँ बलेस्तरिम नामक स्थान में छावनी संस्थापन करके, गोआ जीतने के लिये जी जान से कोशिश करने लगे; किन्तु आदिल शाह का वैसा हुक्म नहीं था। उन्होंने कहा कि, लड़ाई में जीत होनेसे फिर जब तक हमारी आज्ञा न पाना तब तक गोआ की ओर न बढ़ कर किसी उपयुक्त स्थान में अपेक्षा करना। फौलाद खाँ उस समय जीत के जोशमें फूले हुए थे। वे अपने मालिक की आज्ञा पर ध्यान न देकर सामने जितने लड़ाई के जहाज़ मिल सके लेते देते गोआपर धावा करने को आगे बढ़े। अन्तमें फिरङ्गी राडरिक और राबेला ने चार सौ नेयारों की फ़ौज के साथ फौलाद खाँको घेर कर परास्त कर दिया।

आदिल शाहने जब देखा कि, उद्धत सेनानायक के हठके

कारण ईश्वर का दिया हुआ ऐसा सुयोग पाकर भी गोआपर अधिकार नहीं कर सकते। तब वहीं आशा करके अपने श्रेष्ठ सेनापति रसूल खाँको भेजा। गोआमें तब बड़ाही गड़बड़ मचा। फिरङ्गियोंने जब सुना कि रसूल खाँ असंख्य तोप और सैन्य सामन्त लेकर गोआ पर चढ़ाई करने आते हैं तब वे लोग किंकर्त्तव्य विमूढ़ होगये।

फ़ौलादखाँ का मन उनके मालिकके काम से बिल्कुल हट गया। उन्होंने समझा था कि गोआ जीतने का सम्मान अकेले हमको ही मिलेगा किन्तु वैसा न होता देखकर वे बड़े दुःखी हुए और सुना कि, उनके दूसरे वैरी रसूलखाँ यशके ढेर के अंशीदार होकर आये हैं : तब वे एकदम नहत हो गये और रसूलखाँ के आदेश और उपदेश को मानने के लिये राज़ी न हुए। फ़ौलादखाँ को लाञ्छित और अपमानित करने की इच्छासे रसूलखाँ फिरङ्गियों के साथ मिल गये और उनलोगों की सहायता से फ़ौलादखाँ को भगा कर उन्होंने खुद बालेस्तरिम में छावनी स्थापित की। आलबुकर्क जो गोआमें होते तो शायद वे फ़ौलादखाँ की ही सहायता करते। किन्तु भावी प्रबल होती है। जितने पुर्त्तगीज़ सेनापति उस समय वहां थे वे सब रसूलखाँ की हिकमत से पराजित हुए। उन लोगोंने समझा था कि, प्रबल शत्रु को सन्तुष्ट कर सकने से ही गोआ की रक्षा होगी। किन्तु जब देखा कि, बालेस्तरिम सुरक्षित कर रसूलखाँ मित्र बन कर

गोआमें घुसना चाहते हैं, तब उन लोगों का भ्रम दूर हो गया और उन को सूझ पड़ा कि सर्व्वनाश उपस्थित हुआ है। उस समय गोआमें १२०० से ज्यादा सेना न थी ; लेकिन रसूलखाँ के सात हज़ार योद्धा लड़ने को तैयार थे। सुविटम के फिरङ्गियोंने जान छोड़कर लड़ना आरम्भ किया। रसूलखाँ गोआ घेरेही रहे। फिरङ्गियों में से बहुत लोग प्राण के भयसे रसूलखाँ के साथ मिल गये।

रूमके तुर्कों का डर उस समय तक फिरङ्गियों के पेट में उछला करता था। आफ़त के समय सब भयों की तरह रूमके तुर्कों के भयने और भी प्रबल होकर घिरे हुए फिरङ्गियोंको एक दम अकर्मन्य कर दिया। आल्बूकर्क तब कोचीन कनानोर और भाटफल वगैर: जगहों में व्योपार का खूब बन्दोबस्त करके फिरे आते थे। उनके आनेका सन्देशा पाकर वैरियों का दल मानों जादूके बलसे बलहीन होगया। दो एक बार हलकी हलकी लड़ाईयों के बाद रसूलखाँ ने हार मान ली। वे जैसे वीरकी तरह आवे थे वैसेही जो पहले ही वीर की तरह युद्ध करते तो शायद फिरंगियों के इतिहास में कुछ फेरफार होजाता। वैसा होने से कदाचित आल्बूकर्क फिर गोआमें न उतरते। फिरंगियों का प्रतिष्ठा मन्दिर भी कदाचित् लुट जाता। किन्तु रसूलखाँ ने हिकमत से गोआ लेना चाहा, अन्तमें उन्हें हार कर भागना पड़ा। आदिलशाह की अन्तिम आशा डूब गई।

रसूलखां अपनी सेना सहित केवल बचे खुचे कपड़े मात्र लेकर अपने देशको चले।* इसके पहिले जिन फिरंगियों ने लुका चोरी से रसूलखां के साथ मेल कर लिया था, आलबुकर्कने उन लोगों का विचार किया। विचार में फ़रनण्डो-लोपिस और उनके साथियों के दहिने और बांये हाथों के अँगूठे काट लिये गये।

गोआ में शान्ति स्थापित करके आलबुकर्क कालीकट में क़िला बनाने के लिये व्यस्त हुए किन्तु उनके भी शत्रुओं का अभाव नहीं था। उन लोगोंने पुर्त्तगाल नरेश को जनाया कि, गोआ का हवा पानी बहुत ही ख़राब है। यहां क़िला बनाने में भी बहुत खर्च पड़ेगा। ऐसे ख़राब स्थान की रक्षा के लिये सेना और धन का नाश न करना ही अच्छा है।" राजा इमैन्युएलने भी इसीसे आलबुकर्क के पास वैसाही आदेश भेजा। आलबुकर्क के सिर पर विधाता का वज्र टूट पड़ा। जिस गोआके लिये उन्होंने इतना युद्ध किया, जिसकी रक्षाके लिये इतना अर्थ नाश किया और जिस गोआकी रक्षा होने से भारतवर्ष में फिरङ्गियों का राजत्व सुप्रतिष्ठित होता, उसी गोआके सम्बन्ध में राजा की ऐसी राय जानकर स्वदेश-प्रेमी और स्वार्थशून्य आलबुकर्क का दिल एकदम टूट गया।

---

* The enemy then all retired to the mainland, taking with them nothing but the clothes they wore.—

Portuguese in India,—Danvers.

अन्तमें उन्होंने राजा को जो लम्बा चौड़ा पत्र लिखा था उसकी हर एक लकीर में उनके हृदय का आभास प्रकाशित होता है और उसी पत्र के एक एक अक्षर में उनकी गम्भीर मर्मवेदना प्रकाश पाती है। आल्बूकर्क ने लिखा था :—

आपकी आज्ञासे ही हमने गोआ अधिकार किया है। हमलोगों को भारतवर्ष से निकाल बाहर करने की जो सम्मेलनी हुई थी, गोआही उसका केन्द्र था। इसीसे हमने गोआ अधिकार किया है। गोआ नदीके किनारे तुर्कोंने जो सब जहाज़ तैयार किये थे उनमें भरी हुई तोप, और बारूद और रूमियों के युद्ध-जहाज जो आकर हमलोगों पर धावा करते तो हम लोग फूँक से ही उड़ जाते। पुर्त्त-गालके भीमकाय, महाशक्तिशाली जहाज़ों के आने से भी फिर हम लोगोंकी रक्षा न हो सकती। किन्तु गोआ अधिकार करने के बादही सब आपत्ति दूर होगई है। हमलोग जो चाहते हैं वही मिलता है। गत १५ वर्षके नौ युद्धमें इस देशमें पुर्त्तगाल को जितना सम्मान मिला है एक गोआ विजय ही उसका कारण है।

जिन लोगोंने गोआकी कहानी लिखकर आपके पास भेजी है उनकी बात पर विश्वास रखकर आप जो समझेंगे कि, केवल कोचीन और कनन्धारमें ही किले रहने से इस देश में फिरंगियों का राज्य अकण्टक रहेगा तो आप बिल्कुल भूल करेंगे। क्योंकि वैसा होना असम्भव है। जो पुर्त्तगालके

युद्ध-जहाज एकबार केवल एकही युद्धमें हार जायें तो पुर्त्त गालका ऐसा कोई किला आदि इस देशमें नहीं है कि, हम-लोग फिर स्वाधीनता से एक दिन भी इस देशमें रह कर अपनी धन सम्पत्ति की रक्षा कर सकेंगे। भारत के राजा-लोग जब चाहें तभी हमलोगों को पलभर में निकाल बाहर कर सकते हैं। कारण देखिये, जो कभी कोई फिरंगी इस देशमें किसी आदमी के पास से कोई चीज़ ज़बरदस्ती से छीन लाता है तो तुरन्त वे लोग किलेका दरवाज़ा घेर लेते हैं और तब युद्ध करना ज़रूरी हो पड़ता है। किन्तु गोआमें वैसा नहीं हो सकता। चाहें किसी मूर बनिये के ऊपर अत्याचार हो चाहें फिरंगीका ही निग्रह हो, फिरंगी के अधिनायकके सिवा और किसी के पास वह बात नहीं जासकती। इस देशमें जो लोग हमलोगों के विरुद्ध काम करते हैं, उनका मनोरथ हमने यहां तक नष्ट कर दिया है कि, केम्बे के राजा के माफ़िक एक महा शक्तिशाली नरपतिने भी हमको सन्तुष्ट करने के लिये घबरा कर दूत भेजा है और उन्होंने भी अपनी इच्छासे जिन फिरंगियों को कैद कर लिया था उनको छोड़ दिया है। केवल यही नहीं डिउकी तरह एक अत्यावश्यक स्थान में उन्होंने हमको किला बनाने का अधिकार तक दे दिया है। यह बात इतनी आश्चर्य की है कि, हम खुद इसपर विचार करने का साहस नहीं कर सकते। इसके सिवा कालीकट के ज़मोरिन भी हमसे बड़ी

बिनती करके कहते हैं कि, हम जिसमें उनकी राजधानी में एक क़िला बनावें। यहाँतक कि, वे पुर्त्त गाल-राजको सालाना राज-कर भी देने को तैयार हैं। यह सब हमलोगों के गोआ अधिकारका ही फल जानियेगा। इस के लिये हमको हिन्दुस्थानी राजाओं के साथ एक युद्ध भी नहीं जूझना पड़ा।

हम निःसंशय कह सकते हैं कि, जो डिउ और कालीकटमें दो क़िले बनाकर उन्हें सुरक्षित करलें, तो सुलतान के हज़ार युद्धके जहाज़ आने पर भी ये सब स्थान नहीं छीन सकते।* भारत की नीतिको हम जहाँतक समझ सकते हैं, आपके मन्त्री लोग भी जो वैसेही समझ सकते होंगे तो वे लोग भी यही कहेंगे कि, केवल नौ-शक्ति होने से ही आप भारतवर्ष की तरह एक विशाल साम्राज्य के अधिपति नहीं हो सकते। मुसलमान लोग भी चाहते हैं कि, आप इस देश में क़िला न बनावें, क्योंकि वे लोग खूब जानते हैं कि, जो राज्य केवल नौबलसे प्रतिष्ठित होता है वह अधिक दिन नहीं रहता। वे लोग चाहते हैं कि आराम से अपने अपने देशमें रह कर माल मसाला आदि लेकर स्थल के रास्ते से अपने

*I hold it to be free from doubt that if fortress be built in Diu and Calicut (as I trust in Our Lord they will be) when once they have been fortified, if a thousand of the Sultan's ships were to make their way to India, not one of those places could be brought again under his dominion.—(D. Albuquerque's commentaries.)

आगोके जाने सुने हाट बाज़ारों में बेचे। वे लोग आपकी प्रजा होना नहीं चाहते और आपके साथ मित्रता भी करना नहीं चाहते। आपके साथ वाणिज्य व्यवहार करने को भी तैयार नहीं है। वे लोग जो यह सब कुछ नहीं चाहते तब क्या गोआ में फिरङ्गियों की प्रतिष्ठा देखकर कभी वे सन्तुष्ट हो सकते हैं? गोआ की तरह एक प्रसिद्ध और नितान्त आवश्यक स्थानमें हमारी शक्ति दिन दिन बढ़ती और हमलोगों का गोआकी खूब रखवारी करते देख कर, क्या वे लोग हमें अच्छी तरह बाधा देने की कोशिश न करेंगे?

जिन लोगोंने गोआ का विषय आपको जनाया है उन लोगोंने कहा है कि, गोआको फिरसे ले लेने की बहुत बार कोशिश हुई है। इससे ही समझा जा सकता है कि, आदिलशाह जैसे एक महा प्रतापी राजा के पास से राज्यलाभ करना और भी कितना कठिन है। आदिलशाह इतने दुर्द्धर्ष हैं कि, जो उनसे हो सकेगा, तो वे पुर्त्तगाल का सम्मान और प्रतिष्ठा चूर चूर करके जिस तरह से होगा गोआ उद्धार करनेकी चेष्टा अवश्य ही करेंगे। जब कभी आदिलशाह का कोई सेनापति गोआ के सामने आकर खड़ा होगा तब क्या शत्रु की शक्ति की परीक्षा बिना किये ही हम लोग उनके हाथ अपनी जान सौंप देंगे? यही जो हुजूर की इच्छा हो तो फिर झगड़ा लड़ाई का काम नहीं है। मुसल्मान हो

इस देशके मालिक हों। शक्तिहीन जहाज़ों पर निर्भर करके और खूब धन खर्च करके आप तब भारतवर्ष के मूरोंके बीच में अपनी शक्ति और सम्मान की प्रतिष्ठा की चेष्टा कीजिये।

जिन सब आलसी लोगोंने आपसे कहा है कि, गोआकी रखवारी करने में बहुत धन खर्च किया जा रहा है उन लोगों की बातके जवाब में हम कहना चाहते हैं कि, भारतवर्षकी एक छोटी सी चीज़ का भी दाम इतना ज्यादा है कि पुर्त्त-गालराज की सब अमीनदारी जो गिरों रख दी जाय तब हम-लोगों का जो यहां खर्च होता है उसका कुछ हिस्सा निकले।*
उन लोगोंने यदि यह बात आपसे कही हो कि, हमने गोआ पहिले अधिकार कर लिया है उसीसे उसकी रखवारी करने के लिये हमारा इतना आग्रह है, तो उसका उत्तर यह है कि, भारतवर्ष का खेल दूसरी तरह का देखने की इच्छासे, उन लोगों की राय होने से, आपकी आज्ञा पाते हो हम खुद सबके पहिले किले की दीवार पर कुठार मारते और बारूद खाने में अपने हाथ से आग लगा देते। किन्तु हम जब तक

---

*"The mere dross of India is so great that, if the Portuguese possessions be properly formed by your officers, the revenues from them alone would suffice to repay a great part of these expenses to which we are put."

Letter of Albuquerque to King Dom Manoel

जीवित हैं और जितने दिनों तक भारतवर्ष का हिसाब किताब आपको समझा देने के लिये हम जिम्मेवार हैं उतने दिन गोआ को धक्का नहीं लगने पावेगा। हमारे सब लोग जो गोआ का अंग भंग देख कर हंसेंगे, वह हमसे सहा न जायगा। जितने दिनों तक पुर्त्तगाल से कोई दूसरा शासन-कर्ता आकर हमारा स्थान नहीं लेता, उतने दिनों तक हमें अपने घरके खर्च से गोआकी रखवारी करेंगे।

जिन लोगों को गोआके हाल चालके सम्बन्ध में सन्देह है वे लोग जो हमारे साथ सहमत न होसकें तो महाराज आप जानियेगा कि अभी भी अकेला एकही आदमी गोआ शासन कर रहा है। यद्यपि हम बूढ़े और कमज़ोर हो गये हैं तब भी जो महाराज ऐसा हुक्म दें कि, मुसल्मानों का राज्य, हम अपने इच्छामत सहायता करनेवाली सेनाओं में बाँट कर दे सकते हैं, तो इस राज्यका भार हम खुद लेनेको तैयार हैं। चिर अशिक्षित, अभद्र पुर्त्तगीज़ोंने मन्दिर में अचल पुतलियों की तरह घरमें बैठे रह कर हमारे विरुद्ध झूठी गवाही दी है इससे आप हमको एक छोटासा तह-सीलदार समझ कर हर साल हमारे कामकाज का हिसाब किताब न माँगा कीजिये। वरन हमारा उपयुक्त सम्मान किया कीजिये और धन्यवाद दिया कीजिये; कारण हमारे पास जो कुछ है वह अचल है। सब खर्च करके हम अपने शुरू किये हुए कामको पूरा करेंगे।

अन्तमें हमारी यह प्रार्थना है कि, आज हो, कल हो, चाहे दसदिन बाद हो जो आप गोआ नगर तुर्कियों के हाथमें दे देंगे तो हम समझेंगे कि, भारतवर्ष में फिरङ्गियों के राजत्व का अवसानही परम पिता का अभिप्राय है। महाराज यह निश्चय जानियेगा कि, हमारे हाथमें जितने दिन शासनभार स्थापित रहेगा उतने दिन हम काल्पनिक राज्यका चित्र लिखकर आपके पास न भेज सकेंगे। भुजाओं के बल से जितने राज्य जीतेंगे और भविष्यत् की ओर देखकर सुरक्षित करेंगे, हम केवल वही सब चित्र भेजेंगे। गोआके सम्बन्ध में यही हमारा अभिप्राय है।

नरपति इमैन्युएल बड़े विचक्षण थे। उन्होंने आलबुकर्क का यह कड़ा लेख पढ़कर बड़े सन्तुष्ट होकर उनको अशेष धन्यवाद दिया और लिखा कि "गोआ की खूब रखवारी करो। हम समझ गये हैं कि गोआ नगर के ऊपर ही भारतवर्ष में पुर्त्तगाल की प्रतिष्ठा निर्भर करती है।" आल्-बुकर्क ठण्डे हुए। भारतवर्ष के भाग्य की परीक्षा समाप्त हुई।

सोलहवां अध्याय।

फिरङ्गी लोग इस देशमें केवल व्योपार करने आये थे, इस देश को जीतने नहीं आये थे। वाणिज्यकी ही उन्नतिके लिये भारतवर्ष के नाना स्थानों में सुदृढ़ किले बनाने की

कोशिश करते थे। उस उद्देश्य को पूरा करने के लिये उन लोगों के न करने लायक कोई काम ही नहीं था। केवल रूमके तुर्कियों के धावे का भय ही समय समय पर उनको घबरा देता था। तेजस्वी आलबुकर्क फिरङ्गियों के उस भयको बहुत कुछ दूर करने में समर्थ हुए थे और उसीसे उन्होंने फिरङ्गी नृपति को बारम्बार लिखा था 'इस देशमें अब व्यौपारी जहाज़ भेजने की कुछ ज़रूरत नहीं है। जहाज़ों की संख्या यहां कम नहीं है। हमको अब बहुत सा युद्धका सामान चाहिये।' अनन्त अत्याचार के स्रोत में भारतभूमि को डुबाकर, निरपराधी शान्त, शिष्ट प्रजाओंका खून बहाकर, शानदार तलवार को कलङ्कित करके पुर्त्तगाल के फिरङ्गी बनियों ने इस देशमें प्रतिष्ठा लाभ की थी। उन लोगोंने सिद्धान्त किया था कि एशियावासी मात्र ही दयाके पात्र नहीं हैं।* विक्रम सम्वत् १५६३ में जब चेउल में फिरङ्गियों की तोप गर्जी, और उस गर्ज्जना से महाराष्ट्र प्रदेश भर कांप उठा था, तब भी उस देशमें स्वाधीन मुसल्मान राजा रहते थे। किन्तु वे सब फिरङ्गियों की तोप की गर्ज्जना सुन कर मारे डरके बिलों में घुस गये। अपना अपना क्षुद्र स्वार्थ और हीन आत्म-कलह परित्याग न करके उन लोगों ने जान बूझ

* The permanent attitude of the Portuguese to all Asiatics, who resisted, was void of compunction—W. W. Hunter.

१५०० खीष्टाब्द वा ईसवी सन्। Nov 23,150

कर अपने पैरों में कुल्हाड़ी मारी। विदेशी लुटेरों को खूब यत्न से अपने अपने घर का रास्ता दिखाया और जान बूझ कर लक्ष्मी को लात मार कर दूर करके अन्तमें आक्षेप करने लगे। सम्वत् १५६४ ‡ में जब फिरङ्गियों के युद्ध-जहाज़ धवल (Dabul) नदी में घुसे, उस समय लूट मार और अत्याचार की बिल्कुल फ़ुरसत नहीं थी। फिर-ङ्गियोंने जो द्वीप पहिले जीता था, वही अब गोआके नामसे इतिहास में प्रसिद्ध है। फिरंगी बनियों ने पुर्त्तगाल को लिखा—

"धवल के अधिवासी लोग कुत्तों के समान हैं। उन लोगोंको खाली तलवार हाथमें लेकर ही शासन करना होगा।" † आगे ही हमलोग देख चुके हैं कि फिरंगी आलबूकर्कने गोआके लिये कितना आयाम स्वीकार किया था। यद्यपि वीर यूसुफ़ आदिलशाह ने रणमत्त फिरंगी बनियों के हाथों से गोआ को बचानेकी चेष्टा की थी, किन्तु वे कृतकार्य्य न हो सके। † गोआ जीतकर आलबूकर्क की राज्य पाने की लालसा धीरे धीरे बढ़ी। वे मलक्काद्वीप और अदन वगैरः जीतने के लिये निकले। फिरंगियोंका

‡ Duff's History of the Maharattas.

† Letters from Joan de Lima for the King, dated Cochin, December 22, 1518.

१५०८ ई०

पराक्रम उस समय अजेय था। उन लोगोंके लड़ाईके जहाज़ को देखते ही इस देशके लोग प्राण लेकर भागते थे। जो लोग विघ्न करने की चेष्टा करते थे वे फिरङ्गियोंके पैशाचिक शासन-दण्डसे सदाके लिये शान्त कर दिये जाते थे। हिन्दुस्तान के राजाओंने बिल्कुल असमय में फिरङ्गियोंको छेड़ना आरम्भ किया था। बिल्कुल असमय में उन लोगों की घोर निद्रा भङ्ग हुई थी। उसीसे वे लोग कृतकार्य्य न हो सके। विजयपुर और अहमदनगरके दो राजे सम्वत् सोलह सौ सत्ताइस * (१६२७) में फिरङ्गियोंके साथ जीवन मरण की चिन्ता छोड़कर युद्धमें भिड़ भी गये और उन लोगोंके हाथसे गोआ नगर को छीन लेनेका यत्न भी किया। पर "का वर्षा जब कृषी सुखाने, समय चूके पुनि का पछिताने" समय खोकर चेष्टा करनेसे क्या फल हो सकता है? उन लोगोंकी पराजयकी कहानी के साथ घृणित घूस—रिशवत—का चित्र खींचकर इतिहासने उस समय के वीरों के मुँहमें कालिख लेप दिया है। इतिहास साफ़ साफ़ कह रहा है कि, उस विपदके दिनोंमें भी निजामशाहके प्रधान प्रधान कर्म्मचारी लोग फिरङ्गियों की दी हुई अच्छी अच्छी शराब घूस में लेकर ऐसे मतवाले हो चले थे कि, फिरङ्गी बनियों को जय लाभ करना लड़कोंका खेल होगया था।

---

* ईस्वी १५७१

चारों ओर जयलाभ करके आल्बूकर्क कालीकट वाला क़िला बनानेमें व्याकुल हुए। कानानोर और कोचीनके राजाओंने यद्यपि ऊपरसे आल्बूकर्क के साथ मित्रता रक्खी थी, किन्तु जिसमें समूरि राज (ज़मोरिन) फिरङ्गियोंकी इच्छा पूर्ण न करें, उस विषय में उन लोगोंने पूरी पूरी चेष्टा की थी। आल्बूकर्कके भतीजे नरकटाने दूत बनकर कालीकट में आकर समूरिराज से मेल करनेका प्रस्ताव किया। उस सन्धिकी अद्भुत शर्तों को देखनेसे ज्ञान पड़ता है कि उस समय फिरङ्गी लोग जो चाहते वही कर सकते थे। सन्धिका प्रस्ताव पूरे छलकी तरह मालुम होता है; नहीं तो किसी स्वाधीन राजासे परदेशी वणिक इस प्रकारकी भिक्षा नहीं माँग सकता। नरकटा ने प्रस्ताव किया:—

(१) कालीकटमें फिरङ्गियोंको क़िला बनानेके लिये स्थान देना होगा। (२) कालीकटमें जितनी मिर्च उत्पन्न होगी वह सब फिरङ्गी बनियोंको देनी होगी। फिरङ्गी लोग उसके बदले में अन्यान्य वाणिज्य-द्रव्य देंगे। कालीकटका सब अदरख फिरङ्गी लोग खरीद लेंगे। (३) आगे मूर बनियोंने फिरङ्गियोंका जो सब धन रत्न लूट लिया है वह समस्त फेर देना होगा। (४) फिरङ्गियोंके बनाये हुए नये क़िलोंका खर्च और जितने फिरङ्गी उसकी रक्षा करनेके लिये रक्खे जाँयगे उनका भी थोड़ा बहुत खर्च समूरि राजको देना होगा।

यह सब प्रस्ताव हाथमें भिक्षा माँगनेका तुम्बा लिये हीन फिरङ्गी भिखारियोंकी 'कातर प्रार्थना' समझी जाती थी। समूरिराज वह प्रार्थना मञ्जूर तो न कर सके; किन्तु उन्होंने साफ़ साफ़ खोलकर उत्तर देनेका भी साहस नहीं किया। आल्बूकर्क ने तब एक घृणित कौशल (हिकमत) का अवलम्बन किया। राज्यके लोभी राजा के भाईको अपने हाथमें करके वे कालीकट के सर्वनाशका बन्दोबस्त करने लगे। उन्होंने बेखटके राजाके भाईसे कहा कि 'यदि तुम किसी प्रकारसे विष देकर समूरिराजको मार डालो, तो तुमको हम कालीकट का राजा बना देंगे।' नरकुल कलङ्क पापी ज़मोरिनके भाईने इस घृणित प्रस्तावमें सम्मत होकर ज़हर देकर समूरिराजको मार डाला।

मूरोंमेंसे बहुतेरे, उस समय भी, फिरङ्गियोंको राज्यमें न आने देनेका उपाय कर रहे थे। किन्तु भ्रातृहन्ता नये ज़मोरिनने उन सबको अपने सामने मरवा डाला और विदेशी मूर बनियोंको बालबच्चों समेत अपने राज्यसे निकाल बाहर करके, फिरङ्गियोंके चरण कमलोंमें तेल देना आरम्भ कर दिया।

हत भाग्य ज़मोरिनने भाईके दिये हुए तेज़ विषका पान करके प्राण त्याग दिया। आलबूकर्कको बहुत दिनोंसे पाली पोषी आशा सफल हुई। कालीकटमें फिरङ्गियोंका क़िला सिर उठाकर उस कलङ्क कारिखसे लपेटे हुए चित्रका अमर साक्षी बनकर खड़ा हुआ। भारत महासागरका अनन्त

नील जल चण चणमें उसके चरणोंको धोकर पीने लगा। समूरि राजके साथही साथ हिन्दू मुसल्मानोंकी प्रधानता भी भारतवर्षके उपकूलसे सर्व्वदाके लिये चली गई। फिरङ्गियोंने नये ज़मोरिनके साथ सन्धि करके, भारतवर्ष के किनारे अपना पूरा पूरा ज़ोर जमा लिया। उनके सन्धि-पत्रमें लिखा था:—
— "पारा, सेंदुर, तांबा, मूँगा, रेशमी कपड़ा, फिटकिरी, रोली (कुंकुम) और पुर्त्तगालसे जो अन्यान्य चीज़ें लायी जायँगी वह सब कालीकटके बन्दरमें और पुर्त्तगीज़ोंकी कोठी में बेची जा सकेंगी। समूरिराजके राज्यमें जितने प्रकार का गरम मसाला और औषधि आदि द्रव्य पैदा होती हैं, वह सब रफ़्तनी (Export) के लिये पुर्त्तगीज़ों को दिया करेंगे और फिरङ्गी लोग दाम देकर वह सब चीज़ें ख़रीदा करेंगे। ख़रीददार लोग उनसे जो कुछ ख़रीदेंगे उसका महसूल भी वे ही लोग देंगे। हरमुज, सुम्बा, मलक्का, सुमात्रा और सिंहल वग़ैरः स्थानोंसे जो सब मुसल्मानी व्योपारी-जहाज़ समूरिराजके राज्यमें आवेंगे उनसे उचित कर लिया जायगा। कानानोर और कोचीनके जहाज़ोंको छोड़कर किसी दूसरे स्थानसे जो जहाज़ माल लेने आवेंगे, उन्हें पुर्त्त-गीज़ लोग माल देंगे। देशी व किसी पुर्त्तगीज़ के आपसमें झगड़ा तकरार करनेसे समूरि राज देशीका और फिरङ्गियों के क़िलेके सरदार फिरङ्गीका विचार करेंगे। समूरिराज को जो कुछ आमदनी होगी उसका आधा भाग पुर्त्तगाल-

राज ले लेंगे। ज़रूरत होनेसे पुर्त्तगालको सेना समूरिराज की सहायता करेगी और समूरिराजकी सेना फिरङ्गियोंकी सहायताके लिये अग्रसर होगी। फिरङ्गी लोग जितनी गोल मिर्च और अन्यान्य पदार्थ खरीदेंगे उनका दाम वे दूसरे वाणिज्य द्रव्य देकर पूरा कर दिया करेंगे और सब तरहका कर देनेके लिये वे लोग वाध्य न रहेंगे।

ज़मोरिनने इस सन्धि-पत्रको परम आशीर्व्वाद समझकर सिर पर चढ़ा लिया।

सत्रहवाँ अध्याय।

Even a high minded soldier and devout cavalier of the Cross like Albuquerque believed a reign of terror to be necessity of his position and in giving no quarter, he best rendered service to Christ and acted with the truest humanity in the long run to the heathen. :—Sir W. W. Hunter.

आलबूकर्क की मनोवाञ्छा पूरी हुई। वे पहिलेसे जानते थे कि, भारतवर्ष के तीर पर फिरङ्गियों को जितने युद्ध करने होंगे उनमें छोटे छोटे सामन्त राजाओं को ही जीत लेनेसे पुर्त्तगालकी प्रतिष्ठा न होगी। पुर्त्तगाल जब मिले हुए मुसल्मानोंका बल तोड़नेमें समर्थ होगा, तभी उसका ज़ोर भारतवर्ष में जमने पावेगा। अन्तमें अलबूकर्कको सभी कामनाएँ पूर्ण हुई थीं।

भारतवर्ष का वाणिज्य अकेले अपने हाथमें कर लेनेके लिये पुर्त्तगाल जीव जानसे कोशिश कर रहा था। आलबूक्-र्कने कहीं तो कृपाणके बलसे और कहीं कौशलसे सन्धि करके अपने उद्देश्यको पूरा किया था और प्रधानता पाकर बाहु-बलसे उसकी रक्षा करनेका भी बन्दोबस्त किया था। उसी से-इमें, देख पड़ता है कि, फिरङ्गियोंके सुदृढ़ क़िलोंने मलक्का, हरमुज़, कालीकट, कोचीन और कानानूरमें गर्व्व के साथ सिर उठाया था। आलबूकर्क उसीसे भारतवर्षमें फिरंगियों के राज्यकी प्रतिष्ठा करने वाले कहे जाकर इतिहासमें चिरस्मर-णीय हैं। आलोचना करनेसे हमें देख पड़ता है कि, लोहित समुद्रसे लेकर मलक्काके द्वीपों तक सब स्थानोंमें एकही चित्र वर्तमान है। हरमुज़हीकी सन्धि उस चित्रका परिचय देती है। हरमुज़के राजाने भयके मारे स्वीकार कर लिया था कि :—(१) हरमुज़की गद्दी सदा पुर्त्तगालकी प्रजा और आश्रित कहकर प्रसिद्ध होगी। (२) हरमुज़में फिरंगियोंका क़िला और कारखाना बनेगा। (३) वे हरसाल पुर्त्त-गाल-राजको राज-कर दिया करेंगे। इतनाही नहीं, बल्कि जिस फिरङ्गी सेनाने उनको खूब सताया और हलाकान किया था वे उसका भी खर्च जुटा देंगे। फिरङ्गी लोग प्रति-ष्ठाके यही तीन मूल मन्त्र लेकर भारतवर्षमें आये थे और जहां कहीं मिहरबानगीकी नज़र फिरी थी वहीं उस बीज मन्त्रका उच्चारण किया था। जिस बन्दरमें पुर्त्तगाल के

व्यौपारी-जहाज़ आकर लगते वहीं फिरङ्गी लोग बिना महसूल (चुँगी वा कर) दियेही व्यौपार करते थे और उलटा उसी देशके बनियोंके पाससे कर अदा करते थे। पुर्त्तगालकी सन्धिकी नीति हमें बराबर यही एक चित्र दिखाती है।

आलवूकर्क फिरङ्गी सरदारोंमें सबसे चालाक थे। वे छल बल और कौशलसे इसी नीतिका अनुसरण करके चलते थे। अत्याचार करने और खूनकी नदियाँ बहानेमें ज़रा भी नहीं हिचकते थे। कालीकटका इतिहास पढ़नेसे हमें जान पड़ता है कि, चतुर फिरङ्गी बनिये कभी तो पैर दबाकर और हाथ जोड़कर और कभी कृपाणकी चोटसे अपना उद्देश्य पूरा करते थे। कालीकट भारतवर्षके किनारेका एक बड़ा समृ-द्धिशाली वाणिज्य-केन्द्र (व्यैपारका नाका) था। उसमें उस समय अथाह शक्ति थी और ज़मोरिनका बल भी बेहद था। इसीसे फिरङ्गियोंने पहिले कालीकटका आनुगत्य स्वीकार किया था। किन्तु पैर रखने और सिर बचानेका स्थान पातेही, वे लोग ज़मोरिनको ले बैठे। सम्बत् १५६८ में कालीकटके साथ फिरङ्गी बनियोंकी जो सन्धि हुई थी उसके बलसे वे लोग गोल मिर्च और अदरख (Ginger) लेने लगे ; लेकिन उन लोगोंको उसका ठीक ठीक दाम देना पड़ता था। ज़मोरिन ने देशके अधिपति होने पर भी केवल दो व्यौपा री-जहाज़ हरमुज़में भेजनेका अधिकार पाया था। वह भी जब फिरङ्गी बनिये आज्ञा देते तब। पुर्त्तगालसे जितना वाणि-

न्य द्रव्य आता था फिरङ्गी लोग उस समय तक उसका महसूल देते थे।

थोड़ेही दिन बाद फिरङ्गियोंका सुदृढ़ दुर्ग कालीकटमें चोटी फटकार कर खड़ा हुआ। उसके साथही ज़मोरिनके गलेकी जञ्जीर और भी कस गई। उसके बाद सं० १५७१ में फिर सन्धि हुई। जञ्जीर और भी सुदृढ़ हो गई। ज़मोरिनने तब पुर्त्तगाल-राज का दासत्व स्वीकार किया और प्रतिज्ञा की कि, फिरङ्गियोंके शत्रु को अपने राज्य में रहने न देंगे। क्रूशके भक्तोंने यहाँ तक कि इस देशके क्रूश-भक्तोंने भी राजकर देनेसे मुक्ति पाई। इतनाही नहीं, ज़मोरिनने पुर्त्तगीज़ों के व्यौपारका भी आधा खर्च देना स्वीकार किया।* चतुर फिरङ्गी बनिये जितने ज़ोरसे गलेकी जञ्जीर खींचने लगे, श्वांस-बन्द ज़मोरिन भी उतनेही शिथिल होने लगे; अन्त में स्वीकार किया कि 'हमारे राज्य में जितनी गोल मिर्च और जितना अदरख उत्पन्न होगा वह सब हम बिना मूल्य लिये ही फिरङ्गियों के हाथों में सौंप देंगे। वह सब माल हमारी ओर से पुर्त्तगाल-राजके चरण कमलों में पूजा की तरह दिया जायगा। हम पुर्त्तगाल के शत्रु को सर्वदा अपने राज्य से विताड़ित किया करेंगे।" ज़मोरिन की इच्छा रहने पर भी वे इतना ही कहकर चुप न रहने पाये उन्हें और भी स्वीकार करना पड़ा कि "हम अरब के

* Sir W. W. Hunter.

साथ किसी तरह का वाणिज्य सम्बन्ध न रक्खेंगे। अपनी कोई प्रजा को भी वाणिज्य-पोत लेकर भरब के तीर पर न जाने देंगे। पतन का पथ सर्वदा चिकना फिसलानेवाला होता है। ज़मोरिन उसी फिसलानेवाले रास्ते पर घोर अन्धकार में भहराय पड़े। भलाई बुराई का कुछ खयाल न करके उन्हों ने प्रतिज्ञा कर ली कि "हम एक भी युद्ध-जहाज़ न रक्खेंगे। हरबे हथियारों से भरी कोई पुरानी धुरानी लड़ाई की नाव भी हमारे पास न रहेगी।" ज़मोरिन के पतन का अन्त हुआ। हिन्दू मुसल्मान अँगरेज़ों के न आनेतक भारत महासागर में डूब गये। फिरङ्गियों के विजय ढोल के शब्द से यूरोप खण्डपर्य्यन्त काँप उठा। कालीकट का स्वर्ण सिंहासन और उसी सिंहासन पर बैठकर ज्ञान बुद्धिहीन कठपुतली की तरह राजा और कालीकट की हीरा मोती से सुसज्जित लक्ष्मी भी उस समय फिरङ्गियों के चरण कमलों में अर्घ्य देने लगीं।

कालीकट का जो हाल हुआ था अन्यान्य वाणिज्य-केन्द्रों का भी कुछ दिन बाद वही हाल हुआ। आल्बूकर्क के आगेके सरदार क्याकराल ने कोचीन-राज को आशा दी थी कि किसी न किसी दिन उन्हीं को ज़मोरिन की गद्दी पर बैठावेंगे। आल्बूकर्क के शासन-कौशल्य से भ्रातृहन्ता ज़मोरिन के भाई अन्तमें ज़मोरिन के सिंहासन पर बैठे। कोचीन-राजको और किसीने

फिरके भी नहीं देखा। कारण कोचीन के वर्ण-गन्ध-मधुने उस समय फिरङ्गियों को खूब तृप्त कर दिया था। फिरङ्गियों के कौशल-जालने उस समय कोचीन में जो एक पल्टन थी उसे भी इस तरह उखाड़ फेंका था कि बिल्कुल मारखाने का भय ही न रह गया था। कोचीन-राजने अश्रु-धारा से तराबोर होकर व्यर्थ पुर्त्तगाल-राजको लिखा था कि महाराज! आपने ही हमको सोनेका मुकुट भेजा था। उसको पाकर हमने समझा था कि हम द्वीपों समेत भारतवर्ष के मुख्य राजा होंगे। आपके शासनकर्त्ता ने हम ही को राजा कहकर गद्दीपर बैठाया था और प्रतिज्ञा की थी कि, हमारे गद्दीपर बैठने में जो कोई बाधा डालेगा पुर्त्तगाल की सेना उसे चूर चूर कर डालेगी। हमने भी स्वीकार किया था कि, जितने दिन हमारे शरीर में बिन्दु मात्र भी रक्त रहेगा उतने दिन हम पुर्त्तगीज़ों की रक्षा करेंगे। पुर्त्तगीज़ोंने भी पवित्र मन्दिरमें उपविष्ट होकर हमारी ही तरह प्रतिज्ञा की थी। किन्तु धीरे धीरे बारह वर्ष व्यतीत हुए आजतक उस प्रतिज्ञाका केवल नाम ही नाम वर्त्तमान है। आज पर्य्यन्त वह प्रतिज्ञा पालित नहीं हुई। अब हम देखते हैं कि, आल्बूकर्क कालीकटके साथ सन्धि कर रहे हैं। कोचीन निःसहाय होकर डूबा जा रहा है।"

कुइलन कोचीन की अपेक्षा बल-हीन था। उसकी अवस्था और भी भयानक हो गई थी। कुइलन के अधिवासी

भद्र लोग तथा अन्यान्य मुसल्मानों को बेखटके खीष्ट धर्म्म ग्रहण करने का अधिकार मिला। खीष्टानों के धर्म्म-मन्दिर में जय जयकार होने लगी। कुइलनकी रानीका कुछ दोष न रहने पर भी, वहां पर एक फिरङ्गी मारडाला गया था, इसीके कारण कुइलन को ढाई हजार मन गोल मिर्च दण्ड देनी पड़ी थीं। उसके बाद सम्बत् १५७६ में जो सन्धि हुई उसमें सेण्ट टामस खीष्टान लोग कुइलन में फिरङ्गियों की तोपोंकी छायामें रहकर दिन दिन बलिष्ट होने लगे। कुइ-लनकी सब गोल मिर्च पुर्त्तगाल को भेजी जाने लगीं। रोक-टोक करनेवाला कोई था ही नहीं, पुर्तगीज़ व्योपारी-जहाज़ों ने भी अन्तमें महसूल-मुक्त (Duty free) होकर अबाध व्योपार करना आरम्भ कर दिया।

पारस्य उपसागर में फिरङ्गियों का ज़ोर दिन दिन बढ़ने लगा। सम्बत् १५७१ में आल्बूकर्क के विजय-दर्पने हरमुज़ को अपने अधिकार में करही लिया था। १५७८ में जो सन्धि हुई थी उसमें पुर्तगीज़ोंने रफ़्तनी(Export करनेके लिये जमा किये हुये द्रव्योंके सिवा अन्य समस्त चीज़ोंके लिये महसूल देने से भी छुटकारा पाया। इतनाही नहीं, हरमुज़ फिरङ्गियोंका राज्य हो गया। पुर्तगाल-नरेश इच्छा होने ही से बेखटके सिंहासन लेलेंगे। सन्धि-पत्रमें यह भी पहिलेसे लिखा गया था। 'और जबतक कृपापूर्व्वक पुर्त्तगाल-राज हरमुज़का सिंहासन छीन न लेंगे, तबतक हरमुज़ मणि, मुक्ता और हीरा

आदि देकर प्रतिवर्ष ६०,०००० जिराफ़िन पुर्त्तगाल-राजके चरण कमलोंमें अर्पण करेगा।"

परन्तु लोभी फिरङ्गी बनिये इतने पर भी सन्तुष्ट न हुए। अब यह नियम पास हुआ कि, हरमुज़ में कोइ मुसल्मान हथियार न बाँधने पावेगा। केवल राजा की देहरक्षक सेना (Body guards) और नगरके कोतवाल वगैरः इस नियमसे बचे थे। जो कोई मुसल्मान अस्त्र शस्त्र सहित पकड़ा जाता था उसको प्रथम वार क्षमा मिलती थी। दूसरी वार बेत लगते और तीसरी वार प्राण-दण्ड मिलता था। फिरङ्गियों ने मुसल्मानों को सर्वदा के लिये उखाड़ कर फेंक देना चाहा था। उसीमे और भी क़ानून पास हुआ कि 'मुसल्मान व्योपारियों को सब प्रकारके माल मसालों का महसूल देना पड़ेगा। केवल फिरङ्गियों को इस देश में बिना महसूल व्योपार करनेका अधिकार रहेगा। पारस्य उपसागरका प्रवेश-मुख तो इसतरह से फिरङ्गी बनियों के हाथमें आ गया; पर लोहित सागरका प्रवेश-मुख अपने अधिकार में करनेके लिये आलबूकर्क स्वयम् चेष्टा करके भी, मिश्रके मुसल्मानी वाणिज्य का नाश न कर सके।

उन्होंने मालाबार पर अधिकार जमा लिया और मलक्का के द्वीपों पर फिरङ्गियों का अधिकार हो जाने से मुसल्मानों का जो सिंहल में एकाधिपत्य-वाणिज्याधिकार था वह विलुप्त हो गया। समयानुसार पर्त्तगाल-राजने अपने सेनापतियोंको

राज्यपर अधिकार करने की आज्ञा दी। स्थान स्थान पर पुर्त्तगालकी पताकाएँ उड़ने लगीं। अन्तमें अंगरेज़ बहादुर जब इस देशमें आये तब वे समस्त सिंहासनों पर भारतके चारों ओर पुर्त्तगाल का अधिकार देखकर बड़े ही विस्मित हुए। पर उनके आनेसे भारतने महाविपदसे छुटकारा पाया।

पुर्त्तगीज़ोंने खूब समझ लिया था कि जब तक उन लोगोंका नौ-बल अटूट रहेगा तबतक भारतवर्ष पुर्त्तगालका है। पर उन लोगोंने जब देखा कि पश्चिम भारत में दो राज्य जहाज़ निर्माण करने में बड़े प्रवीण हैं, तब वे कुछ भयभीत हुए। कालीकट और गुज़रात के जहाज़ों में कितना बल रहता था सो फिरङ्गी सरदार आल्मिदा खूब जानते थे। इसीसे डिउका युद्ध जय करने के बाद ही फिरङ्गियों ने आज्ञा दी कि इस देशमें और कोई युद्ध-जहाज़ न बनने पावेगा। दक्षिणमें तब भी कालीकट सुसज्जित जहाज़ लेकर चारों ओर जय कर सकता था। किन्तु फिरङ्गियों के सन्धि-पत्रने कालीकट को बिल्कुल बलहीन कर दिया था। जहाज़ों की बात तो दूर रही, छोटो सी नाव भी कालीकट में न रह गई। सम्वत् १५८० (ई० सन् १५२४) में गुजरात ने स्वीकार किया कि उसके बन्दर में अबसे जहाज़ न बना करेंगे। जिन फिरङ्गियों की नीति ने सूर बनियों का हथियार बाँधना बन्द कर दिया था, उसी नीति ने भारत वर्ष को युद्ध-जहाज़ों से हीन कर दिया। लगभग तीन सौ वर्ष

के बाद लण्डन और लिवरपूल के रोने की आवाज सुनकर कम्पनी बहादुर ने जो किया था, फिरंगियों ने बहुत पहिले ही वह कर डाला था; किन्तु इतना होने पर भी उन्नीसवीं शताब्दी तक भारत में जहाज बनाने का काम जीवित था। *

अठारहवाँ अध्याय।

They (the Portuguese) boldly struck into the wars and intrigues of the native Princes from Africa to the Molaccas, securing substantial returns for their support and finding in each dynastic claimant a stipping stone to power :— Sir, W. W, Hunter.

फिरंगी बनियों ने जितने थोड़े समय में भारतवर्ष में जैसा ज़ोर जमा लिया था और जैसा नाम पाया था, उसे सुनकर जल्दी विश्वास नहीं होता। जान पड़ता है कि, फिरङ्गियों की जीत और उनके ज़ोर जुल्म की बात केवल एक काल्पनिक वा बनावटी कहानी है! और फिरंगी बनियों का इतिहास केवल एक उपन्यास है। सचमुच कठोर नहीं

* The correct forms of ships only elaborated within the past ten years by the science of Europe—have been familiar to India for ten centuries.

Notes on India —Dr Burist Bombay.

है, किन्तु फिरंगियों के इतिहास ने हो हमें पहिले दिखा दिया है कि हमीं ने अपने हाथों से अपना नाश किया है। हमोंने अपने हीरे मोतियोंके महल तोड़ फोड़ कर फेंक दिये हैं, हमोंने अपने विरुद्ध हथियार बांधे हैं। हमने धर्मका बन्धन नहीं माना, अपने देशको नहीं पहचाना और अपनी भलाई बुराई का विचार नहीं किया, इन्हीं कारणोंसे अँगरेजी राज्य न होनेतक हमारी कुलोंकी भी दुर्दशा हुई।

फिरंगी बनिये जब इस देशमें पहिले पहल आये थे, तब उन लोगोंके साथ केवल मुट्ठी भर सिपाही थे। उस मुट्ठी-भर सेना की ताक़त नहीं थी कि वे लोग भारतवर्ष में ज़ोर जमा लेते; किन्तु फिरंगी बनियों ने यहाँ आकर इस देश के अधिवासियोंको अपनी सेना में भरती कर लिया। १५६० (ई० सन् १५०४) में फिरंगी पाक्यो ने जब कोचीनमें युद्ध किया था तब उनके दलमें १५० फिरंगी और २०० मालाबारी सिपाही थे। यही मालाबारी सिपाही लोग सबके पहिले भारतवर्ष के विरुद्ध हथियार उठाकर इतिहासमें कालिख पोत गये हैं। सम्वत् १५६६ (ई० सन् १५१०) में आलबूकर्क ने जब गोआ जय करने की चेष्टा की थी तब उनके आधीन केवल दो सौ इस देशके सिपाही थे; लेकिन कुछ काल बाद उस गोआ की रक्षा के लिये जब युद्ध हुआ था तब उनकी ओरसे एक हज़ार देशी सिपाहियों ने युद्ध किया था और गोआ में फिरंगियों को सुप्रतिष्ठित

करने के लिये अपना प्राण दिया था। बिना सकुचाये अपने भाई बन्धुओं के गले में तीक्ष्णधार तलवार घुसेड़ कर उनके खून की नदियाँ बहाई थीं। गोआको सेना पर फिरंगियों का सम्पूर्ण भरोसा था। आलबूकर्क का ज़ोर जिस समय गोआ पर अच्छी तरह जमा हुआ था उस समय उनके पास केवल एक हज़ार फिरंगी सेना थी; किन्तु इस देश के सिपाहियों की संख्या दो हज़ार थी। इस देश के सिपाहियों को लड़ने की हिकमत (कौशल) सिखानेके लिये पुर्त्तगीज़ोंने कोई बन्दोबस्त किया था कि नहीं सो तो नहीं कह सकते; किन्तु इतिहास पढ़नेसे केवल इतना मालूम पड़ता है कि क्या जलयुद्ध और क्या स्थलयुद्ध सभी जगह उस समय एशिया वासियों की ही सेना का फिरंगियोंको मुख्य सहारा था। सम्वत् १५६८ में जब आलबूकर्क ने अदनपर आक्रमण किया था तब उनके साथ १७०० फिरंगी और ८३० देशी सेना थी। दो वर्ष बाद जब उन्होंने हरमुज़ पर हमला किया था उस समय ७०० देशी सेना उनकी पताकाके नीचे एकत्रित हुई थी। जल-युद्धके इतिहासमें भी देखा जाता है कि फिरङ्गी सरदार मोआंगज़ जब १५७२ में लोहित समुद्रकी ओर बढ़े थे तब उनके साथ ८०० हिन्दुस्थानी नाविक और ८०० इस देश वासियोंकी सेना थी। इस देशकी सेनायें बराबर फिरङ्गियोंके दलको पुष्ट करती रहती थीं। घुड़सवारोंकी सेनामें इस देशका एक भी सिपाही नहीं था। इस देशके

सिपाही उस समय केवल पैदल सेना में काम करते थे।

उन दिनों भारतवर्ष में दास-प्रथा (Slavery) प्रचलित थी। फिरङ्गियोंको उस दास-व्योपारमें इस देशके जितने मनुष्य मिलते थे, उन्हें वे लोग पलटन ही में भरती करते थे। उस समयमें चार शिलिंग (तीन रुपये) होने से ही हिन्दुस्थान में एक दास खरीदा जा सकता था। एक लावण्यमयी सुन्दरी के खरीदने में भी तीन ही रुपया लगता था। इसीसे हम देखते हैं कि सम्वत् १५८६ में जब नानोडाकुन्हा स्रटन जीतनेको चले थे तब उनकी उस विशाल वाहिनीमें ८००० दास काम करते थे।* किन्तु कुछ दिन बाद फिरङ्गी-उपनिवेशों के अधिवासी लोग बड़े स्वेच्छाचारी पदातिक हो गये थे। उसीसे चतुर आलबुकर्क अलेकजण्डरकी तरह इस देशकी स्त्रियोंके साथ फिरङ्गी पैदलोंका विवाह कर देते थे। लिसबनके राज-कोषसे उन नयी व्याही बहुओंको यथोचित अर्थकी भी सहायता मिलती थी और इसी तरहसे क्रूशका धर्म्म भी क्रमशः बढ़ता जाता था। धर्म्म-याजक लोग इस चालको खूब पसन्द करते थे और इस प्रकारसे व्याहे हुए मनुष्यों पर राजाकी भी अधिक कृपा रहती थी।

जब धीरे धीरे मनुष्योंकी संख्या बढ़ने लगी। तब फिरङ्गी लोग खाने पहिननेके मोहताज होने लगे। भूख हमेशा

---

* Dauvers Portuguese in India.

चालाक चाकरको तरह काम करती है। उस भूखने इन असवर्णों का बड़े निठुर समुद्री डाँकुओंके दलमें मिला दिया। वे लोग तब आस पासके राजाओंके निकट अपना अपना अस्त्र शस्त्र बेचकर लुण्ठन-व्यवसायमें नियुक्त हो गये थे।

फिरङ्गी लोग सदा अपने युद्ध-जहाज़ों पर ही निर्भर करते थे।, उन लोगोंके युद्ध-जहाज़ोंनेही उन्हें भारतवर्षके वाणिज्यका एक छत्र सम्राट बना दिया था। पुर्त्तगालसे जितने जहाज़ आते थे उनको छोड़कर गोआ और डामनमें भी अच्छे और मज़बूत जहाज़ निर्म्मित होकर फिरङ्गियोंके बलको पुष्टि करते थे। यहाँ तक कि 'कन्सृन टाइना' नामक एक इस देशके जहाज़ने सत्रह बार उत्तमाशा अन्तरीपकी प्रदक्षिणा की थी और पच्चीस वर्षों तक खूब मज़बूत जहाज़ कहकर प्रसिद्ध था।

फिरङ्गी लोग एशियाके उपकूलमें साढ़े सात हज़ार कोस तक अपना अधिकार जमाकर गुलछर्रें उड़ाते थे। इसीसे जहाँ से जो चाहता वहींसे वे लोग शत्रु पर आक्रमण कर सकते थे। सुविशाल अनन्त सागर सर्व्वदा उनकी रक्षा करता था। समुद्रकी शरणमें रहकर फिरङ्गी लोग मेघनाद की तरह शत्रुओंसे युद्ध करते, उनको हराते और फिर ज़रा भी असुविधा मालूम पड़नेसे क्षणमात्रमें दिङ्मण्डल (Horizon) के निकट अनन्त नीलिमामें लुक जाते थे। वे जहाँ लड़ाईमें जीतते वहीं क़िला बनाते और उसकी रक्षा

करते थे। और कहीं अमानुषिक अत्याचार करके और कहीं बन्दरोंकी तरह घुड़की दिखाकर यहांके अधिवासियोंको वशमें करके आधीनताकी पाशमें बांध लेते थे। लोहित सागर से लेकर एक दम पूर्वके द्वीपों तक समस्त स्थान फिरङ्गियोंके भयसे कांपते थे। उनकी गतिको रोकनेवाली उस समय भारतवर्ष भरमें कोई शक्ति नहीं थी। पुर्त्तगाल-राजने भारतवर्षके प्रत्येक बन्दरकी परीक्षा कर ली थी। एक बन्दर से दूसरे बन्दरकी दूरी और हर एक बन्दरमें जहाज़ बांधनेकी सुविधा तथा असुविधा आदि सब हाल पूरा पूरा मालूम कर लिया था। अफ्रिकासे चीन और चीनसे जापान तक कोई स्थान पुर्त्तगालकी तीक्ष्ण परीक्षासे नहीं बचा था। इन्हीं सब तथ्योंने पुर्त्तगीज़ोंकी प्रतिष्ठाका पथ सुगम कर दिया था। वे लोग तुरन्त समझ गये थे कि लोहित समुद्रके मुंह पर सिंहलके सिंहद्वार पर और मलक्काकी नहरके प्रवेश-मुख पर चौकस चौकीदार रखनेसे ही एशियाका वाणिज्य चिरकाल तक फिरङ्गियोंके चरण तले पड़ा रहेगा। फिरङ्गियोंके पास सुरक्षित दुर्ग थे। दुर्गोंमें अस्त्र शस्त्र और समुद्रमें अयश्चित युद्ध-जहाज़ थे। इन सब युद्ध-जहाज़ोंमेंसे अग्नि-मुख तोपें गरज गरज कर शत्रुओंका हृदय कँपा देती थीं। इसके अतिरिक्त पुर्त्तगीज़ोंका साहस भी अतुलनीय था। उन लोगोंने कौशलसे जो ज़ोर जमाया था, साहसके बलसे उसकी रक्षा भी की थी। केवल कौशल (हिकमत) फैलाने से ही काम नहीं चलता।

पुर्त्तगीज़ लोग भारतके 'परस्पर विवाद' को मध्यस्थ कर के अथवा एक पक्षको दूसरे पक्षके विरुद्ध खड़ा करके और उसे सहायता देकर सर्व्वदा अपना उद्देश्य पूरा करते थे। फिरङ्गियोंके इतिहासमें ऐसे दृष्टान्तोंकी कमी नहीं है। किन्तु इन सब चेष्टाओंके भीतर फिरङ्गियोंका एक महामन्त्र देख पड़ता है। फिरङ्गियोंने अपने स्वार्थके लिये कोई कार्य्य नहीं किया। उन लोगोंका किया हुआ कार्य्य चाहे अच्छा हो चाहे बुरा सभी जन्मभूमिके चरणोंमें अर्घ्यकी तरह दे दिया जाता था। आलबूकर्कने जो भाईको मारनेकी सलाह देकर कालीकटके ज़मोरिनको मरवा डाला था, वह भी उस जन्मभूमिके कल्याणकी वाञ्छासे किया गया था, स्वार्थ साधन करनेकी इच्छासे नहीं!

विदेशी लोग इस देशमें आकर, वाध्य होकर, यहाँके रहने वालोंको अपनी सेनामें भरती करते थे। कारण वैसा न करनेसे चलताही नहीं था। फिरङ्गियोंने जिस दिनसे भारतवर्षमें खड़े होनेको स्थान पाया था उसी दिनसे उन लोगोंको इस देशके अधिवासियोंके द्वारा युद्ध-विभाग पुष्ट करना पड़ा था। उसके बाद मुग़लोंके राज्यके पहिले, अर्द्ध शताब्दी तक,भारतवर्षमें जो अराजकता और विशृङ्खलता नृत्य करती थी, फिरङ्गियोंने उसीकी सहायता लेकर भारतकी सेनासे अपने दल को पुष्ट किया था। किन्तु मुगलों का ज़ोर जबसे अच्छी तरह जम गया था तबसे प्रायः दो सौ वर्ष तक विदेशियोंकी यह

हिकमत पहिलेकी तरह काम नहीं करती थी। मुग़लोंका ज़ोर टूटनेके बाद फिर उपरोक्त नीतिका अनुसरण किया गया।

उन्नीसवाँ अध्याय।

The plunder of the Moslem ships, tributes and ransoms from the coast chiefs, and above all, sea trade, formed from first to last the revenue of Portugal in the East.—Sir, W. W. Hunter.

सैकड़ों योजन दूर रहने वाला पुर्त्तगाल हर साल इस देशमें युद्ध-जहाज़ भेजता था। हर साल लड़ाईके सामान यहाँ आते थे। उच्च श्रेणीके पुर्त्तगालवासी प्रतिवर्ष इस देशमें आकर वाणिज्य बढ़ानेकी चेष्टा करते थे। इन सब व्यौपारों और दुर्ग बनानेमें पुर्त्तगालका जो कुछ खर्च होता था भारतवर्षमें वाणिज्य करके वे लोग उससे बहुत अधिक लाभ करते थे। पुर्त्तगालको निजकी जितनी आमदनी थी उससे इतने भारी खर्चका भार उठानेकी ताक़त उसमें नहीं थी। विक्रम सम्वत् १५५४ से १६६८ तक ८०६ पुर्त्तगीज़ वाणिज्य-पोत (व्यौपारी-जहाज़) वाणिज्य करनेमें लगे थे। भारतमें भेजने लायक़ एक व्यौपारी-जहाज़ तैयार करनेमें मल्लाह आदिका वेतन वगैरः लेकर उस समय ४०७६ पाउण्ड अथवा लगभग ४२७९८ रुपया खर्च होता था। इसके सिवा फिरङ्गी लोग युद्ध करके बहुतसे जहाज़ जीत भी लेते थे और थोड़े बहुत भारतवर्षमें भी तैयार होते थे। यदि हिसाब किया जाय तो देख पड़ेगा कि सौ वर्षमें प्रायः एक

सहस्र व्यौपारी-जहाज़ फिरङ्गियोंकी प्रतिष्ठाके लिये समुद्रमें फिरने लगे थे। यह सब देखने सुननेसे सहजमें जाना जाता है कि भारतवर्षकी अथाह रत्न राशिको लूटकर किस प्रकार फिरङ्गी बनिये कुबेर बन गये थे। वास्कोडीगामाने जब प्रथम वार इस देशसे पुर्त्तगालको प्रत्यावर्त्तन किया था तब इस देशमें फिरङ्गियोंका कुछ भी नहीं था; तथापि डीगामा के अभियानमें जो कुछ खर्च हुआ था उससे साठ गुना अधिक लेकर वे पुर्त्तगाल पहुँचे थे। सम्वत् १६०७ में केवरैल जब स्वदेशको लौटे थे तब "उनके साथ भी बहुत से हीरे मोती आदि थे" ऐसा कहकर फिरङ्गियोंका इतिहास गर्व्व करता है। तीन वर्ष बाद आलबूकर्क भी आध मन मोती और चार सौ हीरेके टुकड़े लेकर— अपने देशको फिरे थे; इसके अतिरिक्त अन्यान्य चीज़ें तो थीं हीं।

सहज और सभ्य उपायोंसे केवल वाणिज्य करके फिरङ्गी लोग जो कुछ लाभ करते थे, लूट मार करके वे उससे बहुत अधिक प्राप्त करते थे। मुसल्मान अथवा हिन्दू राजाओंके व्यवसाई-जहाज़को देखतेही फिरङ्गी लोग उसे लूट लेते थे। इतिहासमें देखा जाता है कि उस समयको एक छोटी सी व्यवसाई नावको लूटकर फिरङ्गियोंने अन्यान्य बहुमूल्य चीज़ों के साथ डेढ़ सौ बहुमूल्य मोती पाये थे। तीन वर्ष बाद विक्रम सम्वत् १५५८ में उन लोगोंने एक नावमें देव मूर्ति पायी थी। वह मूर्त्ति सोनेकी बनी थी। उसका वजन प्राय १५

सेर था, ऐसा इतिहासमें लिखा है। मूर्त्ति की दोनों आँखें भास्कर मणिकी बनी हुई थीं। एक बड़ासा हीरेका टुकड़ा कौस्तुभ मणिकी तरह देवताकी छातीपर जड़ा था। उसके हाथ पैर आदि सब हीरे मोतियोंसे खचित सोनेसे बने अङ्गोंमें सुशोभित थे।

भारतके हीरा, मोती, मणि, चन्दन और इलायची आदिके बदलेमें पुर्त्तगालसे इस देशमें चाँदी आती थी और उसीके साथ काँच, मुँह देखनेका शीशा या आयना, मूँगा, छुरी, कैंची और रङ्गीन कपड़े आदि भी उस देशसे इस देशमें आते थे। अरब और मिश्रसे पुर्त्तगाल अफीमके व्यौपारमें बेहद लाभ करता था। चीन देशके साथ भी आठ सौ वर्षसे अफीमका कारबार हो रहा था। आलबूकर्कके समयमें मलक्कासे जितने चीनके जहाज़ अपने देशको लौटते थे उनमें अफीमही रहती थी। आलबूकर्कने देखा कि भारतवर्षमें भी अफीम पैदा हो सकती है। उन्होंने झट सिद्धान्त कर लिया कि या तो अफीमका व्यौपार ही बन्द कर देंगे, नहीं तो उसे केवल फिरङ्गियोंके हाथका रोज़गार बना लेंगे। किन्तु आलबूकर्ककी वासना पूरी न हुई; उन्होंने अफीमको ढूँढ़ी पुर्त्तगाल ही में आबाद करना आरम्भ किया। वे जानते थे कि भारतवासी लोग अफीमके बिना एक दिन भी जीवित न रह सकेंगे। चतुर आलबूकर्कने यह भी पहलेही समझ लिया था कि अफीमकी आमदनी होनेसे हर साल एक जहाज़ अफीम बिकेगी। वैसाही हुआ भी।

पुर्त्तगालके साथ जो भारतवर्षका वाणिज्य-सम्बन्ध था उसके सिवा फिरङ्गी बनिये मालाबार तीरसे लेकर पारस्य उपसागर और मलकासे जापान तक सब जगहके बन्दरोंमें वाणिज्य करते फिरते थे। उस वाणिज्यमें उन लोगोंको अपरिमित धन मिलता था। पुर्त्तगाल और हिन्दुस्थानके व्यौपारमें एकही जहाज़से पुर्त्तगाल-राजने २२५०००० बाईस लाख पचास हज़ार रुपया (१५०००० पौण्ड) पाया था। इसके सिवा जितना मणि माणिक्य आदि मिला था उसका तो कुछ हिसाब ही नहीं! इतिहास बताता है कि गोआसे चीन तक एक बार जाकर एक जहाज़ी सरदारने एकही जहाज़से ३३७५०० तीन लाख सैंतीस हज़ार पाँच सौ रुपया (२२५०० पौण्ड) लाभ किया था। इसके सिवा उसने अपनी निजकी चीज़ोंको बेचकर भी उतना ही पाया था।

अब देखिये लूटमार करके फिरङ्गी बनिये कितना लाभ करते थे। विद्रु उफरिया नामक एक सरदारको दो वर्षकी लूट मारमें जितनी चाज़ें मिली थीं उनको बेंचकर उसने प्रायः १६५०००० सोलह लाख पचास हज़ार रुपये (११०००० पौण्ड) प्राप्त किये थे *। यह कहानी सुनकर सहसा विश्वास करनेको इच्छा नहीं होती; किन्तु यह कहानी विधाताके निष्ठुर अभिसम्पातकी तरह सत्य है।

समुद्र किनारेके राजा लोग सर्व्वदा धन देकर फिरङ्गी

* Daurers Portuguese in India.

बनियोंको सन्तुष्ट करते थे। केवल गोआ, डिउ और मलका में जो महसूल (शुल्क) मिलता था और समुद्रके तीर परके राजा लोग जो धन देते थे वह जोड़कर ६०००००० साठ लाख रुपये (४००००० पाउण्ड) होते थे। पुर्त्त-गाल-राज उसमेंसे ३३७५००० तेंतीस लाख पचहत्तर हज़ार रुपये (२२५००० पाउण्ड) ले लेते थे। पुर्त्तगीज़ लिखित पुर्त्तगालके इतिहास से जाना जाता है कि फिरङ्गी-राज हर साल इसका दूना धन प्राप्त कर सकते थे। किन्तु उनके आधीन जो विचक्षण चाकर लोग थे उनके मारे वैसा नहीं होने पाता था। सभी लोग अन्तमें भारतवर्ष से बिना परि-श्रम मिलने वाले धनको लेनेकी चेष्टा करने लगे थे; इसीसे पुर्त्तगाल-राजकी आमदनी कुछ दिन बाद कम हो गई थी।

राजा इमैन्युएलने जब पहले पहल उत्तमाशा अन्तरीप का रास्ता पाया था; तब वे अपनी प्रजाके साथ भारतवर्षके वाणिज्यमें शामिल हो गये थे। प्रति वर्ष जितना लाभ होता उसका चतुर्थांश लेकर वे तृप्त हो जाते थे। किन्तु कुछ काल बाद जब देखा गया कि प्रजा इस भारी वाणिज्यसे अधिक लाभ नहीं कर सकती तब राजा स्वयम् उसे अपने नामसे चलाने लगे। मसाले वग़ैरःसे हर साल ६७५००० छः लाख पचहत्तर हज़ार रुपये (४५००० पाउण्ड) आने लगे और साधारण वाणिज्यसे भी आय हुई। हर साल २२५०००० बाईस लाख पचास हज़ार रुपये (१५००००० पाउण्ड), इसके

सिवा लुगठन-व्यवसायमें जो धन मिलता था उसका और राज-कर वा महसूल आदिका भाग लेनेमें राजा स्वयम् कुण्ठित नहीं होते थे। उसमें उन्हें प्रति वर्ष ३३७५००० तेंतीस लाख पचहत्तर हजार रुपये (२२५००० पाउण्ड) मिलते थे; इसीसे देखा जाता है कि भारतवर्ष से पुर्त्तगाल-राज हर साल ६३००००० तिरसठ लाख रुपये (४२०००० पाउंड) प्राप्त करते थे। फिरङ्गी ऐतिहासिक लिखते हैं कि युद्ध आदिके खर्च में ही राजाका सब धन चुक जाता था।

बीसवाँ अध्याय।

फिरङ्गियोंकी भारतीय शक्तिका पतन।*

"नीचैर्गच्छत्युपरिच दशाचक्र नेमिक्रमेण" यह इतिहास का सिद्धान्त अप्रमेय है। जिस द्रुत वेगसे भारतवर्षमें फिरङ्गियोंका उत्थान हुआ था उसी तेज़ीसे उनका पतन भी हुआ। इस वेगवान पतनका कारण दो भागोंमें विभक्त किया जा सकता है। एक तो वाह्य वा बाहरी और दूसरा आन्तरिक वा भीतरी। सम्वत् १६३६ (ई० सन् १५८०) में पुर्त्तगीज़ों के साथ स्पेन (Spain) का जो मेल हुआ था वही फिरङ्गियोंके पतनका मुख्य बाहरी कारण था। महाराज द्वितीय फिलिप (Phillip II) के राज्याभिषेकके साथही पुर्त्तगालके साथ डच और अँगरेज़ोंका युद्ध आरम्भ हुआ। एशियाके वाणिज्य-द्रव्यके लिये जो सौदागर लोग आमस्टरडम (Amsterdam) और लन्दनसे लिसबनमें आते थे उनका आवागमन एक दम बन्द कर दिया गया। अतएव उन लोगोंने स्वयम पूर्वमें आकर

* यद्यपि यह छोटा सा निबन्ध पुर्त्तगीज़ोंके आद्योपान्त इतिहासका यथायोग्य परिचय नहीं दे सकता और इसमें उस प्रकारकी चेष्टा भी नहीं की गई है; तथापि जिस जातिकी बढ़तीका कुछ मुख्य २ हाल पाठकोंने पढ़ा है उसके पतन का भी थोड़ा सा विवरण देना अनुचित न समझा जायगा।

मान मसाला ले जानेका विचार किया और सम्वत् १६५१ (ई० सन् १५८५)में डचोंका प्रथम जहाज़ उत्तमाशा अन्तरीप पहुँचा। सम्वत् १६५७ (ई० सन् १६०१) में अंगरेजोंके व्यवसाई जहाज़ों ने भी उसका अनुसरण किया। यहांपर यह स्मरण रखना चाहिये कि ये सब जहाज़ डच और अँगरेज़ व्यौपारियों के थे ; इनमें से कोई भी राजाकी तरफ़ से नहीं भेजा गया था। पुर्त्तगीज़ों ने यहां ज़बरदस्तीसे घुस आनेवालों को निकाल बाहर करने के लिये बहुत चेष्टा की, किन्तु किसी तरह समर्थ न हुए।

इस असामर्थका कारण फिरङ्गियोंके पतनके भीतरी कारणों में पाया जाता है। स्पेनका मेल ही फिरङ्गियोंके प्रतिस्पर्धियोंको पूर्वी समुद्र में लाया था ; किन्तु उन प्रतिस्पर्धियोंकी जीत खास पुर्त्तगीजोंकी बलहीनताके कारण हुई थी। उस बलहीनता का कारण पुर्त्तगीज़ जातिका चय होना था। केवल तीस लाख मनुष्योंकी बस्तीवाला छोटासा देश पुर्त्तगाल प्रतिवर्ष तीन तीन और चार चार हज़ार योद्धाओंसे भरे हुए जहाज़ोंको पूर्वमें भेजा करता था। इन योद्धाओंमें से थोड़े से मनुष्य ही लौट-कर अपने देशको पहुँचते थे। कितने तो युद्धमें, कितने जहाज़ डूबने से और कितने जलवायुके दोषसे मर जाते थे, और जो लोग बचते थे वे भारतवर्ष की निम्नश्रेणी की स्त्रियों के साथ विवाहित होकर चिरकालके लिये भारतवासी बनने को उत्साहित किये जाते थे। ईसाकी सोलहवीं शताब्दी के

आदिसे लेकर अब तक बराबर पुर्त्तगाल से भारी भारी चुने हुए योद्धा भारतवर्षकी ओर धाराकी तरह बहते चले आते थे। उन योद्धाओं के बदले में पुर्त्तगालको धन अवश्य मिलता ;था किन्तु धन कदापि मस्तिष्क और माँसपेशी (brain & muscles) का स्थान नहीं पा सकता। इसके सिवा पुर्त्तगीज़ों की लोक-संख्या क्षीण हो जानेसे उनके गुण भी शीघ्रही विलुप्त हो गये थे। क्या योद्धा, क्या नाविक और क्या राजकर्मचारी सभी क्रमशः अधःपतित होने लगे थे। सम्वत् १६२६ (ईस्वी १५७०) में गोआके आक्रमण में ही फिरङ्गियों के प्रशंसनीय साहस का अन्त हो गया था। उसके बाद पुर्त्तगीज़ वीरों की वीरता का एक भी उल्लेख नहीं पाया जाता। आल्बूकर्क के मरने के बाद उनकी महाराजकीय कल्पना दूर कर दी गई और वाणिज्य-विस्तार तथा ईसाई धर्म प्रचार के स्थानपर विजय और साम्राज्य की परिकल्पनायें स्थापित की गई थीं।

एशियावासी पुर्त्तगीज़ों का अन्तिम इतिहास उनके द्रुत विनाश की कहानीसे परिपूर्ण है। सम्वत् १६५९ (ईस्वी १६०३) और सं० १६९५ (ईस्वी १६३८) में डचों ने गोआको घेर लिया था। सम्वत् १७१२ (ईस्वी १६५६) में उन लोगोंने कानानोर से और सम्वत् १७१७ (ईस्वी १६६१) में क्विलन के बन्दर नेगापाटम * और कायनकोलमसे तथा सम्वत् १७१९

१ मदरास प्रान्तके तंजोर जिलेमें (१० अंश ४५ कला २१ विकला उत्तर

(ईस्वी १६६३) में कनानोर और कोचीन से फिरङ्गियों को निकाल बाहर कर दिया। डचों की विजय केवल भारतवर्ष में ही सीमावद्ध नहीं थी। उन लोगोंने सम्वत् १६७१ (ईस्वी १६१८) में जावा द्वीप (Isle of Java) में बटेविया (Batavia) की नींव डाली और सम्वत् १६८६ (ईस्वी १६४०)में मलक्का अधिकार करके समस्त व्यंजन उपद्वीपों(spice Islands) को अपने नये राज्यमें मिला लिया। सम्वत् १७-१४ (ईस्वी १६५८) में जकिनापातम के लुट जानेके बाद उन लोगोंने सीलोन (लंका) पर भी अपना पुरा अधिकार जमा लिया था। अँगरेज् लोग डचोंसे कुछ पीछे चे नमें उतरे थे। सम्वत् १६६७ (ईस्वी १६११) में सर हेनरी मिडिल्टन ने कैम्बे में पुर्त्त गीज़ों को पराजित किया। इसके बाद सम्वत् १६७१ (ईस्वी १६१५) में फिरङ्गी लोग सूरतके बन्दर स्वाली में कप्तान बेष्ट (Captain Best) से हारे। इसी तरह धीरे धीरे डच और अंगरेज़ व्यौपारियोंने थोड़े ही काल में पूर्व देशको आच्छादित कर लिया। ईसाकी सत्रहवीं शताब्दी के मध्यमें एशिया के वाणिज्य के साथ फिरङ्गियों का सम्बन्ध एक दम छूट गया। पुर्त्त गीज़ों की पूर्वीय शक्तिका नाश करनेवाले अँगरेज़ नहीं थे, वह सम्राट शाह जहाँ थे।* उन्होंने सम्वत् १६८५ (ईस्वी १६२८) में हुगली

अक्षांश और ७८ अंश ५३ कला २८ विकला पूर्व देशान्तरमें) ताग दत्तन एक कस्बा तथा प्रसिद्ध बन्दर गाह और रेलवे ष्टेशन है।

* सूवे बंगालके बर्दवान विभाग में (कलकत्तेसे १२ कोस पश्चिम। रेलवे

को अपने अधिकार में करलिया और एक सामान्य लड़ाई के बाद १००० एक हज़ार फिरङ्गियों को कैद कर लिया। उसके बाद सम्वत् १६७८ (ई० सन् १६२२)में परसियाके शाह अब्बा-सने अरमुज (Ormuz) को लूटा। सं० १७२६ ई० १६७०, में थोड़से अरबियोंने मस्कटसे आकर डिउ बन्दर को लूटा। इसी डिउ के दुर्गने फिरङ्गी सिलवीरा और मस्कारेनूहस Silvi-era & Mascorenus) के आधीन रहकर मुसल्मानोंकी महान शक्ति का जल और स्थल युद्धोंमें समान प्रतिरोध किया था।

इसी समय महाराष्ट्रियों ने भी फिरङ्गियोंके भारतवर्षीय राज्यको लूटना सहज समझा और सम्वत् १७९५ (ई० सन् १७३८) में इन दुरद्धर्ष योद्धाओं ने वेसिन को लूटा और साथ ही साथ गोआकी दीवारों तक अपना आक्रमण बढ़ाया। अठारहवीं शताब्दी में पुर्त्तगीज़ों ने महाराष्ट्रियों के हाथसे अपने स्वत्व की रक्षा करनेके लिये जी जानसे चेष्टा की और उसमें वे लोग कृतकार्य्य भी हुए। इस महान चेष्टासे गोआ का सूबा बहुत बढ़ गया। अन्तमें यह बात स्मरण रखने

[illegible]से दो मील दूर हुगली नदीके दहिने अर्थात पश्चिमी किनारे पर जिलेका सदर [illegible] हुगली एक कसबा है। पुर्तगीज़ोंने सन् ईस्वी १५३७ सम्वत् १५९३ में इसको [illegible] और पीछे हुगलीके वर्त्तमान जेलखाने के निकट एक क़िला बनवाया जिसके [illegible] अबतक विद्यमान हैं। ई० सन् १६३२ (सम्वत् १६८८) में दिल्लीके [illegible] शाहजहांने पुर्तगीजोंकी शिकायत सुनकर हुगलीमें एक बड़ी सेना [illegible]। क़िला तोपोंसे उड़ा दिया गया। एक हजार से अधिक पुर्तगीज़ मारे गये [illegible] लगभग १००० स्त्री पुरुष आगरे भेज दिये गये। बहुत मुसलमान बनाये गये।

योग्य है कि सम्वत् १७१७ (ई० सन् १६६१) में फिरङ्गियों ने बम्बई उपद्वीप ब्रगंज़ा की कैथराइन (Catharine of Braganza) के दहेज में इँगलैण्ड को समर्पण कर दिया।

फिरङ्गियोंका बचा खुचा स्वत्व गोआ, दामन और डिउ आदि अब इतने शक्तिहीन हो गये हैं कि अँगरेज़ के भारतीय साम्राज्य के विरुद्ध वे टिक ही नहीं सकते। वे अब पुर्त्तगीज़ों के लाभ के लिये नहीं, वरन् केवल उनकी गतकालीन विजय के स्मारक की तरह पर रक्षित हैं। सम्वत् १८३४ (ई० सन् १८७८) में पुर्त्तगीज़ों के साथ एक सन्धि हुई थी। उसमें पुर्त्तगीज़ों ने अँगरेज़ सरकार को निमक बनाने और राज्यकर अदा करनेका अधिकार समर्पण कर दिया। उसके बदले में अंगरेज़ों ने उन्हें वार्षिक चार लाख रुपया देना स्वीकार किया। यह धन गोआके निकटवर्त्ती मर्मगाँव नामक स्थानमें रेलकी सड़क बनाने के लिये बन्धक के तौर पर रख दिया गया। मर्मगाँव में एक बड़ा सुन्दर बन्दर है। वह सम्भवत: कुछ दिनों बाद बिजापुर और उसके निकटवर्त्ती ब्रिटिश (अँगरेज़ी) राज्यमें उत्पन्न होनेवाली रूईकी रफ्तनीका बन्दर बनाकर अपनी समृद्धिको बढ़ावेगा।

फिरङ्गियोंके गतकालीन आधिपत्यका एक मनोरञ्जक ध्वंसावशेष यह था कि, उन लोगों को भारतवर्ष भरमें रोमन कैथलिक प्रधान धर्म्माध्यक्ष के नियुक्त करने का अधिकार था। यह अधिकार सोलहवीं शताब्दी में स्वाभाविक था किन्तु

उन्नीसवीं शताब्दी में वह अनर्थक होगया। इस अधि-कार के सम्बन्ध में पुर्त्तगाल-राज के साथ पोप महाशय का जो विवाद उपस्थित हुआ था, वह थोड़े दिन हुए एक नियम द्वारा तय कर दिया गया है।

भारतवर्षीय पुर्त्तगीजोंके बारेमें तुहफ़तउल मुजाहिदीन नामक ग्रंथमें एक सुविज्ञ ग्रंथकार शेख जीनउद्दीन लिखते हैं :—

"फिरङ्गियों का सर्व्वसाधारणपर अत्याचार और ख़ास-कर मुसल्मानोंके साथ विद्वेष इतना बढ़ गया था कि उससे घबराकर देशभर के अधिवासी उद्विग्न और उन्मत्त हो गये थे। यह भयङ्कर अत्याचार कोई आठ वर्ष तक बराबर चलता रहा और अन्तमें मुसल्मानों की दुरावस्था की शेष सीमा तक पहुँचाकर शान्त हुआ। उस समय मुसल्मा-नोंमें इतनी शक्ति नहीं थी कि वे लोग अपने शत्रुओंको विता-ड़ित कर सकते अथवा उनके अत्याचार से अपनी रक्षा करते। जिन मुसल्मान राजा बाबुओं के पास भारी भारी फौजें और यथेष्ट युद्धका सामान था वे लोग ऐसे ऐश आराम में मस्त थे कि अपने दीन हीन स्वदेशवासी और स्वजाति की आपत्ति की ओर बिल्कुल ध्यान ही नहीं देते थे ; यहाँ तक कि ये जुल्मी काफ़िर (नास्तिक) हाथ से अपने देश और जाति धर्म्मकी रक्षा के निमित्त एक पैसा भी देनेको प्रस्तुत नहीं होते थे।"

"फिरङ्गियों ने मुसल्मान-धर्म्म को नाश करने और इस्लाम के सेवकोंको खृष्टान धर्म्मावलम्बी बनाने के लिये, क्या साधु क्या असाधु, क्या छोटे क्या बड़े, क्या शक्तिशाली और क्या बलहीन किसी को भी कष्ट देनेमें त्रुटि नहीं की थी (ईश्वर ऐसी आपत्ति से सर्व्वदा हमारी रक्षा करे)। इस अमानुषिक अत्याचार के रहते भी फिरङ्गी लोग ऊपर से मुसल्मानों के प्रति बड़ा शान्त भाव प्रदर्शित करते थे, इसका कारण यह था कि समुद्र-तीर के बन्दरों के मुख्य भागोंमें मुसल्मान ही वास करते थे...अन्तमें यह बात भी कहने योग्य है कि फिरङ्गी लोग केवल मुसल्मानों ही से द्वेष और घृणा करते थे और मुसल्मानों ही के धर्म्म को अवज्ञा करते थे। नायर और पैगानों से वैसी घृणा नहीं करते थे।*

काँजीवरम के वेङ्कटाचार्य्य नामक एक ब्राह्मण ने सोलहवीं शताब्दी में विश्वगुणादर्श नामक अपने संस्कृत पद्य ग्रन्थमें पुर्त्तगीज़ोंके सम्बन्ध में लिखा है :—

"हूना (फिरङ्गी) लोग बड़े नीच, गर्हणीय और निर्दय होते हैं। वे लोग ब्राह्मणोंका लेश मात्र भी मान नहीं करते और किसी प्रकार के पूजा पाठ को पवित्रता को नहीं मानते। उनके पापों का पारावार नहीं है ; किन्तु वे लोग संयमी और सत्यप्रिय होते हैं। उनलोगोंका शिल्प विद्या में ज्ञान और नियम (Law) का मान प्रशंसनीय है।"†

---

* Tuhfut ul Mujahideen P P. 6,7,10 109, 120

‡ यह ग्रन्थ निर्णय सागर प्रेस बम्बईमें छपा है और वहींसे मिल सकता है।

उपसंहार ।

यद्यपि इस छोटे से ग्रन्थ में हमसे जहाँ तक हो सका है हमने थोड़ेही में पुर्त्तगीज़ोंके भारत सम्बन्धी इतिहासका पूरा पूरा दिग्दर्शन किया है किन्तु इस समय देशकी अवस्था कुछ शोचनीय होनेके कारण हमारी सम्पूर्ण इच्छाएँ पूर्ण नहीं हुईं। जो हो पुर्त्तगीज़ोंके सम्बन्धमें हम जो कुछ लिख सके हैं उससे अधिक जानने की जिनकी इच्छा हो वे निम्नलिखित पुस्तकों की सहायता से जान सकते हैं ;—

(1) A Tentative list of books and some mss. relating to the History of the Portuguese in India proper by Dr. A. C. Barnell. Mangalore 1880 P. 131.

(2) The Commentaries of Albuquerque by Braz de Albuquerque published in 1557. Reprinted in 1576 and Republished in four Volumes in 1774. Translated into English for the Hakhyt society by Walter de Gray Birch in four volumes. 1875—1884.

(3) Carlas do Affonse de Albuquerque, se guid as di documentos que as elucidam. Edited by Raymundo Antonio de Bulhao Pato. Published in 1884 under the direction of Academia Real das scienciaus de Lisbon.

(4) Asia : dos Feitos que as Portuguezes fizeram no descobrimento e conquista dos mares e Terras do Oriente By Joao de Barros. It is written in imitation of Livy, and is divided into Decades. The first Decade was published in 1552, the second in 1555, the third in 1563. and the fourth after author's death in 1615, and it

carries the history down to 1539. [illegible] is that in nine volumes, Lisbon, 1777—78.

(5) Lendas da India by Gasper Correa; [illegible] at [illegible] in four volumes, 1858—64. A portion of this work [illegible] been translated by Lord Stanley of Alderley for the Hakhuyt society, under the title [illegible] the three Voyages [illegible] Vasco da Gama, and his Viceroyalty, [illegible].

(6) Historia as Descobrimento [illegible] da India pelos Portuguezes, Fernao Lopes de Castanheda.

(7) Commentarines Rerum Gesta[illegible] in India citra Gang[illegible] a Lusitanis, Louvain, 1539: this is a small early work.

इन उपरोक्त पुस्तकों के सिवा और भी कई एक छोटे मोटे ग्रन्थ हैं जिनमें पुर्त्तगीज़ों के भारतवर्ष सम्बन्धी पुरावृत्त विवरण का जानने योग्य संग्रह किया गया है; किन्तु इन्हीं सात ग्रन्थोंके मुख्य समझे जानेके कारण हमने यहां पर केवल इन्होंका नाम लिखा है। इस पुस्तक की भूमिका में जिन पुस्तकों का नाम दिया गया है उनमें भी पुर्त्तगीज़ों का बहुत हाल मालूम हो सकता है।

Perfect I call Thy plan,
Thanks that I was a man!
Maker, remake, complete,
I trust that Thou shall [illegible].

Browning

रामनाथ पांडे।

संयुक्तांश।

कान्नानोर वा कननूर।

मदरास अहातेके मालाबार जिलेमें (११ अंश, ५१ कला, १२ विकला उत्तर अक्षांश और १५ अंश, २४ कला, ४४ विकला पूर्व्व देशान्तर में) समुद्रके किनारे एक तालुकेका सदर स्थान और फ़ौजी स्टेशन कननूर है। कननूर एक प्राचीन बन्दर गाह है। इस बन्दर गाहमें किनारेसे २ मील दूर लङ्गरकी जगह है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय फ़ौजी छावनीके साथ कननूर क़सबे में २७४१८ मनुष्य थे ; अर्थात् १३२७३ मनुष्य और १४१४५ स्त्रियाँ। इसमें १२५६८ मुसल्मान, ११७०७ हिन्दू, ३११० क्रस्तान, ३० पारसी, और ३ जैन थे।

कननूरके चारों ओर पहाड़ियाँ और तङ्ग घाटियाँ और जगह जगह पर नारियलके वृक्षोंके झुण्ड हैं। एक अन्तरीप पर क़िला है, जो अँगरेज़ी अमलदारी होनेके पीछे मज़बूत किया गया है। ३० फ़ीटसे ५० फ़ीट तक ऊँची एक खड़ी पहाड़ीके किनारों पर अँगरेज़ी अफ़सरोंके बहुतसे बँगले बने हैं। कननूर में सरकारी कचहरियाँ जेलखाने, स्कूल, अस्पताल, कष्टम हौस, बहुतसे आफ़िस, बहुतेरी मसजिदें (जिन

में दो प्रसिद्ध हैं) और अनेक मिशन हैं। छावनीमें यूरो-पियन और एक देशी पैदलकी रेजीमेन्ट अर्थात पल्टन रहती है। कननूरका पवन पानी मुलायम, एक रस तथा स्वास्थ्य-कर है।

इतिहास—सन् १४९८ में पुर्त्तगाल का वास्कोडीगामा कननूरमें आया। उसके ७ वर्ष पीछे उसने वहां एक कोठी बनाई। सन् १६५६ में हालैण्डवाले कनानूर में बसे। उन्होंने अपनी रक्षाके लिये कनानूरके वर्त्तमान किलेको बनवाया। सन् १७६६ में मैसूर के हैदरअलीने हालैण्डवालोंसे कनानूर का किला छीन लिया। सन् १७८४ में अंगरेज़ोंने कनानूर को ले लिया और वहाँका राजा ईष्ट इण्डिया कम्पनीके आधीन हुआ। उसके ७ वर्ष बाद अंगरेज़ोंने फिर कनानूरको लेकर अपने राज्यमें मिला लिया।

कोचीन।

समुद्रके बन्दर गाहके पास मदरास अहातेके मालाबार ज़िलेमें कोचीन तालुकेका सदर स्थान कोचीन कसबा है। कोचीनके बन्दर गाहसे साप्ताहिक आगबोट सीलोनके कोल-म्बोको जाते हैं। किनारेसे डेढ़ मील दूर जहाज़के लंगरका स्थान है। रेलवे स्टेशन तुतिकुड़ीसे अथवा कालीकटसे आगबोट द्वारा कोचीन जाना होता है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कोचीन कसबेमें

१७६०१ मनुष्य थे; अर्थात् ८७६८ क्रस्तान, ४७१६ हिन्दू ३०८० मुसल्मान और २७ यहूदी।

(२) कोचीन क़सबेमें सरकारी कचहरियाँ, जेलखाने, अनेक आफ़िस, बहुतेरे स्कूल तथा गिरजे और हालैण्डवालों की बहुत सी पुरानी इमारतें हैं। अँगरेज़ी कोचीन और देशी राज्यके कोचीनकी सीमाके भीतर कस्टम हौस है। पुराने क़िलेकी अब कोई निशानी नहीं है। उसकी जगह पर लाइट हाउस बना है। उसके पास यूरोपियन लोगोंके बँगले हैं। बन्दर गाहमें जहाज़ बनाये जाते हैं।

(३) समुद्रके पास उत्तरसे दक्षिण तक १२ मील लम्बी और १ मीलसे सवा मील तक चौड़ी भूमि समुद्रके खाल और धारोंकी खाड़ियोंसे बनी है। उसके उत्तरके किनारेके पास कोचीन क़सबा है। उसके उत्तर एक टापू है। पहिले कोचीन क़सबा कोचीनके राज्यकी राजधानी था। किन्तु अब अँगरेज़ी ज़िले मालाबारमें है। इसके निवासियोंमें आधेसे अधिक क्रस्तान हैं।

इतिहास—कहावतसे विदित होता है कि सन् ५२ ईस्वी में सेन्ट टामसने कोचीन में जाकर उन क्रस्तानोंको बसाया जो नसरानी मापिला कहलाते हैं। ऐसा भी प्रसिद्ध है कि यहूदी लोग सन् ईस्वीके पहिले वर्ष में उस जगह बसे जिस जगह पर वर्त्तमान समय में उनकी बसती है। पीछे उन्होंने क्रम क्रमसे अन्य स्थानों में अपने मुक़ाम क़ायम किये। ताँबेके

पत्रोंके लिखोंसे जान पड़ता है कि ८ वीं सदो में यहूदी और सोरियन कोचीनमें बसे थे ।

सन् १५०० में पुर्त्तगालके पुर्त्तगीज़ लोग कालीकट पर गोले चलानेके पश्चात् कोचीनमें उतरे और जहाज पर मिर्च लादकर पुर्त्तगालको फिर गये। सन १५०२ में वास्कोडी-गामा अपनी दूसरी यात्रामें कोचीनमें आया। उसने वहां एक कोठी नियत की। सन् १५०३ में आल्बुकर्क कोचीन में पहुँचा, जिसने वहाँके क़िलेको बनवाया। हिन्दुस्थान में पहिले पहिल वही यूरोपियन क़िला बना था। कालीकटके राजा ज़मोरिनने कोचीन पर आक्रमण किया; किन्तु पुर्त्त-गालवालोंने उनको खदेड़ दिया। सन् १५२५ में वह क़िला बढ़ाया गया। सन् १५७७ में पहिले पहिल कोचीन में किताब छापी गई। उससे पहिले भारतवर्षमें कोई किताब नहीं छपी थी। सन् १६१६ के कई वर्ष बाद पुर्त्तगीज़ोंकी रायसे कोचीनमें अँगरेज़ी कोठी बनी। सन् १६६२ में हालेण्डवालोंने पुर्त्तगीज़ोंसे कोचीन क़सबा और क़िला छीन लिया। अँगरेज़ लोग दूसरी जगह चले गये। हालेण्डवालों ने कोचीनमें यूरोपियन तरीके पर अच्छी अच्छी इमारतें बन-वाईं। उन्होंने वहाँ सौदागरीकी बड़ी उन्नति की। सन् १७७८ में उन्होंने फिरसे क़िलेको बनवाया और क़िलेकी बग़-लोंमें खाई बनवाई। सन् १७९५ में अँगरेज़ी मेजर पेटरीने आक्रमण करके हालेण्डवालोंसे कोचीन ले लिया। सन्

१८०६ में अँगरेज़ोंने कैथेड्रलको तोपोंसे उड़ाकर क़िले और उत्तम इमारतोंका विनाश कर दिया। सन् १८१४ की सन्धिके अनुसार अँगरेज़ोंको कोचीन मिल गया तबसे वह इन्हींके अधिकारमें है।

कोचीन क़सबेसे डेढ़ मील दक्षिण राजाका कोचीन क़सबा है उसमें राजा सरवीर केरल वर्मा नामक के, सी, आई, ई, उपाधिधारी एक क्षत्री राजा राज्य करते हैं। उनकी अवस्था ४४ वर्ष की है। महाराज न्याय शास्त्रके पूरे पण्डित हैं और उनको शास्त्रार्थका बड़ा शौक़ है। उनके राज्यसे १६१८००० रुपये मालगुज़ारी आती है, जिसमेंसे २००००० रुपया अँगरेज़ी गवर्नमेण्टको राज-कर दिया जाता है।

राज्यके जङ्गलोंमें बेश-क़ीमती लकड़ी होती है। पहाड़ियोंमें अनेक भाँतिकी दवा, रङ्ग तथा गोंद और बहुत हिस्सोंमें इलायची होती हैं। जङ्गलोंमें बहुतसे हाथी भालू, साँभर बाघ, तेंदुए, और भाँति भाँतिके हरिन रहते हैं।*

गोआ।

बम्बई से कुछ दक्षिण की ओर समुद्र के किनारे पर (१५ अंश, ३० कला उत्तर अक्षांश और ३७ अंश ५७ कला पूर्व

*राजा कोचीनका विशेष हाल जानना हो तो बाबू साधुचरण प्रसाद कृत "भारत भ्रमण" चौथा खण्ड देखिये। इसका मूल्य २) है। योगेश्वर यन्त्रालय काशीमें मुद्रित हुआ है।

देशांतर में गोत्रा नगरी पुर्त्तगीज़ोंके हिन्दुस्थान के राज्य की राजधानी है। वास्तव में तीन क़सबोंका नाम गोआ है। पहिला गोत्रा, पुराना गोत्रा और पञ्जिम। इनमें से पहिला गोत्रा जो ज्वारी नदीके किनारे पर कदंब वंशके राजाओं द्वारा बनाया गया था, मुसल्मानों के आक्रमण से पहिले हिन्दूओं का पुराना शहर था; किन्तु उसकी इमारतों की अब कोई निशानी नहीं है। दूसरा गोआ जिसको लोग पुराना गोत्रा कहते हैं पहिले गोत्रा से लगभग ५ मील उत्तर है। उसको वास्कोडीगामा के हिन्दुस्थान में आनेसे १९ वर्ष पहिले (सम्वत् १४७९) सन् ई० १५३५ में मुसल्मानों ने बसाया। उस प्रसिद्ध शहर को जब पुर्त्तगाल वालों ने जीता तब वह पुर्त्तगीज़ों के एशिया के राज्य की राजधानी हुआ। १६ वीं सदीमें वह खूब बढ़ा चढा था; किन्तु पीछे महामारी से मनुष्य-संख्या घट जानेसे और पुर्त्तगाल गवर्नमेण्ट का सदर स्थान पञ्जिम होनेके कारण वह शहर खंडहर हो गया। परन्तु अबतक वह हिन्दुस्थान के रोमन कैथोलिक पादड़ियोंका सदर स्थान बना है। वहां अब जङ्गल जम गया है, गिरजों और पादड़ियों के मकानों के सिवा और कुछ नहीं है। उनमें चार पांच गिरजे बे-मरम्मत पड़े हैं। सन् ई० १८९० में पुराने गोत्रा में केवल ८६ मनुष्य थे।

पञ्जिम—पञ्जिम को नया गोत्रा भी कहते हैं। मोरमू (मर्मा) गांव से ४ मील उत्तर पञ्जिम शहर तक पक्की सड़क

बनी है। समुद्रके पासकी एक ज़मीन की पट्टीके ऊपर मंडावी नदीके बाँये किनारेपर उसके मुहाने से लगभग ३मील दूर पुर्त्तगालवालों के राज्यका सदर स्थान पञ्जिम है, जिसमें सन् १८८१ में ११८५ मकान और ८४४० मनुष्य थे और इस समय लगभग ८५०० मनुष्य हैं जिनमें से आधे से अधिक लोग देशी क्रस्तानों के वंशधर है। पञ्जिम के बीच वाले मुहल्ले से रिब्रंदर शहर तली तक लगभग ३०० गज़ लम्बी एक ऊँची सड़क बनी है, जिससे होकर प्रधान सड़क पुराने गोआ का जाती है। पञ्जिम शहर खूब सुन्दर और साफ़ है। उसमें पुर्त्तगाल गवर्नमेण्ट की बहुत सी सुन्दर इमारतें बनी हुई हैं। बारक अर्थात् सैनिकगृह (जिसमें पलटन रहता है) दूर तक फैले हुए हैं. जिनमें तीन सौ सेना रहती है। बारक के पास पुर्त्तगीज़ों के पूर्व्व गवर्नर (शासन कर्त्ता) आलबुकर्क की ५ फीट से अधिक ऊँची प्रतिमा खड़ी है। पुराने क़िलेमें गोआके गवर्नर रहते हैं। इनका छोड़कर पञ्जिम में हाईकोर्ट, कष्टम हौस (महसूलघर चौकी वा कर-सञ्चय-गृह) अस्पताल, जेलखाना, स्कूल, म्यूनिसिपल-आफ़िस (वह स्थान जहाँ शहरकी सफ़ाई जल-वायु, स्वास्थ्य तथा और और कामोंकी देखा भाली के लिये सरकारी कर्मचारी रहते हैं, और अन्यान्य अनेक आफिस हैं।

गोआका राज्य—यह पश्चिमी क़िनारेपर पुर्त्तगीज़ों का राज्य है। इसके पश्चिम ओर समुद्र और तीन ओर अँगरेज़ी

ज़िले हैं अर्थात इसके उत्तर सावंत वाड़ी का राज्य, पूर्व पश्चिम घाट ; पहाड़ियों का सिलसिला जो बेलगांव ज़िले में इसको अलग करता है। दक्षिण तरफ उत्तरी किनारा ज़िला और पश्चिम समुद्र है। इसकी सबसे अधिक लम्बाई उत्तर से दक्षिण तक ६२ मील और सब से अधिक चौड़ाई पूर्व से पश्चिम तक ४० मील तथा सम्पूर्ण क्षेत्रफल प्राय १०६२ वर्ग मील है।

गोआ राज्य पहाड़ी देश है। उसकी सबसे ऊँची पहाड़ी की सोन सागर नामक चोटी, जो राज्य के उत्तरीय भागमें है, समुद्र के जलसे ८३७ फीट ऊँचा है। छोटी नदियां बहुत हैं। बहुतेरी नदियां एक दूसरी को काटती हुई बहती हैं, जिससे बहुत से छोटे२ टापू बन गये हैं, जिनमें १८ प्रधान हैं। सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय गोआ राज्य के आठों ज़िलों में ४४५४४८ मनुष्य थे। अर्थात् २५६६११ यूरेशियन और देशी क्रस्तान ६१५ यूरोपियन और अमेरिकन ; २३० अफ्रिकन और बाकी में हिन्दू, मुसलमान इत्यादि। उस समय गोआ राज्य के क़सबे मोरमू गांव में २५२२ मकान और ११७८४ मनुष्य ; मपुका में २२८५ मकान और १०-२८६ मनुष्य तथा पञ्जिम में ११८५ मकान और ८४४० मनुष्य थे।

गोआके राज्य में अब तिजारत बहुत कम होती है ; किन्तु वहां के बढ़ई, लोहार, सुनार तथा जूता बनाने वाले

बड़े कारीगर है। वे अपनी कारीगरीकी चीज़ोंको बनाकर बेचते हैं। नारियल, कसैली, आम, तरबूज़, कटहल इत्यादि फल; दालचीनी, मिर्च आदि मसाले और नमक आदि चीजें उस राज्यसे अन्य स्थानोंमें भेजी जाती हैं और कपड़ा, चाँवल, तमाकू, चीनी, शराब, धातु और शीशेके बर्तन इत्यादि विभिन्न प्रकारकी वस्तुएँ अन्य स्थानोंसे गोआ राज्यमें आती हैं। सन् १८७३-१८७४ में गोआकी गवर्नमेन्ट को गोआ राज्य से १०८१४८० रुपये मालगुज़ारी आई थी और १०७१४४० रुपये खर्च पड़े थे।

पुर्त्तगीज़ों के हिन्दुस्थान का राज्य—हिन्दुस्तान में पुर्त्तगाल के बादशाह के आधीन गोआ, दमन और डिउ हैं। यह तीनों बम्बई अहाते में हैं। गोआ उत्तरी किनारा ज़िलेके उत्तर, दमन, सूरत और थाना ज़िलेके मध्यमें और डिउ काठियावाड़ के दक्षिण भागमें है। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय पुर्त्तगीज़ों के हिन्दुस्थानके सम्पूर्ण राज्यका क्षेत्र फल १०६६ वर्ग मील था और सम्पूर्ण मनुष्य-संख्या ५६१३८४ थी।

इतिहास—सन् १०९ इस्वीसे गोआ कदंब वंशके राजाओं के, जिनमेंसे पहिले राजाका नाम त्रिलोचन कदंब था, अधिकार में चला आया। सन् १३१२ में दिल्लीके अलाउद्दीन के सेनापति मलिक काफूर ने उसको अपने अधिकार में किया। सन १३७०में विजय नगर के हरिहर के मन्त्री विद्यारन्य माधव ने मुसल्मानोंको परास्त करके गोआ छीन लिया।

सन् १४४८ में बहमनी खानदान के बादशाह दूसरे मुहम्मद ने गोआ को जीत कर बहमनी राज्यमें मिला लिया। लगभग १५ वीं सदी के अन्त में यह बीजापुर के आदिल शाही खानदान के हस्तगत हुआ। सन् १५१० की १७वीं फरवरी को पुर्त्तगाल के बादशाह के गवर्नर "अल्फन्सो-डो-आल्बुकर्क"ने बीजापुरवालों से गोआ छीन लिया। उसने वहाँ क़िलाबन्दी करके पुर्त्तगीज़ों का राज्य नियत किया। उसके पश्चात वह बहुत शीघ्रता से प्रसिद्ध होकर पुर्त्तगीज़ों के पूर्व्वी राज्य की राजधानी हुआ। जब गोआ शहर बढ़ा चढ़ा था तब उसमें लगभग २००००० मनुष्य बसते थे और उसमें बड़ी भारी तिजारत होती थी। पुर्त्तगीज़ों ने अनेक गिरजे बनवाये। हालेंड वालों तथा महाराष्ट्रोंके कई बार आक्रमण तथा देशी लोगोंकी बग़ावतसे गोआ को बड़ी हानि हुई। बार बार की लूट पाट तथा वहांके जल वायुके रोगवर्द्धक होने के कारण उसके निवासी उसको छोड़ने लगे।

पहिले पुराने गोआ में पुर्त्तगीज़ों के शासन कर्त्ता रहते थे। सन् १७५८ में पञ्जिम अर्थात नया गोआ, जो मछुओं का छोटा गांव था, गवर्नर का सदर स्थान बना। वहां बीजापूरके यूसुफ आदिलशाह का बनवाया हुआ क़िला पहिले ही से था। उस समय से पुराने गोआ की आबादी तेज़ी से घटने लगी। सन् १८४३ में गोआ कसबा पुर्त्तगाल वालोंके हिन्दके राज्य की राजधानी हुआ।

दमन।

बम्बईके कुलावा स्टेशनसे १०८ मील उ
रेलवे स्टेशन है। बम्बई अहातेके गुजरात प्रदेशमें पुर्त्तगालके बादशाहके हिन्दुस्तानके राज्यका एक भाग गोआके गवर्नरके अधीन दमन एक राज्य है। उस राज्यके दो भाग हैं, एक खास दमन परगना और दूसरा नागर हवेली परगना। सन् १७८१ की मनुष्य-गणनाके समय दोनों परगनोंके ८२ वर्ग मील क्षेत्र फलमें १०२०२ मकान और ४८०८४ मनुष्य थे।

खास दमन परगनेका क्षेत्र फल २२ वर्ग मील है जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय २८ गांवोंमें ८१६२२ मनुष्य थे। दमन परगना दमन गङ्गा नामक नदी द्वारा दो भागोंमें विभक्त है। नदीके दक्षिण थाना ज़िलेके पास बड़ा दमन और नदीके उत्तर सूरत ज़िलेकी सीमाके पास छोटा दमन है।

दमन गङ्गा नामक नदीकी दोनों बगलों पर दो क़िले हैं। दोनोंकी दीवारों पर तोपें रक्खी हैं। नदीकी बाएँ ओरका पत्थरका क़िला, जिसकी बग़लमें ज़मीनकी ओर खाई है, प्रायः मुरब्बा शकलमें है; उसमें वहांके शासनकर्ता और उनके आधीनस्थ कर्मचारियोंके कार्यालय तथा मकान बने हैं और म्यूनिसिपल आफिस, अस्पताल, जेलख़ाना, अनेक बारक, ६ नये चर्च और बहुतसे ख़ानगी मकान हैं। उस

क़िलेमें पुर्त्तगोज़ोंके गवर्नर, फ़ौजी सामान, पुर्त्तगाल सरकार के कर्मचारी लोग और चन्द ख़ानगी निवासी रहते हैं जो प्राय: सब क्रस्तान हैं। नदीकी दक्षिनी ओरका क़िला नई बनावटका है। उसकी दीवारें बड़े क़िलेकी दीवारोंसे ऊंची हैं। उसके भीतर एक गिरजा, एक पादड़ी की कोठी, एक भजनालय आदि इमारतें हैं।

दमन परगनेकी पूर्व्व ओर ६० वर्ग मील क्षेत्रफलमें नागर हवेली परगना है, जिसमें सन १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ७२ गांव और २७४६२ मनुष्य थे।

इतिहास—सन् १५३१ में पुर्त्तगालवालोंने दमनको लूटा। देशियोंने फिर उसको संवारा। सन् १५५८ में पुर्त्तगालवालोंने उसको ले लिया। सन् १७४० में पूनाकी सन्धिके अनुसार महाराष्ट्रोंने पुर्त्तगोज़ोंको नागर हवेलीका परगना दे दिया। पुर्त्तगालवालोंके हिन्दुस्तानके राज्यकी बढ़तीके समय दमनमें बड़ी सौदागरी होती थी; किन्तु अब बहुत कम होती है।

कैथे।

कैथे चीन देशका प्राचीन नाम है और रूस वा रशिया वाले अब तक चीन देशको उसी नामसे पुकारते हैं।

मोम्बासा ।

मोम्बासा अँगरेज़ोंके पूर्वी अफ्रिकाकी राजधानी है। इसके अधिवासियोंकी संख्या २७,००० है। यहाँ ज़ञ्जिवारके उत्तरमें स्थित १५० माईलका उपद्वीप है। मोम्बासासे विक्टोरिया नियाँजा तक ४०० माइल रेलवेकी सड़क है।

॥ इति ॥

विज्ञापन

स्वास्थ्यरक्षा।

(द्वितीय आवृत्ति)

यह वही पुस्तक है जिस की तारीफ़ समस्त हिन्दी समाचार पत्रोंने दिल खोल कर की है। इस की उत्तमता के लिये यही प्रमाण काफ़ी है कि इसका दूसरा संस्करण छप गया और बिक भी गया। अब तीसरेकी तय्यारियाँ होरही हैं। जो कोक शास्त्र की ज़रूरी बातों को जानना चाहते है, जो संसार का सच्चा सुख भोगना चाहते हैं, जो बहुत दिनोंतक जीना चाहते हैं, जो अपने घरका इलाज आप ही करना चाहते हैं, उन्हें यह पुस्तक अवश्य ही दिल लगाकर पढ़नी चाहिये। इसमें जो विषय लिखे गये हैं वह सभी आज़मूदा हैं। मनुष्य को अपने सुख के लिये जो कुछ जानने की ज़रूरत है वह सभी इस में लिखा गया है। जो संसारमें सुखसे जीवन का बेड़ा पार करना चाहते हैं, उन्हें यह अनमोल पुस्तक लोभ त्यागकर अवश्य खरीदनी चाहिये। छपाई सफ़ाई इतनी सुन्दर है कि पुस्तक को छाती में लगाये बिना जी नहीं मानता। दाम १॥) डाकखर्च ।) सुन्दर फेशनेबिल जिल्दवाली का दाम २) और डाकखर्च।

अँगरेज़ी शिक्षा

प्रथम भाग ।

(चतुर्थ आवृत्ति)

आजतक ऐसी किताब नहीं छपी। इस किताबके पढ़ने से थोड़ी भी देवनागरी जाननेवाला भी बिना गुरु के अँगरेज़ी अच्छी तरह सीख सकता है। इसके पढ़ने से २।३ महीने में ही साधारण अँगरेज़ी बोलना, तार लिखना, चिट्ठी पर नाम करना, रसीद और हुण्डी वगैर: लिखना बखूबी आसक्ता है। किताब की छपाई सफ़ाई मनोमोहिनी है। हर एक अँगरेज़ी शब्द का उच्चारण दिया गया है। इसमें कूड़ा करकट नहीं भरा गया है। इस पुस्तक में वही बातें लिखी गई हैं जो व्यौपारियों, रेलमें काम करनेवालों, डाकखाने में काम करनेवालों तथा तार घर आदि में काम करनेवालों के काममें आती हैं। दाम १५० सफों की पोथी का ॥) डाक-खर्च ᐥ)

अँगरेज़ी शिक्षा

दूसरा भाग ।

जिन्होंने हमारा पहिला भाग पढ़ लिया है या जिन्होंने कोई दूसरी पुस्तक थोड़ी बहुत पढ़ली है उनके लिये हमारी

"अँगरेज़ी शिक्षा" का दूसरा भाग निहायत उपयोगी है। इसमें अँगरेजी व्याकरण(English Grammar) बड़ी उत्तमतासे समझाया गया है। आजतक कोई पुस्तक हमारी नज़र नहीं आई, जिसमें इससे उत्तम काम किया गया हो।

व्याकरण वह विद्या है जिसके सीखे बिना किसी भी भाषाका आना महा कठिन है। कितनी ही किताबें क्यों न पढ़लो ; जबतक व्याकरण का ज्ञान न होगा तबतक पढ़नेवाले का हृदय सूना ही रहेगा ; लेकिन व्याकरण है बड़ा कठिन विषय।

इस कठिन विषय को ग्रन्थकर्त्ताने अत्यन्त सरल कर दिया है। हिन्दी जाननेवाला, अगर शान्त स्थान में, एकाग्रचित्तसे, इसका अभ्यास करे तो बहुत जल्दी होशियार हो सकता है। इसके सीख जाने पर उसे चिट्ठियाँ लिखना, बाँचना, अँगरेज़ी समाचारपत्र पढ़ना बिल्कुल आसान हो जायगा। हम दावेके साथ कहते है कि हमारी अँगरेज़ी शिक्षाके चारों भाग पढ़ लेने पर जिसे अँगरेज़ी में अखबार पढ़ना, चिट्ठियाँ वगैर: धड़ाके से लिखना न आजायगा तो हम दुगुनी क़ीमत वापिस देंगे। मगर किताब मँगा लेने से ही कोई पण्डित नहीं हो सकता, उसका याद करना भी ज़रूरी है। दाम केवल १) रुपया और डाक महसूल ।≈) है।

अँगरेजी शिक्षा

तीसरा भाग।

इस भाग में विशेषण और सर्वनाम (Adjective और Pronoun) दिये गये हैं और उनको इतने विस्तार से समझाया है कि मूर्ख से मूर्ख भी आसानी से समझ सकेगा। इसके बाद सब प्राणियों की बोलियाँ तथा संज्ञा और विशेषणों के चुने हुए जोड़े दिये हैं जिनके याद करनेसे अखबार नॉविल आदि पढ़नेमें सुभीता होगा। इनके पीछे उपयोगी चिट्ठियाँ और उनका अनुवाद दिया गया है। शेषमें, शब्दोंके संक्षिप्त रूप (Abbreviations) बहुतायतसे दिये हैं। यह भाग दूसरे भाग से भी उत्तम और थोड़ा है। दूसरे भागके आगेका सिलसिला इसी भागमें चलाया गया है। दाम १) डाक खर्च ≈)

अँगरेजी शिक्षा।

चौथा भाग।

हमारी लिखी हुई अँगरेजी शिक्षाके तीनों भागोंको पब्लिक ने दिलसे पसन्द किया है। अतः हमें अब प्रशंसा करनेकी आवश्यकता नहीं है। इतना ही कहना है कि अँग-

रेज़ी व्याकरण जितना बाक़ी रह गया था वह सभी इस भागमें ख़तम कर दिया गया है ; साथ ही और भी अनेक उपयोगी विषय दे दिये गये हैं। दाम १) डाकखर्च ≈)

हिन्दी बंगला शिक्षा

बङ्गला साहित्य आजकल भारत की सब भाषाओंसे ऊंचे दर्जे पर चढ़ा हुआ है। उसमें अनेक प्रकार के रत्नोंका भण्डार है। अतः हर शख़्स की इच्छा होती है कि हम उन ग्रन्थों को देखें और आनन्द लाभ करें। किन्तु बँगला सीखनेका उपाय न होनेसे लोगोंके दिलकी मुराद दिलमें ही रह जाती है। हमारे पास ऐसी पुस्तक की, जिसके सहारे से हिन्दी जाननेवाला बँगला बोलना, लिखना और पढ़ना जान जावे, हज़ारों माँगें आईं। मगर ऐसी पुस्तक न तो हमारे यहाँ थी और न बाज़ारमें ही मिलती थी।

अब हमने सैकड़ों रुपया खर्च करके यह पुस्तक हिन्दी और बँगलामें छपाई है। रचना-शैली इतनी उत्तम है कि मूर्ख भी इसको पढ़ने से बिना गुरुके बँगला का अच्छा ज्ञान सम्पादन कर सकता है।

जिन्हें बंगला सीखने का शौक़ हो, जिन्हें बँगला के अपूर्व रत्न देखने हों, जिन्हें बँगाल देशमें रोज़गार व्योपार

और नौकरी करनी हो, उन्हें यह पुस्तक खरीद कर बँगला अवश्य पढ़नी चाहिये।

इस किताब में एक और खूबी है कि बँगला जाननेवाला इससे हिन्दी भाषा और हिन्दी जाननेवाला बँगला सीख सकता है। ऐसी उत्तम पुस्तक आजतक हिन्दीमें नहीं निकली। खरीददारों को जल्दी करनी चाहिये। देर करने से यह अपूर्व रत्न हाथ न आवेगा। दाम ॥) डाक खर्च ।)

अक्लमन्दीका खज़ाना

यह पुस्तक यथा नाम तथा गुण है। ऐसी कौन सी नीति और चतुराई की बात है जो इस पुस्तक में नहीं है। भारतवर्षके प्राचीन नीतिकारों की नीति, गुनिस्ताँके अनोखे उपदेश तथा और भी अनेक चतुराई सिखानेवाली बातें इसमें कूट कूट कर भरी गयी हैं।

जो दुनिया में किसीसे धोखा खाना नहीं चाहते, जो सभा-चातुर्य्य सीखना चाहते हैं, जो विदुर, कणिक, चाणक्य, शुक्राचार्य्य की नीतिका स्वाद चखना चाहते हैं, जो शेख सादी की अपूर्व्व नीतिका मज़ा लूटना चाहते हैं, जो चीन देश के विद्वान बुद्धिमान कॉन्फ्यूशियस की अक्लमन्दी को

अद्भुत बातें जानना चाहते हैं, जो संसारमें सुखसे ज़िन्दगी बिताना चाहते हैं, उन्हें यह पोथी अवश्य खरीदनी चाहिये।

आज तक ऐसी उत्तम पुस्तक हिन्दी में नहीं निकली। यह पुस्तक हिन्दी में नयी ही निकली है। इस पुस्तकके दस पाँच दफ़ दिल लगाकर पढ़ लेने पर, महामूर्ख भी महा बुद्धिमान हो जावेगा। जिन्हें अपने लड़कों को महा चतुर और अक्लका पुतला बनाना हो वे इस पुस्तक को अवश्य खरीदें। दाम १) डाक खर्च ।)

॥ राजसिंह ॥

वा

चंचलकुमारी।

यह राजसिंह सचमुच उपन्यासोंका राजा है, जिस प्रकार से बनका राजा सिंह बनैले जन्तुओंपर अपना पूरा प्रभाव रखता है उसी तरह यह भी उपन्यासोंमें "सिंह" हो रहा है। भारतवर्षकी इतनी कायापलट हो जानेपर भी अभीतक चित्तोरका नाम नहीं गया है, अभीतक चितौरकी उज्ज्वल-कीर्त्ति दिग्‌दिगान्तरमें गूँज रही है, राजपूतानेकी स्वाधीनता लोप हो जानेपर भी अभी तक चितौरका माथा ऊँचा हो रहा है। उसी प्रकारसे हमारे उपन्यासके नायक "राजसिंह"का

नाम भी इतिहास जाननेवालोंके आगे छिपा नहीं है। राज-सिंहकी वीरता, धीरता, चतुरता, बुद्धिमत्ता, प्रतिज्ञापालनकी पूरी पूरी सत्ता, अचल प्रतिज्ञा, दूरदर्शिता, प्रजापालनमें तत्-परता और निर्लोभता अभी तक उनका नाम निष्कलङ्क कर रही है। हमारा यह "राजसिंह" ऐतिहासिक शिक्षा देने-वाला एक रत्न है। जिस औरङ्गज़ेबकी कूटनीतिके आगे समूचा भारत थरथराता था, जिस मुगल सम्राट औरङ्गज़ेबकी अमलदारीमें हिन्दू-राजे अपनी बहन बेटी व्याह देना अपना माथा ऊँचा करना समझते थे, जिस औरङ्गज़ेबके थोड़ेसे इशारेमें ही बड़े बड़े राजे महाराजे उसके पैरोंके नीचे लोटते थे, और जिस प्रतापी मुगल सम्राटने बड़े बड़े राजा-ओंसे भी "जज़िया" नामक कर वसूल कर लिया था, उसी प्रतापी औरङ्गज़ेबके चंगुलसे एक राजपूत हिन्दू सुन्दरीको बचानेके लिये राजसिंहकी अटल प्रतिज्ञाका पूरा पूरा खाका इसमें खींचा गया है। इसको पढ़नेसे ही प्यारे पाठकोंको मालूम हो जायगा कि राजपूतों की प्रतिज्ञा कैसी अटल होती थी।

इस उपन्यासकी सभी बातें आश्चर्यमें डालनेवाली, कुतूहल को बढ़ानेवाली और शिक्षाकी देनेवाली हैं। रूप नगरके राजा विक्रमसिंहका सुन्दर राज्य, राजकुमारी चञ्चलकुमारी का एक तसवीर देखकर राजसिंहपर मोहित होना, अपनी तसवीरका अनादर सुनकर औरङ्गज़ेबका क्रोधित होना,

हज़ारों सिपाही भेजकर चञ्चलकुमारीको बुलवाना, चञ्चलका राजसिंहको विचित्र पत्र भेजना, राजसिंहका विचित्र रीतिसे मुगलोंके हाथसे चञ्चलको छुड़ाना, माणिकलालकी कूट बुद्धि, औरङ्गज़ेबका भयानक क्रोध, विक्रमसिंहका भारी परिताप, चञ्चलकी सखी निर्मलकी अद्भुत कार्य्यायली, औरङ्गज़ेबकी कन्या जेबुन्निसाका मुबारकसे गुप्तप्रेम, औरङ्गजेबके शाही महलकी गुप्त घटनायें; राजसिंहका औरङ्गज़ेबके नाम पत्र भेजना, औरङ्गज़ेबका और भी क्रोधित होना, राजसिंहसे औरङ्गज़ेबकी भयानक लड़ाई, तीन तीन बार औरङ्गज़ेबका हारना आदि घटनायें पढ़ते पढ़ते पाठक उपन्यास-मय हो रहेंगे। ऐसा उत्तम मनोरम और सच्ची घटनाओंसे भरा हुआ उपन्यास बहुत कम देखनेमें आवेगा। सच तो यह है कि यह उपन्यास उपन्यासोंमें मुकुट हो रहा हैं। अवश्य पढ़िये, पहिलेही की भाँति सर्व साधारणको शिक्षा दिलानेके लिये २०६ पृष्ठोंकी उत्तम पुस्तकका दाम कुल ॥) डाक महसूल ≠) रक्खा गया है।

मानसिंह

वा

कमलादेवी।

यह उपन्यास मुसल्मानी अमलदारी की चालोंका बाय-

स्कोप और हिन्दू राजाओंके नामका पूरा पूरा उदाहरण दिखा देनेवाला है। हिन्दू-संसार में ऐसे बहुत कम मनुष्य होंगे, जिन्होंने अकबरके दाहिने हाथ महाराज मानसिंहका नाम न सुना होगा। यह ग्रन्थ उन्हीं ऐतिहासिक वीरकी विचित्र कार्यावलीसे भरा हुआ है। मानसिंहके नामका कलङ्क, अपनी बहनको अकबरसे व्याह देना, महाराणा प्रतापका साहसपूर्ण उद्धार, हेमलताका विचित्र प्रेम, एक बाजीगरकी विचित्र चतुराई, बहराम खाँका कपट, नूरजहाँका सलीमसे प्रेम, शेरशाह तथा सलीमका बाहुयुद्ध, शेरखाँका नूरजहाँसे विवाह, कमलादेवीका दरबार, केवसिंहकी भीषण वीरता, राजपूतोंमें आपस की फूट, कमलादेवीका गुप्त प्रेम, इसी गुप्त-प्रेमके कारण मानसिंहकी खराबी, महाराज मानसिंह और हेमलताका सच्चा प्रेम, मानसिंहके दुराचार, हेमलताकी निराशा, अरावली पर्वतपर फिर मानसिंह और मुगलोंका भयानक युद्ध, मानसिंहकी सच्ची वीरता और रणकौशल आदि रहस्यमय घटनाओंको पढ़ते पढ़ते पाठक अपने आपको भूल जायँगे। ग्रन्थ बड़ा ही रोचक और भावपूर्ण हुआ है। ऐतिहासिक घटनाओंका इस सुन्दरतासे वर्णन किया गया है कि पढ़नेवालोंके हृदयमें एक एक बात चुभ जाती है। सच तो यह है कि भारतवर्षको इस दीन अवस्थामें ऐसे ही उपन्यासोंकी आवश्यकता है जो पढ़नेवालोंके हृदयपर उनके पूर्व पुरुषों का चित्र अङ्कित कर सकें। आशा है हमारा यह

उपन्यास वही काम कर दिखायेगा। इस उपन्यासका पढ़ते समय पाठकोंको परिणामपर भी अवश्य ध्यान रखना चाहिये। हम अब इसकी प्रशंसामें अधिक लिखना व्यर्थ समझते हैं; क्योंकि यह अपना नमूना आपही है। यदि आपलोग इसे मँगाकर ध्यान देकर पढ़ेंगे; तो आपलोगोंको मालूम हो जायगा कि विज्ञापनका एक एक अक्षर सत्य है। अवश्य पढ़िये, ऐसा अवसर बार बार हाथ नहीं आता। सर्व साधारणके सुभीतेके लिये २५६ पृष्ठोंकी पुस्तकका दाम कुल ॥) रक्खा गया है। डाकमहसूल ।)

गल्पमाला

यह पुस्तक हाल में ही प्रकाशित हुई है। इस में एक से एक बढ़ कर मनोरञ्जक और उपदेश पूर्ण दस कहानियाँ लिखी गयी हैं। पढ़ना आरम्भ करने पर छोड़ने को जी नहीं चाहता। हिन्दीके अच्छे अच्छे विद्वानोंने इस पुस्तक की प्रशंसा की है। पढते समय कभी करुणाकी नदी लहराती है। कभी प्रेमका समुद्र उमड़ने लगता है। कभी पुण्यकी जय देख, हृदय में पवित्र भावका सञ्चार होता है और कहीं पाप के कुफल को देख कर परमात्मा के अटल न्यायकी महिमा प्रत्यक्ष आँखोंके आगे दिखाई देने लगती है। दस उपन्यासोंके पढ़ने में जो आनन्द हो सकता है, वह केवल गल्पमाला ही से मिल सकता है। दाम ।) डाकखर्च

बादशाह लियर

यह विलायतके जगद्विख्यात कवि शेक्सपियर के "किंग-लियर" नामक नाटक का गद्य में बहुत ही मनोमोहन और रोचक अनुवाद है। एकबार पढ़ना आरम्भ करके बिना खतम किये पुस्तक के छोड़ने को जी नहीं चाहता। शेक्सपियर ने बादशाह लियर और उसकी तीन कन्याओंका चरित्र बहुत ही उत्तम रूप में लिखा है। मनोरञ्जन होनेके अलावः इस पुस्तक से एक प्रकार की शिक्षा भी मिलती है। पढ़ते पढ़ते कभी हँसी आती है। कभी बूढ़े बादशाह लियर की दुर्दशा का हाल पढ़ कर आंखोंमें आंसू भर आते हैं। हिन्दी-प्रेमियोंको यह पुस्तक भी अवश्य ही देखनी चाहिये। दाम ॥) डाकखर्च ।)

गुलिस्तां

यह वही पुस्तक है जिसकी प्रशंसा तमाम जगत् में हो रही है। वलायत, जरमनी, फ्रान्स, चीन, जापान और हिन्दुस्तानमें सर्व्वत्र इस पुस्तकके अनुवाद हो गये हैं। लेकिन अफ़सोस की बात है कि बेचारी हिन्दी में इसका एक भी पूरा अनुवाद नहीं हुआ। इसके रचयिता शेख़सादीने इसमें एक एक बात एक एक लाख रुपये की लिखी है। वास्तव

में यह पुस्तक अनमोल है। इसी कारण से यह पुस्तक यहाँ मिडिल, एंट्रेन्स, एफ० ए० बी० ए० तक में पढ़ाई जाती है। इस की नीतिपर चलनेवालामनुष्य सदा सुख से रह कर जीवन का बेड़ा पार कर सकता है। मनुष्य मात्र को यह पुस्तक देखनी चाहिये। इसका अनुवाद सरल हिन्दीमें हुआ है। छपाई सफ़ाई भी देखने लायक है। दाम १) डाकखर्च ।=)

राधाकान्त

(उपन्यास)

आज कहने को तो अनेक उपन्यास निकलते हैं किन्तु वह सब रद्दी हैं। उनसे पाठकोंके मन और चरित्र के ख़राब होनेके सिवाय कोई लाभ नहीं है। इसके पढ़ने से एक अमीर की सच्ची घटना आँखों के सामने आजाती है; आदमी धनमत्त होकर कैसी कैसी ठोकरें खाता है; खोटी संगति में पड़ कर,धनवानोंके लड़के कैसे ख़राब हो जाते हैं; ख़ुशामदी लोग बड़े आदमियों की कैसी मिट्टी ख़राब करते हैं; जब तक धन हाथमें रहता है तब तक ख़ुशामदी मधुमक्खियों की तरह चिपटे रहते हैं धन स्वाहा होते ही वही बात भी नहीं पूछते; रन्डियाँ कैसी मतलबी और धन की प्रेमी होती हैं और सच्चे और आदर्श मित्र कैसे होते हैं।

इस पुस्तकके टेक्स्ट मे उपरोक्त विषयों के सिवाय ईश्वर में प्रेम होने, ईश्वर पर एक मात्र भरोसा करने, विपत्तिकाल में धैर्य्य धारण करने की युक्तियाँ भी मालूम होंगी। अमीरों को तो इस पुस्तक को अवश्य ही बालकों को दिखाना चाहिये। इन्हीं बातों के न जानने और ऐसी पुस्तकों के न पढ़ने से ही लाखों के घर खाक में मिल जाते हैं। पुस्तक अनमोल है। छपाई भी इतनी सुन्दर है कि लिख नहीं सकते। दाम ॥) डाकखर्च ✓)

भारत में पोर्च्यूगीज़।

(इतिहास)

यह एक पुराना इतिहास है। इस में यह बात खूब ही सरल भाषा में दिखायी गयी है कि पहले पहल फिरङ्गी लोग भारत में कैसे आये, उन्होंने कैसे भारत का पता लगाया। सब से पहले भारत में आनेवाले फिरङ्गी को सात समन्दर चौदह नदियाँ पार कर के भारत की खोज में आने के समय कैसे कैसे कष्ट उठाने पड़े। फिरङ्गियों (पोर्च्यू-गीज़ों) ने दक्खन भारतमें कैसे २ अत्याचार किये। भारत का धन वे अपने देशमें कैसे लेगये। भारतीय ललनाओं की कैसी बेइज्जती की। अन्तमें भगवान भारतवासियों पर दयालु

हुए। उन्होंने शान्तिप्रिय, प्रजावत्सला, न्यायशीला ब्रिटिश जाति को भारतवासियों के कष्ट निवारणार्थ भारत में भेजा। अँगरेज़ों ने सब भारतवर्ष अपने हाथ में लिया। मुसल्मान और योरुपीय जातियों को भगा कर भारत में शान्ति स्थापन की। आज अँगरेज़ महाराज की छत्रतले हम भारतवासी सुख चैन की बंसी बजाते हैं। देशमें लूट मार काटफाट बन्द है। शेर बकरी एक घाट पानी पीते हैं। एक महा बूढ़ी डोकरी भी सोना उछालती फिरती है पर कोई यह कहनेवाला नहीं है कि तेरे मुँह में के दाँत हैं।

यह सब हालात इस पुस्तक के पढ़ने से मालुम होंगे। कौन भारतवासी इन गुप्त और पुराने विषयों को न जानना चाहेगा? प्रत्येक भारतवासी को अपनी जन्मभूमिका पुराना हाल जानना चाहिये और अँगरेज़ों की भलाई के लिये उन का कृतज्ञता-भाजन होना चाहिये। दाम ॥) डाकखर्च ≤)

बाल गल्पमाला

यह पुस्तक हिन्दी जगत् में बिलकुल नयी और मनुष्य मात्र के देखने योग्य है। मनुष्य मात्र को चाहिये कि इसे पढ़े और अपनी सन्तान को पढ़ावे। अगर लोग इसे अपने बालकों को पढ़ावें तो यह अधोगति पर पहुँचा हुआ भारत फिर उन्नतिके उच्चतम शिखर पर चढ़ जाय। घर

घरमें सुख चैन की बांसुरी बजने लगे। लड़के मा बाप की आज्ञा पालन करें और सभी स्त्रियां पतिव्रता हो जायें।

इसमें रामचन्द्र की पितृ-भक्ति; भीष्म पितामह का कठिन प्रतिज्ञा पालन; लक्ष्मण और भरतका भ्रातृ-प्रेम; श्रीकृष्ण की विनय; युधिष्ठिर और महात्मा वशिष्ठ की क्षमाशीलता; हरिश्चन्द्र का सत्यपालन; सुदामाका आतिथ्य-सत्कार; आरुणिक की गुरुभक्ति; महाराणा प्रतापसिंह के प्रोहित की राजभक्ति; चण्डका कर्त्तव्य पालन और कुन्तीका प्रत्युपकार खूब ही सरल और सरस भाषामें दिखाया है। अधिक क्या कहें पुस्तक घर घरमें विराजने और पूजी जाने योग्य है। दाम ।=) डाकखर्च ।=)

अलिफ़ लैला

पहला भाग।

यह ऐसी उत्तम किताब है कि जिस का तरजुमा फ्रेंच, जरमन, अंगरेज़ी, रूसी, जापानी आदि भाषाओंमें तीन तीन और चार चार प्रकार का हो चुका है। हमने भी इसका तर-जुमा एक निहायत बढ़िया अङ्गरेज़ी पुस्तकसे किया है। तरजुमे में कोई विषय छोड़ा नहीं है। भाषा इसकी निहा-यत सीधी सादी और ऐसी सरल रक्खी है कि थोड़े पढ़े बच्चे से लेकर बहुत पढ़े हुए विद्वान तक इससे आनन्द लाभ कर

सकेंगे। उपन्यासोंका स्वाद चखे हुए पाठकोंको यह पुस्तक बहुत ही प्यारी लगेगी। एकबार पढ़ना शुरू करके पढ़नेवाले खाना पीना भूल जायँगे और इसे समाप्त किये बिन न रहेंगे। पढ़नेवाले औरतों की चालाकियाँ, उनकी बेवफाई, आदि पढ़ कर हैरत में आजायँगे और कहने लगेंगे कि हे भगवन्! क्या औरतें इतनी मक्कारा होती हैं! देव राक्षस सन्दूकोंमें बन्द रख कर भी अपनी औरतोंकी चालाकी न पकड़ सके! औरतों ने जब देव जिन्नों के ही चूना लगा दिया तब मनुष्य विचारा क्या चीज़ है? २११ सफोंकी बड़ी पुस्तक का दाम केवल ॥) और डाकखर्च ।) लगेगा।

वीरबल की हाजिर जवाबी और चतुराई

अँगरेज़ी में एक कहावत है कि 'खुश रहो तो सदा तन्दरुस्त रहोगे"। मतलब यह है कि सदा निरोग और बलवान रहने के लिये मनुष्य को खुश रहने की ज़रूरत है। काम धन्धे से छुट्टी पाकर, चित्त प्रसन्न करनेवाली पुस्तकें देख कर दिल बहलाना, बहुत ही अच्छा है। इस पुस्तक में ऐसे ऐसे चुटकुले और बढ़िया २ किस्से छाँट छाँट कर लिखे गये हैं कि, पढ़नेवालोंकों को कोरा आनन्द आनेके सिवाय लाख लाख रुपये की नसीहतें भी मिलती हैं; मित्र-मण्डली हँसी के मारे लोटपोट होने लगती है; उद्विग्न चित्त लोगोंके दिलकी कली कली खिल उठती है। इस भागमें ८४ सफे

हैं। अक्षर साफ बम्बई के समान मोटे मोटे हैं। कागज़ बढ़िया है। तिस पर भी दाम केवल ।) मात्र है। डाक खर्च ｸ)

कालज्ञान।

यह पुस्तक वैद्यों या वैद्यक विद्या से प्रेम रखनेवालों या उसका अभ्यास करनेवालों के बड़े ही काम की है। ऐसी ही पुस्तकों के सहारे वैद्य लोग पहिले नाम और धन कमाते थे। वैद्योंको यह अपूर्व पुस्तक अवश्य गलेका हार बना कर रखने योग्य है। चिकने कागज़ पर मनमोहिनी छपाई सहित ७६ सफे की पुस्तकका दाम ।) डाकखर्च ｸ)

संगीत बहार।

यह गानेके शौकीनों लिये बहुत ही अच्छी पुस्तिका है। इसमें दादरा, ठुमरी, कवित्त, दोहे और थियेटरों के अच्छे अच्छे गाने चुन चुन कर दिये गये हैं। थोड़े दामों में ऐसी सुन्दर पुस्तक और जगह नहीं मिलती। दाम ।) डाकखर्च ｸ)

प्रेम

इसमें एक सती स्त्रीके सच्चे प्रेम और सतीत्व का खाका खूब ही अच्छी तरह खींचकर दिखाया गया है। पुस्तक देखने ही योग्य है। दाम ｸ) डाकखर्च ｸ)

खूनी मामला।

इसमें जासूसी लटके खूब ही दिखाये हैं। कदम कदम पर खूनी अपनी चालें खेलता है और जासूस कैसी चतुराई से उसका पीछा करता है। इसको भी ज़रूर देखिये। दाम डाकखर्च

राग-रत्नाकर

यह भी गाने की पुस्तक है। इसमें भी बहुत ही अच्छे अच्छे गाने संग्रह किये गये हैं। बाबू तारा चरण बरियार पुर निवासी की बनाई हुई गजलें देखने ही योग्य हैं। दाम ।) डाकखर्च ।)

सँगीत प्रवीणा

इसमें उर्दू की पुस्तकों मे ऐसी अच्छी २ गजलोंका संग्रह किया गया है कि लिख नहीं सकते। अनेक थियेटरों के गाने; लखनौ, बनारस, दिल्ली और आगरेकी मशहूर मशहूर रण्डियों की बनाई हुई जगत् प्रसिद्ध ग़ज़लों का खूब ही समावेश हुआ है। कलकत्ते की जगत् प्रसिद्ध गौहरजान के गानोंकी यदि बहार देखनी हो, कलकत्ते बम्बई के थियेटरों के बढ़िया बढ़िया गाने देखने हों, तो इसको अवश्य मँगाइये। एक खूबी और है कि इस में गाने बजाने के थोड़े

नियम भी समझाये हैं। जो गाने बजाने के शौकीन हैं उन्हें तो यह पुस्तक देखनी ही चाहिये; किन्तु जो गाने बजाने से प्रेम नहीं रखते उन्हें भी अवश्य देखनी चाहिये। दाम ।/) डाकमहसूल /)

रामायण-रहस्य

प्रथम भाग

हिन्दी जगत् में यह भी एक नयी चीज़ है। रामायण का परिचय देना अनन्त सागर सलिलमें दो चार विन्दु जल डालना है। ऐसा भावमय, ऐसा सुमधुर, ऐसा शिक्षाप्रद, ऐसा भक्तिमय, ऐसा रसीला और दूसरा ग्रन्थ संसार में नहीं है।

इस जगत् में कितने ही ग्रंथ बने और बन रहे हैं परन्तु रामायण के समान किसी का आदर न हुआ। आदर कहाँ से हो, इसके समान और ग्रन्थ है ही नहीं। मातृ-भक्ति, पितृ-भक्ति, स्त्री-धर्म, मित्र-धर्म, राज-नीति, प्रजा-धर्म, प्रजा-पालन, युद्ध-शिक्षा, युद्ध-नीतिका जैसा सुन्दर चित्र रामायण में है वैसा और किसी ग्रन्थमें नहीं है। रामचन्द्रकी पितृ-भक्ति, लक्ष्मण और भरत की भ्रातृ-भक्ति, सीताका पति-प्रेम, दशरथका पुत्र-प्रेम, हनूमान की स्वामिभक्ति का नमूना जैसा इस ग्रन्थमें है और ग्रन्थोंमें नहीं है।

महात्मा तुलसीदासजी रामायण लिखकर अमर हो गये हैं किन्तु अनेक लोग ऐसे हैं जो तुलसीदासजी की गूढ़ भावमयी कविता को समझने में असमर्थ होते हैं। इसीसे हमने वाल्मीकि, अध्यात्म, मयङ्क और तुलसीकृत रामायणों के आधारपर इसे अत्यन्त सरल हिन्दीमें एक विद्वान् लेखक से लिखवाकर प्रकाशित किया है। जिन्हें वाल्मीकी आदि सारी रामायणों का सरल भाषामें स्वाद लेना हो वे इसे अवश्य देखें। बहुत क्या लिखें चीज़ देखने ही योग्य है। पढ़ते पढ़ते बिना खतम किये छोड़ने को जी नहीं चाहता। भाषा उपन्यासों की सी है; इससे चौगुना आनन्द आता है। घटनाएँ पानीकी घूँटकी तरह दिमाग़ में घुसती चली जाती हैं। छपाई भी इतनी सुन्दर हुई है कि देखते ही पुस्तक को छाती से लगाने को जी चाहता है। यह प्रथम भाग है। इसमें बालकाण्ड और अयोध्याकाण्ड पूरे हुए हैं। बड़े आकारके १६० सफोंकी पुस्तकका दाम ॥) डाक खर्च ⁄)

हिन्दी भगवद्गीता।

गीताकी एक एक शिक्षा, एक एक बात, मनुष्यको संसार दुःख के झंझटों से छुड़ाकर तत्वज्ञान सिखाती है और संसारी दुःखोंके अशान्त मनको शान्ति देती है। आत्मज्ञान जितनी

अच्छी तरह इसमें कहा गया है और पुस्तकों में नहीं कहा गया है। इसके पढ़ने समझने और इस पर विचार करनेसे मनुष्य संसार के बन्धनोंसे, जन्म मरणके कष्टसे, छुटकारा पाकर मोक्ष लाभ करता है। महाराज कृष्णचन्द्रका एक एक उपदेश पृथ्वी भरके राज्य से भी बढ़कर मूल्यवान है। मनुष्य मात्रको यह भगवद्वाक्य देखना, पढ़ना और समझना चाहिये और अपना भविष्य सुधारना चाहिये। आज तक गीताके कितने ही अनुवाद हो चुके हैं; मगर कुछ तो अपूर्ण हैं और कुछ ऐसे पुराने ढांचेकी ऊटपटांग हिन्दीमें अनुवाद हुए हैं, कि उनका समझना ही महा कठिन है; इसलिये गीता प्रेमियोंका मतलब नहीं निकलता।

यह अनुवाद एकदम सरल हिन्दीमें हुआ है और इतनी अच्छी तरह हरेक विषय समझाया है, कि मूर्खसे मूर्ख बालक भी गीताके गहन विषयोंको बड़ी आसानीसे समझ कर हृदयङ्गम कर सकेगा। खाली गीता-पाठ करनेसे कुछ लाभ नहीं हो सकता; किन्तु गीताको पढ़कर समझने और विचार करनेसे जो लाभ मनुष्यको हो सकता है वह त्रिलोकीके राज्यसे भी बढ़कर है। अधिक क्या कहें इस पुस्तकमें ग्रन्थकर्त्ताने जैसी हरेक विषयको समझानेकी कोशिश की है वैसी किसीने भी नहीं की है। जिनके पास गीताके और और अनुवाद हों, उन्हें भी यह अनुवाद अवश्य देखना चाहिये।